**तृतीय अध्याय**

**राजस्थानी लोकगीत**

**तृतीय अध्याय : राजस्थानी लोकगीत**

**राजस्थानी लोकगीत**

सम्पूर्ण संसृति में परिव्याप्त तथाकथित लोक-मानस की सुख-दुखमयी अनुभतियों की सामूहिक भाव-भीनी गेय अभिव्यक्ति ही लोक-गीत है। लोक-गीतों के विस्तृत क्षेत्र में प्रकृति, पृथ्वी और निस्सीम व्योम तो क्या मानव-मन की अनन्त कल्पनाएँ भी समाविष्ट है। नर और नारी के सारे रूप (पुत्र, मित्र, भाई, पिता, पति, माता, पुत्री, बहिन, बुआ, सहेली, ननद, पत्नी, बहू, देवरानी, जेठानी आदि) इन गीतों में निरूपित है। समाज के समग्र संगठन इनमें वर्णित हैं। कौटुम्बिक बागडोर इन गीतों के हाथ में है। उत्तरदायित्वों और मर्यादाओं का बोध इन्हीं से कराया जाता है। मानव का शैशव लोरी के बहाने यहीं सोता है, यौवन इन्हीं के माध्यम से प्रेमोन्माद में प्रमत्त रहता है और वार्धक्य जीवन-यात्रा से श्रान्त हो इन्हीं गीतों से मन बहलाया करता है। ये गीत लोक-लीक के खींचनहार और प्रेमी हृदयों को प्रेम-जल से सींचनहार हैं। धार्मिकता का प्रचार-प्रसार भी इन्हीं से सम्भव है। कु-प्रथाओं, अन्धविश्वासों का उल्लेख भी ये गीत ही करते हैं, और उनका विरोध भी ये गीत ही करते हैं। सामाजिक मान्यताओं एवं मानदंडों के ये गीत महान कोष हैं। ये लोक-गीत विदग्ध हृदय को सान्त्वना देते हैं, प्रताड़ित को सम्बल प्रदान करते हैं, पथ-भ्रष्ट का मार्ग-निर्देशन करते हैं, सांसारिकता की ओर सहज भाव से आकर्षित भी करते हैं और मोह-जाल में फंसे को सदुपदेश देते हैं, कार्यरत की थकावट हरते हैं। ये गीत मानव-जाति के जन्म जितने पुरातन एवं सद्य-प्रसूत शिशु जितने नूतन हैं। इन गीतों में मानव-संस्कृति का सांगोपांग चित्रण एवं व्यापक भावों का उल्लेख मिलता है। इन गीतों में अभिव्यक्त भाव शाश्वत जीवन के शाश्वत सन्देश हैं। इन लोक-गीतों में हृदय के सारल्य के साथ-साथ मनोमालिन्य की पराकाष्ठा वर्णित है। यहाँ आज्ञाकारिणी एवं पारिवारिक सदस्यों को ही अपने अमूल्य आभूषण स्वीकारने वाली वधुएँ मिलेंगी तो दूसरी ओर सास के नाक में दम करने वाली वधुएँ भी मिल जाएँगी। कपूत और सपूत के निर्णय की कसौटी भी लोक-गीत ही होते हैं। अपना सर्वस्व न्यौछावर करने वाली भावज से कलह करती ननद यहीं दृष्टिगोचर होगी तो भावज के मना करने पर भी नाई द्वारा (ननद को अपमानित करने की हेय भावना से प्रेरित हो) दी जाने वाली जली ‘घूघरी’ (गेहूं व चने से उबले दाने के बदले लोक-लाज को ध्यान कर सोने-रूपे' की ‘घूघरी’ भावज को वापस करने वाली श्रेष्ठ ननद भी यहीं मिलेगी। देश का सांस्कृतिक चित्रण इन्हीं गीतों में हुआ है। ऐतिह्यवृत्तों ने परोक्ष अथवा प्रत्यक्ष रूप से यही यथार्थ स्वरूप ग्रहण किया है। और नैतिक प्रतिमान तथा सामाजिक आदर्श भी इन्हीं गीतों द्वारा पीढ़ीदर-पीढी प्रस्थापित एवं हस्तांतरित किये गये हैं। लाल लाजपतराय के शब्दों में - 'देश का सच्चा इतिहास और उसका नैतिक और सामाजिक आदर्श इन गीतों में ऐसा सुरक्षित है कि उनका नाश हमारे लिए दुर्भाग्य की बात होगी।"1

**संस्कार गीत** –

सम् उपसर्ग पूर्वक ‘कृ’ धातु में धञ् प्रत्यय लगाकर ‘संस्कार’ शब्द बनता है।( सम्+क्+धञ्) जिसका अर्थ हैं – सम्यक् प्रकार से किया हुआ अथवा विशुद्धी कृत – सम्यक् क्रियते इति संस्कारः। जीवन में व्यवस्था और नियमितता लाने के लिए संस्कारों की आवश्यकता होती है।

श्री श्यामाचरण दुबे के शब्दों में “मानव की प्रायः प्रत्येक संस्कृति में व्यक्ति की जीवन-यात्रा के विभिन्न संक्रमण कालों का विशेष महत्त्व होता है। जन्म, विवाह एवं मरण इस प्रकार की तीन मुख्य स्थितियाँ हैं, जिनके आसपास मानव समूह विश्वासों, रीति-रिवाजों और व्यवहारों का एक ऐसा जटिल ताना-बाना बुन लेता है कि उनके वास्तविक स्वरुप को समझे बिना उस संस्कृति का पूर्ण चित्र प्राप्त ही नहीं किया जा सकता। समाज संगठन का यह पक्ष मानव के उत्तरोत्तर परिवर्तित होने वाले उत्तरदायित्वों एवं कार्यों की दिशा निश्चित करता है।”2

हिन्दू धर्म की मान्यता अनुसार प्रत्येक व्यक्ति जन्म से अपवित्र होता है पर संस्कारो के द्वारा वह शुद्धत्व प्राप्त कर सकता है। प्रत्येक व्यक्ति का जीवन चार अवस्थाओं, चार आश्रमों एवं सोलह संस्कारों में बँटा है।परंतु आधुनिक युग में संस्कारों का पूर्व-प्रचलित सविधि बंधन लुप्त प्राय है। प्राचीन वर्ण-व्यवस्था में परिवर्तन के साथ-साथ समाज में संस्कारों की संख्या भी घटकर मुख्य रूप से केवल तीन –जन्म, विवाह एवं मृत्यु तक सिमट गई है।कहीं-कहीं आज भी मुंडन एवं यज्ञोपवीत संस्कार का आयोजन किया जाता है। उक्त तीन संस्कारों के अतिरिक्त अन्य कुछ संस्कारों के विधान से संबंधित लोकगीत राजस्थान प्रदेश में असंख्य मात्रा में पाये जाते है।

प्रत्येक संस्कार दो रूपों में पाया जाता है – शास्त्रीय तथा लौकिक। लौकिक संस्कारों का संबंध समय-समय पर होने वाले आनुष्ठानिक गीतों से होता है, जिनका संचालन प्रायः स्त्रियाँ करती हैं। शास्त्रीय संस्कारों के मंत्रोच्चारणमें पृथक इन गीतों का अपना महत्वपूर्ण एवं अनिवार्य स्थान होता है। मानव जीवन के विभिन्न संस्कारों में ये गीत अपना मांगलिक महत्त्व रखते हैं।

मानव-योनि चौरासी लाख योनियों में श्रेष्ठ मानी गयी है। आत्मा भी मानव-शरीर प्राप्ति हेतु लालायित रहती है। मानव-योनि में जन्म लेना स्वयं आत्मा और जन्म के पश्चात उससे सम्बन्ध रखने वाले अन्य सामाजिक सदस्यों के लिए अतीव आह्लाद का विषय है। अत: नवजात के स्वागतार्थ विविध गानों एवं नृत्यों का परिजनों द्वारा आयोजन किया जाता रहा है।

राजस्थान प्रदेश में भी शिशु के जन्म से पूर्व एवं शिशु जन्म के पश्चात बहुत सारे लोक गीत गाये जाते है। इन सभी गीतों को राजस्थानी में 'जच्चा रा गीत' और 'जच्चावां मंगळ' कहकर सम्बोधित किया जाता है। नामकरण के दिन प्रसूता स्त्री बालक को लेकर जच्चा गृह से बाहर आती है। शिशु को जन्म देने के बाद वह इस दिन ही स्नान करके दूसरे कपड़े पहनती है। इस अवसर पर किये जाने वाले विधि-विधान को राजस्थानी में 'सूरज पूजणौ' कहा जाता है। माता बालक को गोदी में लेकर घर के आँगन में बाजोट पर बैठती है। गाय के गोबर से लिपे आँगन में खड़िया, मिट्टी व गेरू से अनेक चित्र चित्रित किये जाते है। ब्राह्मण आकर अग्नि-वेदी बनाता है। तब अग्नि देवता का आह्वान कर अग्नि प्रदीप्त करता है। फिर मंत्रोच्चार करता है। इन मंत्रों के उच्चारण से ही जन्मना शूद्र समझा जाने वाला बालक ब्राह्मणत्व को प्राप्त कर लेता है, ऐसी मान्यता है। बालक को भी इस दिन स्नान करवाकर नये कपड़े पहनोय जाते हैं। मंत्रोच्चार के पश्चात माता शिशु को अपने दोनों हाथों में थामे अग्नि देव की परिक्रमा करती है। परिक्रमा की संख्या पांच और सात होती है। परिक्रमा के पश्चात वह सूर्य भगवान को जल चढ़ाती है। इस दिन से पूर्व प्रसूता घर के किसी भी पात्र को हाथ नहीं लगाया करती है। उसके खाने-पीने के बर्तन सब बर्तनों से विलग रखे जाते हैं। सूरज-पूजा का अनुष्ठान शिशु-जन्म के सातवें, नवें, पन्द्रहवें, इक्कीसवें या सत्ताईसवें दिन सम्पन्न किया जाता है। यहाँ यह विशेष रूप से ज्ञातव्य है कि यदि शिशु का जन्म मूल नक्षत्र में होता है तब सूरज-पूजा का दिन जन्मदिन से सातवाँ न होकर उक्त दिनों में से कोई दिन हुआ करता है। इसके अतिरिक्त, मूल नक्षत्र में शिशु का जन्म होने के कारण सूरज-पूजा के दिन अग्नि देवता के मंडप के समक्ष शिशु की माता के साथ शिशु का पिता भी बैठता है। ऐसा न करने पर शिशु के माता-पिता पर अशुभ घटना घटित होने की आशंका रहती है। मूल नक्षत्र में जन्म लेने पर शिशु को इस दिन सत्ताईस कुओं का जल इकट्ठा कर स्नान करवाया जाता है। सूरज-पूजा के दिन प्रज्वलित अग्नि से बनी राख को किसी कुएँ में डाला जाता है। इस दिन शिशु की माता रिक्त घट को लेकर कुएँ पर जाती है। वहां कुंकुम, तांडुल आदि से कुएँ की पूजा करती है व पुनः लौटते समय गागर को भर लाती है। इसे 'जलवा पूजण' कहते हैं। इस दिन शिशु को चम्मच आदि से एक चम्मच जल पिलाया जाता है। इस दिन से लेकर महीने भर तक जच्चा को पौष्टिक पदार्थ युक्त आहार दिया जाता है जिससे कि माता को स्वास्थ्य लाभ हो और बालक के लिए पर्याप्त दूध प्राप्त हो सके। सुंठ, गोंद, अजवाइन, बादाम, नारियल आदि को कूटकर घी के साथ मिलाकर लड्डू बनाये जाते हैं जिसे राजस्थानी में ‘सुवावड़' कहा जाता है। यद्यपि मुख्य रूप से सूरज-पूजा के दिन जच्चा के गीत गाये जाते हैं पर जच्चा के गीत इस दिन से पहले भी गाये जाते हैं।

जच्चा के गीतों का सर्वप्रथम प्रादुर्भाव गर्भिणी को सातवाँ महीना लगने पर होता है। राजस्थान में युवती के प्रथम प्रसव के समय उसे पीहर वाले अपने यहाँ बुला लेते हैं। यदि पीहर और ससुराल एक ही गाँव में हो तो पीहर या ससुराल वाले घरों की स्त्रियाँ थाल में गुड़, बताशे आदि भरकर, जहाँ प्रसविनी निवास करती है (पीहर या ससुराल में), वहां गीत गाती हुई जाती है। इस अवसर को 'आगरणी' नाम से सम्बोधित किया जाता है। जच्चा के गीतों में प्रमुख रूप से ये भाव मिलते हैं। ।

नारी जीवन की सार्थकता मातृ-शक्ति प्राप्त करने में है।' बाँझ' शब्द एक प्रकार से स्त्री के लिए गाली रूप में माना गया है। निस्सन्तान औरत को देवरानी-जेठानी के मर्मान्तक व्यंग्य-वाक्यों को सहन करना पड़ता है। सवेरे पहले पहल उसका मुख देखने पर लोग अपशकुन मानते हैं। भरे-पूरे परिवार में वह सूनापन महसूस करती है। अपनी कोख के फलीभूत होने हेतु वह नाना प्रकार के टोनेटोटके करती है। अनेक देवी-देवताओं की मनौतियाँ मानती है। निस्सन्तान होने पर एक ललना अपने मानव-जीवन को निरर्थक मानती है। सन्तान-प्राप्ति हेतु राजस्थानी लोकगीतों में विविध देवताओं का आह्वान किया जाता है, जिनमें भाग्य विधात्री बैमाता देवी, सूर्य, भैरव, सूर्य-पत्नी राणकदे आदि प्रमुख है। उदाहरणार्थ राजस्थान का लोक गीत यहां प्रस्तुत किया जा रहा है जिसमें सूर्य-पत्नी रणकदे से सन्तान--प्राप्ति के लिए प्रार्थना की जाती है -

‘छींका तौ पड़ियौ ओ माता चूरमौ रे ।

ठणकै सिरांवण मांगण वालौ नहीं ओ माता रणकदे

म्हांनै माणस क्यांनै सिरज्या?'

कितना नैराश्य है! ऐसा लगता है कि मानो सारा जीवन जलकर भस्मीभूत हो गया है और फलस्वरूप एक गहरी-सी आह निकली है जो जीवन की निरर्थकता को प्रकट कर रही है। अपने इष्टदेव के प्रति खींझ है कि आपने हमें मनुष्य ही क्यों बनाया? बालक के खाने हेतु सुस्वादिष्ट चूरमा बनाना हमारे वश की बात थी जो हमने बना दिया। पर कोई रोकर चूरमा माँगने वाला हो तब ना! परवशता को स्वीकार लोक-मानस आराध्य देव का सम्बल ग्रहण करना चाहता है। परिणामतः भक्त के दैन्य से अभिभूत हो सन्तति दान से उसके मानव-जीवन को इष्टदेव कृतार्थ करते हैं।

सन्तानोत्पत्ति की आशा के निश्चय के उपरान्त पति-पत्नी के गर्भस्थ शिशु के पुत्रपुत्री रूप पर चर्चा-परिचर्चा होती है। इस प्रकार के गीतों में भी विविध देवों से प्रार्थना की जाती है कि भ्रूणावस्थित शिशु पुत्र में परिणत हो जाए। इस प्रकार की प्रार्थनाएं वैदिककालीन समाज में भी की जाती थी।

राजस्थानी लोक-गीतों में वर्णन मिलता है कि प्राणेश्वर माना जाने वाला पति पुत्रीजन्म की आशंका पर इस प्रकार पूर्व चेतावनी भी देता दिखाई देता है।

**कोख का दुःख :** स्त्री को संतान नहीं होती, इससे बढ़कर उसे और दुःख नहीं। सारे सुख हैं, पर मातृत्व की गरिमा नहीं मिली तो उसका जीवन ही निरर्थक हैं। अपुत्रवती स्त्री पुत्र के लिए भैरव की प्रार्थना करती है।

भैरूँजी काठे रे गँवाँ री चोढूँ लापसी, माँय तो गायाँ रो देसी घीव

कासी रा बासी एक तो अरज म्हारी हेलो साँभळो।

भैरूँजी देराण्याँ-जेठाण्याँ मनें मोसो बोलियो,

देराण्याँ जेठाण्याँ रे हींडै पालणो।

भैरूँजी हूँ एक पुतर बिन कुळ में बाँझड़ी।। कासी रा बासी.

भैरूँजी कदेय न भीजी म्हारी दूधाँ काँचळी;

भैरूँजी कदेय न भीज्यो म्हारो काँधो लाल सूँ।

कासी रा बासी, एक पुतर बिन कुळ में बाँझड़ी।

भैरूँजी सास सपूती, बीँ रे देवरियो लाडलो।

भैरूँजी नणदल ऊँनाळे री बळती ए लाय। कासी रा बासी ।

भैरूँजी कासी मैं बाजै थारे घूघरा, कोडाणो मै बाजै नगर निसाण।

तोळाणो रा भेरुँ, एक तो अरज म्हारी हेलो साँभळो।।

भैरूँजी पीवरिये रे माँय धसूँ देवळो।

आरती जाँवती ने हूँ थाँने धोकस्यूँ।

भैरूँजी एक एक तो अरज म्हारी हेलो साँभळो।3

हे भैरव, मैं काठे (मरुभूमि में पैदा हुए) गेहूँओं की लपसी चढ़ाऊँगी। उस में गाय का घी डालूँगी। हे काशी के बासी, एक अरज मेरी सुनो। देवरानी, जेठानी ने मुझे ताना मारा है। उनके तो पलने में पुत्र झूल रहे हैं;मैं अभागिनी कुल भर में एक ही बिना पुत्र की बाँझ हूँ।

हे भैरव, स्तन के दूध से मेरी काँचली (आँचल) कभी नहीं भीगी, न मेरा कंधा भीगा। प्यारे पुत्र के मुख से टपकी हुई लार से। काशी के वासी, मैं अभागिनी कुल भर में अकेली निपूत बाँझ हूँ। मेरी सास सुपुत्रवती है, उसके लाडला देवर पुत्र है और ग्रीष्म की तीव्र आग की तरह जलती भुनती मेरी ननद उसकी पुत्री है। ये दोनों मुझे व्यंग्य कसते हैं।

हे देव, काशी में आपके नाचते समय के घुँघरू बजते हैं और कोड़मदेसर में आप के निसान धहराते हैं। हे तोलियासर के भैरव, मेरी विनम्र प्रार्थना सुनो।

मैं पीहर में आपका मंदिर स्थापित करुँगी और आते-जाते आपका वंदन करुँगी। केवल एक प्रार्थना मेरी सुनो।

राजस्थान में भैरूंजी को काला जी के नाम से भी जाना जाता हैं। ऐसा ही एक और गीत भैरव आराधना के सन्दर्भ में ढूँढार क्षेत्र में मिलता है, जिसमें स्त्री की व्यथा झलकती है,

जी काला, बागां जी बागां म्हूं फिरी

जी काला, सरवर सरवर म्हूं फिरी

जी काला, कहियन पाया फलफूल

जी कला कूरंवडी वैरण होई जी

ससुरा के आंगण ढोल न बाज्या

बाप न भेज्यो म्हारे जामणो जी काला

सास सपूती, पोतो नी झेल्यो

माय नभेज्यो म्हारे पोमचो जी काला

भरीपूरी गोद सूं चौक न बैठी

बीरो न ल्यायो चुनड़ी जी काला

नणद सपूती, सात्यां नी पूरया

वैणान भेजी म्हारे कांचली, जी काला

तातोजी नी जीम्यो, रातो नी औढ्यो

पीलो पहर सूरज नी पूज्यो जी काला

आडो जी ले आँचल न दीनो

कदैक न भीजी म्हारी कांचली जी काला

मेंड्या पै चढ म्हानै हेलो नी पाडियो

दौड़ न लाग्यो म्हारी आंगली जी काला

रात को रांध्यो बासो नी राख्यां

ठणक कलेवो नीं मांग्यो जी काला

पास पड़ोस्यां का ओलंभा नीं आया

जी हे लो सुणज्यों जी कंदियन ओलंभा झेलिया

सारंग खेड़ी का काला

कूंखडली वैरण होई जी ।4

हे काले भैरव ! बाग-बाग भटकती फिरी। मुझे कहीं फूल प्राप्त नहीं हुआ। सरोवर-सरोवर घूमती फिरी, हरा वृक्ष नहीं प्राप्त हुआ। मेरी कोख मेरी दुश्मन है, जिसके कारण मेरे ससुर के आंगन में ढोल नहीं बजा, सासू ने पौते को गौद नहीं खिलाया। मेरे पिता तथा माता ने जामणा तथा पोतड़ा नहीं भेजा। भरी पूरी गौद से में चौक पर नहीं बैठी, मेरा भाई मेरे लिए चुनड़ी नहीं लाया, बहिन ने मेरे लिए काँचली नहीं भेजी। मैंने गरम भोजन भर पेट खाया नहीं, लाल बेस ओढा नहीं, पीला ओढ कर सूरज नहीं पूजा। मैंने गोदी में पुत्र लेकर आडा आंचल नहीं डाला। मेरी कंचुकि कभी दूध से नहीं भीगी । छत पर चढ़कर बच्चे ने मुझे पुकारा नहीं, मेरी अंगुली नहीं पकड़ी। मेरे बच्चे ने ठुनक कर कलेवा नहीं मांगा। बच्चे की शरारत पर पडौसियों के उन्हानें मैंने नहीं सुने। हे काले भैरव! मेरे हाल पर रहम कर तथा मुझे सपूती करदे। संतान हीन स्त्री द्वारा अपने अभाव की ऐसी मार्मिक तथा वेदना की ऐसी सटीक अभिव्यक्ति विश्व-साहित्य में दुर्लभ है।

**गर्भावस्था का गीत :** ईश्वर की कृपा से जब स्त्री माँ बनने की स्थिति में होती है तो गर्भावस्था के क्रम में उसके मन में तरह-तरह की इच्छाई उत्पन्न होती हैं, जैसे खाने पीने की, नारंगी खाने जिसे पूरा करना परिवार के लोगों का कर्तव्य हो जाता है –

मालीका रे खिड़की खोल भँवर ऊभा बारणो।

आओ कवरां बैठो नी पास, कांई तो कारण आया?

म्हारी धण ने पैलो जी मास नारंगी में मन गयो जी।

नारीं रा लागै छै हजार, कलियाँ रा पूरा डोड़ सेजी।

नारंगी रा दांता हजार, कलियांरा पूरा डोड से जी।

पैली खाई खाटी लागी, दूजी खट-मीठी लागी।

तीजी ने बिंदड़ राजा जनम लियो।

म्हारी धण ने दूजो जी मास, नारंगी में मन गयो.

म्हारी धण ने तीजो जी मास, नारंगी में मन गयो.

म्हारी धण ने चोथोजी मास, नारंगी में मन गयो.

म्हारी धण ने पाँचवोजी मास, नारंगी में मन गयो.

म्हारी धण ने छठो जी मास, नारंगी में मन गयो.

म्हारी धण ने सातवोंजी मास, नारंगी में मन गयो.

म्हारी धण ने आठवों जी मास, नारंगी में मन गयो.

म्हारी धण ने पूरा जी मास, नारंगी में मन रह्यो।5

माली के लड़के खिड़की खोल, भंवर जी बाहर खड़े हैं। आओ कुंवरजी पास बैठो, किस कारण आना हुआ? हमारी स्त्री के पहला महीना है और उसका मन नारंगी में लगा है। नारंगी के लगते हैं हजार और कली के पूरे डेढ़ सौ जी। नारंगी के देंगे हजार और कली के पूरे डेढ़ सो जी। पहली खाई तो खट्टी लगी और दूसरी खाई तो खट-मीठी लगी। तीसरी में बींदड़ राजा ने जन्म लिया।

मेरी स्त्री को दूसरा महीना लगा है और उसका मन नारंगी में गया है। इसी प्रकार तीसरा, चौथा, पाँचवां, छठा, सातवां, आठवां, और पूरे नौ महीने हो गए हैं और उसका मन नारंगी में रह गया है।

वास्तव में हमारे संस्कारों की शुरुआत गर्भाधान संस्कार से होती है। ये बालक के जन्म के पूर्व का संस्कार है। इन गीतों की विषयवस्तु में बालक के माता-पिता अच्छी संतान की कामना करते हैं।

संतानोत्पति की आशा के निश्चय के उपरान्त पति-पत्नी में गर्भस्थ शिशु के पुत्र-पुत्री रूप पर चर्चा-परिचर्चा होती है। इस प्रकार के गीतों में भी विविध देवों से प्राथना की जाती है कि भ्रूण में रहा बालक पुत्र रूप में परिणत हो। इस प्रकार की प्राथनाएँ वैदिककालीन समाज में भी की जाती थी।

राजस्थानी लोकगीतों में प्राणेश्वर माना जाने वाला पति पुत्री जन्म की आशंका पर इस प्रकार पूर्व चेतावनी देता है।

‘(जी ओ) गोरी जे थारै जलमैला धीव

तौ खाट पिछौकड़े घलावसां जी

(जी ओ) लाडू खारै लूंण रा जी

तौ पड़दौ तांणा काली कामली रौ जी

कदैई नी मुखड़े बोलसां जी

(तौ) म्हें सिंधावाला चाकरी जी।’6

किसी नवविवाहिता वधू के प्रथम बार गर्भाधान होना अत्यंत मंगलमय माना जाता है। गर्भवती स्त्री का पति परदेश जा रहा है। पति की अनुपस्थिति में अजवाईन आदि की व्यवस्था कौन करेगा? गर्भावस्था के आठवें मास में स्त्रियाँ ‘अजमी’ गाती हैं –

थेइज ओ केसरिया सायब गांव सिधाया ओलगणा,

सिधाया ओ अजमौ कुण मोलावे ओ राज ।

थेइज ओ मांनेतण रांणी हालरियो जिणजौ,

धेनडियो जिणजौ ओ अजमो म्हारा भावोसा मोलावो ओ राज।7

ओ केसरिया प्रियतम! आप दूसरे गांव जा रहे हो। ओ राज, अब अजवायन कौन खरीदेगा? ओ मानती रानी! तुम पुत्र उत्पन्न करना, अजवायन मेरे बाबोसा खरीद देंगे।

जन्म से पूर्व प्रसव वेदना से पत्नी व्याकुल हो रही है। पति बाहर चौपड़ खेलने में मस्त है। पत्नी पति के दाई बुलाने के लिए सूचना देना चाहती है। क्या कहे? कैसे कहे?

जच्चा के गीतों में प्रसव पीड़ा का कारुणिक चित्रण किया गया है। कई गीतों के प्रमुख रूप से प्रसव पीड़ा के फलस्वरूप प्रसूता के शारीरिक प्रभावों का वर्णन किया गया है। और अन्य कई गीतों में प्रसूता द्वारा प्रसव-पीड़ा से मुक्ति दिलाने हेतु दाई को बुलाने की प्राथना की गई है। प्रसव की असह्य पीड़ा से पत्नी व्यथित है। शर्मीली नार यह बात अपने पति से स्पष्टतः कैसे कह दे कि अब शीघ्र ही प्रसव होने वाला है?

ओ राजा सार रमता पीव ये पासा दूर धरौ वे हां।

ओ राजा सार धरौ चित्रसाल पासा रंगमेल धरौ वे हां।

ओ राजा जाजय देवौ उठाय साथीड़ा ने सीख दैवो वे हां।

ए म्हारी सदा सवागण नार थांरे कांई हुयो वे हां।

ओ राजा लाज सरम री बात पियाजी से कांई केवुं वे हां।

ए गोरी थारो म्हारो जिवड़ो एक दोनूं बिच कोण सुणे वे हाँ।

ओ राजा धसमस दूखे पेट कमर में चीस चाले वे हां।

ओ राजा होय घुडले असवार दाईजी ने लेण चालौ वे हां।8

ओ राजन! हे प्रियतम! आप खेलते हुए सार व पासों को दूर रख दो, ओ राजन! सार को चित्रशाला में व पासे रंगमहल में रख दो। ओ राजन, जाजम, उठवा दो व साथियों को विदा करो । ए मेरी सुहागिन प्रिया । तुम्हारे क्या हुआ? ओ राजन, लाज शरम की बात है, मैं अपने प्रियतम को क्या बताऊँ? ओ गौरी तुम्हारा और मेरा जीवन एक है। दोनों के बीच कौन सुनने वाला है? ओ राजन्! पेट कसमसाता हुआ दुखता है व कमर में चीस चलती है। ओ राजन्! घोड़े पर सवार होकर दाई को लेने जाओ।

युगानुकुल साधनोपलाब्धियों के साथ साथ लोकगीतों के वर्णनों में कुछ कुछ परिवर्तन आते रहते हैं। आधुनिक काल में शहरों में दाइयों का प्रभाव अस्पतालों के कारण से मिटता जा रहा है। इसकी शिकायत एक लोकगीत में बहुत सुंदर ढंग से हुई हैं।

‘जच्चा नै अेसा जुलम किया, अंगरेजी जापा सरू किया

दाई को बुलाणा बंद किया, नरसों को बुलाणा सरू किया।

नणदी को बुलाणा बंद किया, बहिना को बुलाणा सरू किया।’

उक्त गीत में युगानुरूप होने वाली सामाजिक धारणाओं का वर्णन किया गया है, इसके अतिरिक्त पत्नीशासित पति पर भी परोक्ष रूप से करारा व्यंग्य है।

जन्मोत्सव पर प्रसूता स्त्री को पीली चुनड ओढ़ाते हैं इसे ‘पीळो ओढ़ना’ कहते हैं। राजस्थान में ‘पीलौ’ सौभाग्यवती एवं पुत्रवती स्त्री का मांगलिक परिधान है। पीला वस्त्र जच्चा के ससुरालवालों की ओर से दिया जाता है| इसको बच्चे के जन्म पश्चात सात, नौ या ग्यारह दिनों पश्चात पीला यह बहू को ओढ़ाया जाता हैं|

हां ये जच्चा माथा ने मेमद लावजो ए जच्चा रखडी रतन जडाय,

सिरदार जच्चा ए उमराव जच्चा एथे तो महीन बंधन रो पीलो ओढ़ो।

हां ये जच्चा काना ने दडियो लावजो ए जच्चा जटना रतन जडाय।

सिरदार जच्चा ए उमराव जच्चा ए थे तो महीन बंधन रो पीलो ओढ़ो।

हां ए जच्चा ए हिवडे ने दार लीलावजो थारे टेवटो रतन जड़ाय।

उमराव जच्चा में सिरदार जच्चा ए तो महीन ....ओढ़ो।

हां ए जच्चा जाया ने घुडला थे लावजो ए वांरे गजरा रतन जड़ाय,

सिरदार जच्चा उमराव जच्चा ए थे.....ओढो।

हां ये जच्चा पगलिया ने पायल लावजो ए थारे बिछिया रतन जडायी,

सिरदार जच्चा उमराव जच्चा .....पीलो ओढ़ो।9

प्रस्तुत गीत में जच्चा के ससुरालवालों की ओर से पीला ओढ़ना के साथ उसके माथे में श्रृंगार हेतु मेमद एवं रखडी,रत्न जड़ित दडीयाँ, रत्न जड़ित गले का हार, हाथों के लिए रत्न जड़ित गजरा तथा घुडला और पैरों में पायल व विंछिया तथा अन्य आभूषण लाने का आग्रह किया गया है|

पीला ओढ़ना के श्रृंगार पश्चात जच्चा सूरज पूजन हेतु बैठती है। इस अवसर पर जच्चा स्नान करती है, नवीन वस्त्र धारण करती है और घर से छुआछूत का सामान दूर किया जाता है या शुद्ध किया जाता है।

सूरज पूजतां कुरजा नावण थूं कठे जाय?

जणी घर सूरज पूजती सूरज पूजवाने जाय।

डूंगर चढ़ती बेलड़ी ढोलण थूं कठे जाय?

जणी घर सूरज पूजती ढोल बनावा ने जाय।

डूंगर चढ़ती बेलड़ी कुमारण थूं कठे जाय?

जणी घर सूरज पूजती कलस बढ़ावा ने जाय?10

सूरज पूजा करने के लिए नाईन चलने लगी, तो कुरज बोली – नाईन, तू कहाँ जाती है? जिस घर में सूरज पूजा है, मैं वहीँ सूरज पूजा के लिए जाती हूँ। पहाड़ पर चढ़ती हुई बेलड़ी बोली ढोलिन! तू कहां जाती है? जिस घर में सूरज पूजा है, मैं वहीँ ढोल बजाने के लिए जाती हूँ। पहाड़ पर चढ़ती बेल बोली कुम्हारिन,तू कहाँ जाती है? जिस घर में सूरज पूजा है, मैं वहीँ कलश बंधाने जाती हूँ।

सूरज पूजण बहू नीसरी, भला भला सुगण मनाय।

तू मत जाणे जच्चा मैं बड़ी जी,

राणी भाग बड़ो छै थारी सांसू को, जिण जाया पूत सुलखणा।

दोय दोय लाडू सोंठ का धण उठी मचकाय,

सूरज पूजण बहू नीसरी।11

सूरज पूजा का अन्य एक गीत जो राजस्थान में अत्यन्त प्राचीन समय से चला आ रहा है। -

सूरज पूजन

डूंगर चढ़ती या बेलड़ी ओ राजा

नायण मोड़ेली डाळ

फुलां जो भरीयों यो छाबड़ो ओ राजा

थूँ-र मालण सद जाय?

रामचंदरजी सा रे किसनचंदरजी सा रे

घर ये बधावणो वो राजा

बांधुली बांदरवाळ ।

रामचंदरजी सा रे घर ये बधावणो ओ राजा

बांधुली बांदरवाळ ।

पैली य बांधुली पोळ्यां में ओ राजा

दूजी या साळ पटसाळ ।।

अगनीया बांधू रसोबडा ओ राजा

चौथी कुळदेवां रे बा-र

पांचवी या जांचा रे ओवरे ओ राजा

जाया छे लाडण पूत।

खोल सवागण खोतळो वो राजा

थैं-र सांचा दस मास ।।

नीसरै ज्याचा राणी बारणे वो राजा

सूरज पूजण आय ।।

कूंण साजनिया री कुळ बहू ओ राजा

कूंण साजनिया री धीय

दशरथजी सा साजनिया री कुळ बहू ओ राजा

जनकजी समधी री या धीय ।

भायां री बैण सवासणी ओ राजा

खांतीला किसनचंदरजी सा री नार ।

पायळ लगता य घूघरा ओ राजा

जड़ाव बाई सा रा बीर

चूडा जो लगती या चून्दडी ओ राजा

ओढ़ावे जामण जायो बीर ।

नौगज परती यो दळ चढ्यो वो राजा

कळश चढ्यो परिवार ।

असड़ो बधावो यो नत नंवो ओ राजा

औसर जनम्याँ छै पूत ।।12

अच्छे अच्छे सुगन बनाकर बहू सूरज पूजने के लिए निकली। जच्चा तू मत समझना की ‘मैं बड़ी हूँ’ राणी तेरी सासू का भाग बड़ा है और उसके साथ स्त्रियाँ गीत गाती हुई जल पूजने के लिए कुएँ या तालाब पर जाती हैं। वे मार्ग में इस प्रकार गाती हैं –

कौण चिणायो झालरो, कौण लगाईं गज नींव?

पूज सुहागण जच्चा झालरो।

सुसर चिणायो झालरो, जेठजी लगाईं गज नींव। पूज.

कौण की या कुल बहू, कौण की या धीय?

सुसराजी की कुल बहू, सात पांचा की है धीय।

भाई तो बहन सहोदरा, पिया की बड़नार । पूज.

ओढ़ पह जच्चा नीसरी, थालागाजी के बजार।

मांढो तो चूंढो कूलड़ो, गाढो भी लिया माय। पूज.

या कूलड़ो जब नीकले होकर जलवा माय,

कोथली को मूंढो सांकडो धुल रही रेशम डोर। पूज.

दे थारा डूम खवास ने सास ननद पहराय।

बहू ए विदाई माता थे जायो सुलक्षणो पूत।

पूज सुहागण जच्चा झालरो।13

किसने कुए पर झालरा चुनवाया और किसने गहरी नींव लगवाई? सुहागन जच्चा। झालरा पूज। सुसराजी ने झालरा चुनवाया और जेठजी ने गहरी नींव लगवाई? किसकी यह कुल बहू है और किसकी यह लड़की है? सुसराजी की यह कुल बहू है और पांच सात घरों की (प्यारी) यह बैटी है। भाई-बहनों की सहोदरा और अपने प्रियतम की मानी हुई स्त्री है। जच्चा थानागाजी के बाजार में पहिन ओढ़कर निकली। सुंदर चित्रित, कुल्लड के भीतर गाढ़ा सामग्री है। कूलड़ा लेकर बच्चे की माँ जलवा में निकली किंतु रुपये की थैली का मुँह सँकड़ा है और रेशम की डोरी बंध रही है। सास ननद ने घेरा अपने डूम का दिया है। माँ तुमने अच्छा लक्षण वाला पुत्र उत्पन्न किया जिससे इस बहू का विवाह हुआ। सुहागण जच्चा झालरा पूज।

मा, सहस-तळावां में गई जे।

रीता ए समँद-तळाव, हंसा बुगला उड रह्या जे।

मा, बाग बगीचाँ मैं गई जे।

मा, काचा ए दाडम दाख, कोयल कागा उड गया जे।

मा, सहस बाजाराँ में मैं गई जे।

मा, हाट्याँ ए सैं जडली हाट, बाजीगर का उठ रह्या जे।

मा, राय रसोयाँ में मैं गई जे।

मा, जीमै देवर जेठ, बाई जी रो उठ रह्या जे।

मा, रंग महलाँ में मैं गई जे।

मा, सूत्या ए बाई जी का वीर, हाथ पकड़ ओठी करी जे।

मा, आयो ए आळ-जंजाळ।

मा,......,कूखड़ली वैरण भई जे।

मा, सहस-तळावाँ मैं गई जे।

मा, भरियो हिनोला खाय, हंसा बुगला रम रह्या जे।

मा, सहस-बगीचाँ मैं गई जे।

मा, पाक्या सैदाडम दाख, कोयल सुवटा खा रह्या जे।

मा, सहस-बजाँरा में मैं गई जे

मा, हटवाँ सै खोली हाट, बाजीगर का रम रह्या जे।

मा, रंग महलाँ में मैं गई जे।

मा, देख्यो गीगो महलाँ माँय, पालणिये में झूलतो जे।14

पुत्र विहीना अभागिनी सरोवर के किनारे गई। उसे देखकर हंस, बगुला आदि पक्षी उड़ गए।वह बगीचे में गई तो वृक्षों पर फलों को कच्चा पाया औ बाग के पक्षी उसके अशुभ दर्शन से उड़ गए। बाजार में गई तो दुकानदारों ने दुकानें बंद कर दीं। घर की रसोई में गई , तो देवर-जेठ उससे धृणाकर उठ खड़े हुए। यही नहीं, रंग महल में पति ने भी इस निपूती अभागिन का स्वागत नहीं किया। हाय, एक पुत्र के बिना इस अभागिन के लिए सारा संसार शून्य हैं, अमंगलमय है-अस्पृश्य है।

परंतु ज्यों ही दैव की कृपा से इस स्त्री की कोख पुत्रवती हुई, त्यों ही सारे संसार का रंग बदल गया। सरोवर, बाग, घर, रंगमहल सब जगह इस का आदर हुआ। पलने में झूलते हुए पुत्र के मुखड़े की हास्य रेखा ने सारी दुःख कालिमा को धो कर आर्दस्थ्य के चित्रपट पर नए स्वर्गीय सुंदर चित्र अंकित कर दिए। सब कुछ कह लेने के बाद आखिर यह उस अभागिन का स्वप्न ही है जो वह अपनी माँ से कहती हैं।

सोजा सोजा रे हालरिया,बारे हाबू आयो रे,

थारे बाप गिया परदेशां, थारी माय झुरे हमेसा,

कणीने दुख आपणो केसां, जपजा जपजा मारा लाल

बारे हाबू आयो रे।।

अब नणवीरों वीरो आशी, थारे आछा रमत्या लासी।

थने हँस कर गले लगासी, थने घणो खेलाई गोद।। बाद.।।

लाला ने लेर बारण सूती, कणकी नजर लगाईं कपूती।

ही कुण अशी रांड अणूती, जणी मार्यो नजर रो बाण।। बारे.।।

सात लूण काँकरियाँ लोटी, सात राती मरचां लीटी।

लाल पर खारी चितरां कीधी, लीदी इक्कीस बार उतार।। बारे.।।

आग में लूण मरच नकवायो, तड़ी को लूण को न सुण पायो।

मिरच धुओं नाम नी आयो, चट लाला ने आ गई नींद

सोजा सोजा रे हालरिया, बारे हाबू आयो रे।।15

मा अपने पुत्र पर अपनी ममता की बौछारें लुटाती हुई लोरी गाकर अपने लाडले पुत्र को सुलाने का यत्न कर रही है। बच्चा अनेकों प्रयत्न पर भी जब नहीं सोता तब हार कर हालरिये को जोरों से पलने में झुलाती हाऊँ का हव्वा दिखाती कहती है तू सोजा मेरे लाला बाहर हाऊँ आया है तेरे पिता भी परदेस गए हैं, विदेश जाने से स्वयं दो-दो कतरे आँसू बहा रही हूँ। अतः तू सोजा लाल, मुझ पर दया कर। मैं अपने कष्ट को किसके सामने कहूँ ? तू सुनता भी है? मेरे रोने को? अब मेरे लाल सोजा – हव्वा आने वाला है – मैं अपना दुःख किससे कहूँ।

और फिर तेरे सो जाने के बाद मेरी ननंद बाई के भाई (तेरे पिता) तेरे लिए खेलने के अच्छे-अच्छे खिलौने लाएँगे और तुझे हँस कर गले लगा लेंगे, अपनी गोद में खिलाएँगे – क्योंकि तू अच्छा मुन्ना है, सो जाएगा। मगर माता के लाल तो मनमानी ही कर रहे हैं। सोते नहीं – रोते हैं अतः माता को संदेह होता है कि मैं तुझ लाल को लेकर बाहर सो गई थी। किसी निपूती ने तुझ पर नजर लगा दी, वह बड़ी दुष्टा थी जिसने तेरी सुंदरता को देख दृष्टी लगा ही दी। बड़ी बुरी नजर थी। अतः नजर उतारने के लिए सात नमक की डलियाँ और सात लाल मिरचें लेकर मेरे लाल पर इक्कीस बार वार कर आग में डालती हूँ – देख-देख नमक के जलने की तडक की आवाज भी नहीं आई और न मिर्च का तनिक भी धुआँ ही निकला। इसलिए अब तुझे झटपट नींद आ जाएगी।सो जा मेरे लाल।

**बधाई :** पुत्र जन्मोत्सव पर यह गीत गाया जाता है। माता अपने नवजात शिशु पर अपना वात्सल्य लुटाती जान पड़ती है। जन्म की बधाई देती है –

थारी ने बधाई लूरे नाना खेलो म्हारा बीर

थाली लीदी लोट्या लीदो लीदी सोहन थाल

कीका थारे कारणों, म्हां पूजा खेतरपाल ।। थारी...।

जावा ला बाजार में, लावां लां मिठाई,

आवेला नणजी रो वीर, बांटे ला बधाई। थारी...।16

माता अपने पुत्र से कहती है कि हे पुत्र! मैं तेरी बधाई लेती हूँ। तू यहाँ (गोदमें) खेला कर। मैंने तेरे लिए बर्तन बासन, सोने के थाल आदि ख़रीदे हैं। और तेरे लिए मैंने (क्षेत्रपाल) भैरव की अर्चना की है। ननद के भाई (तेरे पिता) आएंगे, तब बाजार में जाकर मिठाई लाएँगे और बधाई बाँटेगे।

‘नंद घर आनंद भयो जय कन्हैया लाल की’ कह जन्मोत्सव की बधाइयों से पिता भी अपने हर्षातिरेक को व्यक्त करता है। आज उसके आनंद जो हुआ है।

जन्म से लेकर मरण तक के समस्त संस्कारों का दिशाबोध हमें यह लोक संस्कृति चरण-चरण समझाती है। जिस प्रकार माँ अपने नन्हें को अंगुली पकड़कर चलना सिखाती है उसी प्रकार लोक संस्कृति भी हमें अंगुली पकड़कर चलना सिखाती है। वह न हमें गिरने देती है और न भटकने देती है।

जन्म के बाद माँ अपने बच्चे को पालने में बड़े आनंद पूर्वक झूला झुलाती है और साथ में घर का काम भी तो करना है -

गीगा काम करूं रे चित पालणे में।

मारो हियो रे हिलोरा खाय, रे मारो रायमल हिंडे पालणे में।

गीगा दादा सा आया रे हींडो दे गया,

गीगा करगा लाड ने प्यार।

रे मारो रायमल हीण्डे पालणो।

गीगा भाई सा आया रे हींडो दे गया।

गीगा कर गया लाड नै प्यार ... रे मारो...17

हे गीगा, हे लाला मैं काम कर रही हूँ लेकिन मेरा चित- मेरा मन तो पालने में ही लगा हुआ है, तुम्हारे पालने में झुलने के साथ ही आनंद से मेरा ह्रदय भी हिंडोले ले रहा है| मेरा राजा बेटा पालने में झूल रहा है, गीगा के पिता जी पालने के पास आते हैं और उसे झूला झुलाकर लाड प्यार करते हैं,उसका भाई भी उसे पालने में झुलाता है और लाड प्यार करता है | प्रस्तुत लोकगीत में माँ का अपने शिशु के प्रति प्रेम का अद्भुत वर्णन देखने को मिलता हैं|

पालने में बच्चे को सुलाने हेतु माँ लोरी का प्रयोग करती हैं, यहाँ उसे शब्दों का चयन अर्थ युक्त न करके कोई भी अतार्किक लेकिन लयबद्ध शब्द प्रस्तुत लोरी में उपयोग किया गया है-

लोरी लोरी गीगा लोरी, थारै गाय वियाई गौरी,

म्हारा गीगा धाय राज लोरी।

गीगै रे दादेजी नै वेग बुलाओ, म्हारै गीगे राकोड कराओ।

म्हारा गीगा धाय राज लोरी। थांरी दुधां भरी कटोरी – म्हारा..

गीगे री दादीसा ने वेग बुलाओ, अगलिये चढ़ सोहन थाळ बजायी।18

इस प्रकार गीगा को लोरी सुना कर असम्बन्ध शब्दों द्वारा उसका मनोरंजन किया जाता है|

शिशु जो गोद में होता हैं तब माँ उसे अपना स्तन पान करवा कर धन्य होती है और अपने दूध के साथ-साथ वह उसे कुलवंश के संस्कार भी पिला देती है। इसे ही हम ‘जन्म घुट्टी’ कहते हैं। जन्म घुट्टी में संस्कार पान दूध और ‘लोरी’ के माध्यम से माँ अपने शिशु को करवा देती है।

माँ लोरी गाकर अपने शिशु को केवल सुलाना ही नहीं उसे जीवन जय का संदेश भी देना चाहती है। वह अपने मन की उमंग और मन का भाव उसे लोरी के माध्यम से देना चाहती है।

माता जब शिशु को सुलाकर या अपनी गोदी में लेटाकर आँचल से ढंककर अपने शिशु को मीठी लोरी सुनाती हैं तब वह अपने शिशु को केवल मीठी गीत लय ही नहीं सुना रही होती वह उसे सुसंस्कार भी दे रही होती है। एक उदाहरण देखें।

जतरी दाण थने मचका देऊँ, वी मचका गणतो जाजे तू

धरम-नेम को पारन करजे, धरम धजा फेहरावजे तू

जतरी दाण ....

मात-पिता की सेवा करजे, गरु का सरणा जाजे तू

जतरी दाण ....

जुलमी-जुलम मति सईजे, धरती ती जुलम मिटाजे तू

जतरी दाण ....

गो ब्रामण की रगसा करजे, बेनां को मान रखाजे तू

जतरी दाण ....

वका पड़े जद राज, धरम पे, जुद्ध भूम में जाजे तू

जतरी दाण ....

खोल उगाड़ी छाती लड़जे, मोरां पे घाव मति खाजे तू

जतरी दाण ....

मर जाजे, कट जाजे रन में, चुडला को मान रखाजे तू

जतरी दाण ....

जतरी दाण थने मचको देऊँ, वतरी दाण धरा धुजाजे तू

जतरी दाण ....

म्हारे दूध, बंस की इज्जत, बेटा मति गंवाजे तू

जतरी दाण ....19

माँ लोरी गाकर अपने शिशु को केवल सुलाना ही नहीं उसे जीवन जय का संदेश भी देना चाहती है। वह अपने मन की उमंग और मन का भाव उसे लोरी के माध्यम से देना चाहती है।

“जितनी बार मैं तुझे मचका दे रही हूँ तू ऊँ मचकों को गिनकर याद रख लेना। तू जीवन में धर्म और नियम पर अटल रहना। अपने माता-पिता की सेवा करना, अपने गुरू की शरण में रहकर ज्ञान प्राप्त करना, अगर कोई जुलमी जुल्म करे तो उसे सहने के बजाय उसका प्रतिकार करना। धरती से जुल्म को मिटाना। गौ-ब्राह्मण की सेवा करना, उनकी रक्षा करना, बहनों का मान रखना। मुसीबत पड़ने पर राज और धर्म की रक्षा के लिए युद्ध में डट जाना। युद्ध में अगली पंक्ति में छाती खोल कर लड़ना। पीठ पर वार मत खाना। भले ही युद्ध में शहीद हो जाना किन्तु अपने चूड़ेवाली के चूडे की इज्जत रखना। पहली पंक्ति को अंतिम पंक्ति से जोड़कर वह उसे संदेश देती है कि तू वीर है। सत्ता पर अधिकार करना। जितनी बार मैं तुझे मचका(झूला) दे रही हूँ उतनी बार धरती को हिला देना। लेकिन आततायी बनकर नहीं/धर्म पर अटल रहकर। हे पुत्र! तू मेरे दूध और अपने वंश की इज्जत की रक्षा करना। उस पर आँच मत आने देना ऐसे कितने ही झूले और लोरियाँ वाचिक लोक परम्परा में जीवित तथा जीवंत हैं जिन से केवल शिशु ही नहीं उन्हें सुनकर बालक, किशोर और युवा भी संस्कार ग्रहण करते हैं।

इसी प्रकार हम झूला झुलाने का एक भावपूर्ण और पारिवारिक स्नेह सिक्त गीत देखें –

नाना थारो पालनों बंदइ दूँ पडसाल में रे

लाला थारो पालनों बंदइ दूँ पडसाल में रे

आवताँ रे जावताँ थारा दादा जी मचको देवेगा

आवताँ रे जावताँ थारी दादी जी झूलो देवेगा

आवताँ रे जावताँ थारो काको मचको देवेगा

तू हुलस रे नाना हुलस रे

तू दूद पतासा जीम रे

थारो सोना को हांकरियों

थारो रूपा को मांदरियों

थारी रेसम लांबी डोर

थारे आंगणे नाचे मोर

थारो झूलो झालर दार

थारो झूलो वाजण दार

आवताँ रे जावताँ थारी माता झूलो देवेगा

आवताँ रे जावताँ थारी काकी मचको देवेगा

तु हूलस रे नाना हुलस

तू दूद पतासा जीम रे20

(यह झूला गीत परिवार के अन्य रिश्तेदारों को जोड़ते हुए आगे चलता जाता है।)

हे नाना (बच्चे) तेरा झूला पडसाल में बंधवा दूँ। आते जाते सभी तुझे झूला झुलाएँगे। तेरे दादाजी तुझे झूला झुलाएँगे। तेरी दादी जी तुझे झूला झुलाएंगी। आते जाते तेरे काका काकी तुझे झूला झुलाएँगे। हे बच्चे तूं प्रसन्न हो जा/तु हुलसित हो जा। तेरी कमर में सोने का कंदोरा और हाथों में चाँदी के कंगन हैं। तेरे झूले में लम्बी रेशम डोर बंधी है। उसमें रंग बिरंगी झालरें तथा बजने वाले घुंघरू लगे हैं। तू दूध पतासा खा और हुलसित हो। इसी प्रकार परिवार के अन्य आत्मीय जनों माता, काकी, काका, भाई, बहन, बुआ आदि का संबंध बताकर इस झूला गीत के माध्यम से पारिवारिक संपन्नता, आत्मीयता और भरे पूरे सामूहिक परिवार का संकेत भी इस झूलागीत में मिलता है।

नान्हा की बाई आई खेल खलकणा लाई

साइ जा रे लाला सोइ जा लाल पलंग में सोइजा

थारी बाई के खोरे सोइजा

थारी बाई गी पाणीनें

थारी बाई हाँजे आवेगा। खेल खलकणा लावेगा

नान्हा की बाई आई। खेल खलकणा लाई

एक खिलकणों टूट ग्यो। मुन्नों राजो रूठी गयो

मुन्ना ने मनाओ रे भई। दूध जलेबी लाओ रे भई

सोइ जा रे लाला पाव घड़ी। थने खवाणा खीर पूड़ी

खीर में घाल्यो दूद घणों। सीरा में घाल्यो घी घणों

म्हारो लालूड़ा में जीव घणों

सोइ जा रे लाला खोरा में । खेत को पाणी धोरा में

नान्हा की बाई पाणत करवा गी

मासी पाणी भरवा गी

भुवा गीत सुणावें जी। लाला ने चुपसो रखावे जी

चमचम चूनर मासी की

लाल चूनड़ भुवा की । रंग रस चूडलों जामण को

जामण बाई अइगे रे । गा को दूंद लाईगी रे

नान्हो दूद पीवेगा । बाई का खोरा में सोवेगा

सोइ जा रे नाना सोइ जा। थारी बाह का खोरा में

सोइ जा। लाल पलंग पे सोइ जा21

लल्ला-लल्ला लोरी /दूध की कटोरी । कटोरी में पतासा है, मुन्ना तमाशा कर रहा है। सो जा मेरे लाला सोजा। लाल पलंग पर सो जा। अपनी माँ की गोदी में सो जा। तेरी माँ पानी भरने गई। तेरी माँ शाम को आएगी। खिलोने लाएगी। मुन्ने की माँ आ गई। खिलौने लाई। एक खिलौना टूट गया। मुन्ना राजा रूठ गया। मुन्ने को मनाओ । उसके लिए दूध जलेबी लाओ। हे मुन्ने पाव घड़ी सो जा। तुझे खीर पूड़ी खिलाऊँगी । खीर में दूध ज्यादा है। हलवे में घी ज्यादा है।मेरा लाला में मोह ज्यादा है। हे बच्चे, हे लाला अपनी माँ की गोदी में सोजा। तेरी माँ खेत पाणत करने गई है। खेत के धोरे में पानी है। नान्हा की बाई पाणत कर रही है। लाला की मासी पानी भरने गई। बुवा माँ गीत सुनाकर लाला को चुप करा रही है। लाला की माता आ गई। वह गाय का दूध लाई। नान्हों दूध पीवेगा। अपनी माँ की गोदी में सोएगा । नान्हा सोजा। अपनी माँ की गोदी में सोजा। लाल पलंग पर सो जा।

माँ आसपास की प्रकृति, पशु-पक्षी आदि से बच्चे का परिचय कराती है -

गीगा ने खिलायी ए चिड़कली

गीगा ने खिलायी ए।

गीगा रोवै च्याऊँ म्याऊँ

गीगो ने हंसायी ए चिडकली, गीगा ने खिलायी ऐ।

पगां अक बाँधूँ घूघरणा थारै

बल मोतीडा रौ हार, ए चिडकली, गीगा ने ...22

ओ चिड़िया। छोटे बच्चों को खेलाओ। छोटा बच्चा च्याऊँ-म्याऊँ रोता है। ओ चिड़िया। छोटे बच्चे को हँसाना। ओ चिड़िया। तेरे पैरों में मैं घुंघरू बाँधू और तेरे गले में मोतियों का हार पहिनाऊँ। छोटे बच्चे को खेलाना।

राजस्थान में बधावों गीत का अपना ही महत्त्व हैं| प्रस्तुत गीत में माता अपने बच्चे के दांत आने का बधावा गीत बड़े सुंदर भाव दर्शन करवाता है -

हरजी तो आवत म्हे सुण्या, दूधां तो बरस्यो मह जी।

आज बधावो मेरे राम को। चनण चौकी हरनैं बैसना, दूध पखाळां हर का पांवजी।

आज बधावो मेरे राम को। चावल राधां हर नै ऊजला, हरिया मूंगां की दाळ जी।

घी बरतावां हर नै टोकसां, जाळा तो पर री खांड जी । आज बधावो मेरे.. राम को।

पूड़ी तो पोवां हर नै लड़झड़ी, तीवण तीस बतीस। आज ... कैर करैली हर नै सेतलां,

पापड़ तळां ए पचास। जीमत निरखां हर की आंगळी,मुळकत निरखां दांत।

मूंगफळी सी आंगळी, दांत दांडू का बीज। आज बधावो रे मेरे राम को।23

जच्चा को पीला ओढ़ाने और उसको बुरी नजर से बचाने का ये गीत राजस्थान प्रदेश में बड़ा प्रसिद्ध है –

उधयपुर से तो सायबा पीलो मंगाओ जी।

तो नानी सी बंधण बंधाओ गाढ़ा मारुजी।

पीला तो पल्ला साहेबा बंधण बंधावो जी।

तो अधबिच चाँद छपावो गाढ़ा मारुजी।

पीळो तो ओढ़ म्हारी जच्चा पोढ़े जी।

बड़ी तो सराही सहर सराही गाढ़ा मारुजी।

पीळो तो ओढ़ म्हारी जच्चा महल पधारोजी।

तो कोई है सपूती निजर लगाईं गाढ़ा मारुजी।24

ओ प्रियतम! उदयपुर से पीली चूनड़ मंगवाओ।ओ अच्छे मारुजी। उस चूनर के महीन ‘बांधण’ बंधवाओ। ओ प्रियतम! इस पीले के पल्ले बंधवाओ और अधबिच में चांद छपवाओ। ओ प्रियतम । पीलो ओढ़कर सोयेगी तो सारे शहर में उसकी सराहना होगी। ओ प्रियतम। पिला ओढ़कर मेरी जच्चा महल में गई तो किसी सपूती ने उसके नजर लगा दी।

‘गाडूलौ’ नामक लोकगीत भी राजस्थान में बहुत प्रसिद्ध है। स्नेहमयी माता खाती से कह रही है कि उसके पुत्र के लिए एक सुंदर सा गाडूला घड़ ला –

सुण सुण रे खाती रा बेटा, गाडूला घड़ ल्याव।

गाडूला घड़ ल्याव, म्हारे गीगा ने मन भाय।

आम को गाडूलौ घड़ ल्याव चांदी का पात चढ़ाय।

सोने की खाती रा बेटा, कील ठोकाय।

सुण सुण रे खाती रा बेटा, गाडूला घड़ ल्याव।25

हे खाती के बेटे । सुन एक गाड़ी बना के ला जो कि मेरे छोटे बच्चे के मन को भा जाय। आम की लकड़ी की गाड़ी बना। उस पर चाँदी का पात चढ़ा व सोने की कीलें ठोक दे। सुन खाती के बेटे मेरे पुत्र के लिए गाड़ी घड़ ला।

**चूड़ा कर्म(चूड़ा के गीत):-** इसको मुंडन भी कहते हैं। ये बालक के दो या तीन वर्ष पूरा होने पर संपन्न होता है। प्राचीन काल में पाँच वर्ष की उम्र तक चूड़ा कर्म संस्कार होता था। ये मुंडन ब्राह्मणों, भाइयों, नाते-रिश्तेदारों को प्रसन्न करके संकल्प की अभिव्यक्ति पाई जाती है। कालिदास ने इसका उल्लेख ‘गोदानविधि’ के नाम से किया है।

**चूड़ो**

उदियापुर में एक अनोखी रीत

दांती का चुडला बापरया जी म्हां का राज

जड़ाऊ चूड़ा बापरया जी म्हां का राज।

चुडला पैरे रामचंदरजी सा री नार

चुडला पर सूरज ऊगियो जी म्हांका राज

बदजो रे खैरादी थारी बेल

जडाऊ चूड़ा थैं जड्याजी म्हांका राज।

उदियापुर में एक अनोखी रीत

पंचरंग्या पीळा बापर्या जी म्हांका राज

नौरंगी चूंदड़ बापरी जी म्हांका राज।

पीळा ओढ़े किसनचंदरजी सा री नार

चूंदड़ां ओढ़े मोहनलालसा री नार

चूंदड़ पे चांद पवासियो जी म्हांका राज।

बदजो रे रंगरेजी थारी बेल

पंचरंग्या पीळा थैं रंग्या जी म्हांका राज

नौरंगी चूंदड़ थैं रंगी जी म्हांका राज

उदियापुर में एक अनोखी रीत

नौ खंड् माळयां बापर्या जी म्हांका राज।

मेहला पोढ़े दसरथजी सा रा लाल

मेहलां पर सूरज ऊगियो जी म्हांका राज

बदजो रे सलावट थारी बेल

नौ खंड्या माळया थैं चुण्या जी म्हांका राज।।26

**चूड़ो**

चार चूड़ा आया सहर में

चूड़ो पेरे रामचंदरजी सा री नार

चूड़ा ऊपर चून्दड़ खिलरही

चूड़ो पैरे...........।

खिलरह्या जी बाईसा आपका बीर

नथड़ी मींला सांचा मोती खिल रह्या

खिल रह्या जी सासूजी आपका लाल

नथड़ी मींला सांचा मोती खिल रह्या

चार पीळा आया सैर में

पीळा ओढ़े सा किसनचंदजी सा आपकी नार

पीळा ऊपर सूरज खिल रह्या

चार मेहल बण्या है सैर में

महलां पोढ्या दसरथजीसा आपका लाल

महलां ऊपर सूरज तपरियो।

तपरियाजी बाई सा आपका बीर

नथड़ी मींला सांचा मोती खिल रह्या

तपरियाजी सासूजी आपका लाल

नथड़ी मींला सांचा मोती खिल रह्या ।।27

**\*जनेऊ या यज्ञोपवीत:-** जनेऊ यज्ञोपवीत का अपभ्रंश है। द्विजो द्वारा पहना जानेवाला उपवीत, जो बायें कंधे से ऊपर और दाहिनी भुजा के नीचे पहना जाता है। यज्ञोपवीत शिष्ट वर्ग का एक महत्वपूर्ण अवसर है। मुंडन और जनेऊ दोनों ही सामान्य संस्कार हैं। लोक परंपरा में जनेऊ या उपनपन का उत्सव पाँच दिन पहले ही आरंभ हो जाता है। इसमें विवाह जैसी धूमधाम होती है। विभिन्न जातियों में विभिन्न आयु व अवसर पर यज्ञोपवीत का विधान है। यज्ञोपवीत संस्कार से विद्याध्ययनारम्भ माना जाता है। इस अवसर पर गृहशांति, हवन आदि धार्मिक क्रियाओं के बाद लड़का गुरू के पास काशी जाने का रिवाज पूरा करता है। कुछ कदम भागने पर लोग उसे पकड़ लेते है –

बालो चाल्यो ए बहन बनारस जी,

बांका दादासा जाबा न देय, कुंवर बाला यहीं पढ़ो जो।

थांका पढ़वा ने देस्यां मेड़ी ओवरा जी,

थांका गुरूजी ने देस्यां चतर साथ,

कंवर बाला यहीं पढ़ोजी।

थांका गुरूजी ने देस्यां दक्षणा धोवती जी,

थांका साथीड़ा ने देस्यां पचरंग पाग।

कंवर बाला यहीं पढ़ोजी। 28

अर्थात ओ बहन। प्यारा लड़का बनारस पढ़ने चला। उसके दादाजी जाने नहीं देते, प्यारे कुँवर यहीं पढ़ोजी। तुम्हारे पढ़ने के लिए हम ‘मेडी और औवरे’ देंगे। तुम्हारे गुरूजी को अच्छा साथ देंगे, प्यारे कुँवरजी यहीं पढ़ो। तुम्हारे गुरूजी को दक्षिणा और धोती देंगे। तुम्हारे साथियों को पचरंगी पाग देंगे। प्यारे कुँवर यहीं पढ़ोजी।

गले जनेऊ लाडा पाट के री डोरी, भिक्षा पुरसे बहू सूरजजी री गोरी।

गले जनेऊ लाडा पाट के री डोरी, भिक्षा पुरसे रामजी री गोरी।

गले जनेऊ लाडा पाट के री डोरी, भिक्षा पुरसे ब्रह्माजी री गोरी।

गले जनेऊ लाडा पाट के री डोरी, भिक्षा पुरसे बहू महादेव जी री गौरी।

गले जनेऊ लाडा पाट के री डोरी, भिक्षा पुरसे बहू सुख दे गोरी।29

दादासा नानण बण बायो

दादयां वांकी कात्यो नानो सूत जी बना

काकासा नानण बण बाईयो

काक्यां वांकी कात्यो नानो सूत जी बना

पैरो म्हारा कंवर कन्हैया जनेऊ

कासी भणबा जाओ जी बना ।

कासी का बासी सदा अबिनासी

पंडित होय घर आवो जी बना

बीरा सा नानण बण बायो

भाभ्यां वांकी कात्यो नानो सूत जी बना ।।30

**विवाह गीत :-** विवाह गीत वर और कन्या दोनों पक्षों में समान रूप से गाये जाते है। वरपक्ष के गीतों में उल्लास और कन्यापक्ष के गीतों में करुणा होती है। विवाह के अवसर पर कई प्रकार के लोकाचार होते हैं। विवाह से पहले सगाई होती है, इसके पश्चात विवाह मुहूर्त निश्चित किया जाता है। सर्व प्रथम गणेश स्थापना की जाती है। राजस्थान में इस अवसर पर ‘विनायक’ गीत गाया जाता है –

**विनायक गीत**

पूरब दिशा में सूर्यदेवजी समरथ जी ।

हाँ जी देवा सहस किरण ले उगसी ।

मालिक तुम बिन और नहीं आसी ।

वेग पधारो गोरां का गणपतिजी ।

पश्चिम दिशा में चांद देवा समरथ जी,

हाँ जी देवा नौ लाख तारा लासी । वेग पधारो.

कैलाशपुरी में सदा शिवजी समरथ

हां जी देवा ढूंडियां नाड्या लारां लासी ।

वेग पधारो राणी गोरां का गणपतजी 31

पूर्व दिशा में सूर्य देवता सामर्थ्यवान हैं। हाँ जी यह देवता हजार किरणों से उदय होंगे। स्वामी तुम्हारे बिना दूसरे कोई नहीं आएँगे। गोरां के गणपतिजी जल्दी पधारो। पश्चिमी दिशा में चाँद देवता सामर्थ्यवान हैं। हाँ जी, देव के नौ लाख तारे के साथ लाएँगे। कैलाशपुरी में सदा शिव सामर्थ्यवान हैं,वे भूतप्रेत साथ लाएँगे । राणी गोरां के गणपतिजी, जल्दी पधारिए। ‘गजानंद’ का गीत विवाह के प्रारंभ में गणपति पूजन के समय गाया जाता है। कोटा में इंद्रगढ़ के गणपतिजी को इसमें संबोधित किया गया है। हाड़ौती प्रदेश का यह गीत देखिए –

चालो गजानंद जोसीड़ा रे चालां,

लागन्या बोलाई वेगा आवो

कोटा री गादी पर नोबत बाजे, इंदरगढ़ गाजे

झरण झरण झालर बाजे

ओ कोटारी गादी पर नोबत बाजे ।

चालो गजानंद कुँवारिया चालां

कलस्या मोलाई बेगा आवो गजानंद

चालो ओ गजानंद साजनिया रे चालां

लाडली मोलाई बेगा आवो गजानंद

कोटारी गादी पर नोबत बाजे ।32

विवाह के समय अनेक प्रकार के रीति रिवाज होते हैं। वर-वधु के तेल चढ़ाना, पीठी करना आदि। 'उबटन' को राजस्थान में 'पीठी' कहते हैं। आटे, हल्दी, तेल आदि के मिश्रण से पीठी बनाई जाती है। हस्ताधान के पश्चात् प्रतिदिन वर-वधू को नियमत उबटन करके स्नान कराया जाता है। उबटन कौ' मालिश करते समय स्त्रियाँ यह गीत गाती हैं।

मगरे रा मूँग मँगावो अे

म्हाँ री पीठी मगर चढावो अे

म्हाँ री तेलण आ भल आयी अे

तेलण तेल घड़ो भर लायी अे

म्हाँ री माल आ भल आयी अे

मालण चंपो-मरव्रो लायी अे

चँपळे री चोसठ कळियाँ अे

वनो पूरै वनी री रळियाँ अे

वनड़े के हाथ पतासा अे

वनो करै वनी सूँ तमासा अे

वनड़े रे हाथ में डोरी अे

वनड़े सूँ वनड़ी गोरी अे

वनड़े रे हाथ में कूँचीअे

वनड़े सूँ वनड़ी अूँचीअे33

मगरे ( मरूभूमि ) के मूंग मँगाओ और उसकी पिट्ठी बनाकर वर को चढ़ाओ । भली तेलिन आई है, तेल का घड़ा भर कर लाई है। भली मालिन आई है, चम्पा और मरवे के पुष्प लाई है। चम्पे की चौसठ कलियाँ (दल) होती हैं, वर बधू की कामनाएँ पूरी करता है।

वर के हाथ में बतासे हैं, दुलहा दुलही से+ तमाशा करता है । दुलह के हाथ में डोरी है, दुलहे से दुलही गोरी है । दुलहे के हाथ में ताली है, दुलहे से दुलही अच्छी है ।

पीछे के चरणों में दूलह से विनोद किया गया है। इसी प्रकार और चरण भी जोड़े जाते हैं । विनोद के सिवाय उनका कोई विशेष महत्त्व नहीं हैं।

उबटन का एक और गीत देखे –

गहूँए चिण रो ऊबटण, मांय चमेली रो तेल

अब लाडो बैट्यो ऊबटणे

आओ म्हारी दाद्यां निरख लो, आओ म्हारी मायां निरखल्यो

थां निरख्यां सुख होय, अब लाड़ो बैठ्यो ऊबटणे

तो कर लाड़ा ऊबटणो, थारा ऊबटणां में बास घणी

थारी दाद्यां संजौयो ऊबटणों, थारी माया संजोयो ऊबटणो

कोई तेल फुलेल चम्पेल घणी, चम्पा री कलियाँ सुगन्ध घणी

लाडा रा मन में खांत घणी34

गेहूँ और चने का उबटना है जिसमें चमेली का तेल। अब लाड़ा (प्यारा) उबटना करने बैठा। आओ मेरी दादियों। मुझे देख लो। आओ मेरी माताओं, मुझे देख लो, आपके देखने से ही सुख होगा, अब लाड़ा उबटना करने बैठा। अब लाड़ा उबटन चालू कर, तेरे उबटन में सुगंध बहुत है, तेरी दादियों ने उबटन बनाया, तेरी माताओं ने उबटन बनाया। तेल, इतर व चंपा की सुगंध बहुत है। चम्पे की कलियों की सुगंध बहुत है, लाडा के मन में प्यार बहुत है।

विवाह-संस्कार के पहले की रात को महँदी की रात कहते हैं। मेंहदी की रात को, वर-वधू को महँदी लगायी जाती है। उस समय के ये गीत हैं। हिन्दू स्त्रियाँ हर-एक त्यौहार पर मेंहदी लगाती हैं। महँदी स्त्रियों के लिये सुहाग का लक्षण है और इसका गहरा रंग दाम्पत्य-प्रेम का चिन्ह है।

महँदी वायी-वायी वाळूड़ा री रेत

पेम-रस महँदी राचणी

महँदी सींची-सींची जळ जमना रे नीर

पेम-रस महँदी राचणी

महँदी अूगी-अूगी पान-दो-पान

पेम-रस महँदी राचणी

महँदी अूभी सोहें गुल क्यारी रे वीच

पेम-रस महँदी राचणी

महँदी चूँटी-चूँटी नाजुकड़ी-सी नार

पेम-रस महँदी राचणी

महँदी सूखै-सूखै आँगणिये रे वीच

पेम-रस महँदी राचणी

महँदी पीसी-पीसी चाकली रे पाट

पेम-रस महँदी राचणी

महँदी छाणी-छाणी साळूड़े से कोर

पेम-रस महँदी राचणी

महँदी भीजै-भीजै रतन-कचोळे वीच

पेम-रस महँदी राचणी

महँदी माँडी-मांडी वडी अे जेठाणी बैठ

पेम-रस महँदी राचणी

महँदी निरखे म्हाँ री नणदळबाई रो वीर

पेम-रस महँदी राचणी

कुण माँड्या, ऐ सुवागण, था रा हाथ

पेम-रस .महँदी राचणी

राच्या राच्या, ऐ सुंदर, था रा हाथ

पेम-रस महँदी राचणी

थारो हाथ म्हाँ रे हिवड़े उपर राख

पेम-रस महँदी राचणी

थारी महँदी पर वारूँ पन्ना ये जवार

पेम-रस महँदी राचणी 35

प्रेम के रस से भरी मेंहदी खूब राचनेवाली (रंग लानेवाली ) है। मेंहदी बालूरेत में बोई गई, फिर यमुना के पवित्र जल से सींची गई, दो नन्हे-नन्हे पत्तों के रूप में मेंहदी अंकुरित हुई । क्रमशः बढ़ कर वह सुन्दर क्यारी के बीच में लहलहाने लगी । मेंहदी प्रेम की लाली खिलाती है। नाजुक नारियों ने मेंहदी को बीना और घर के आँगन में सुखाया । फिर चक्की के पाट में उसे पीसा, सुन्दर बारीक वस्त्र के छोर से छाना और रतन-कटोरे में भिगोया । प्रेम के रस को खिलाती है मेंहदी ।

भीग चुकने पर बड़ी जेठानी ने बड़े प्रेम और चतुराई के साथ मेरे हाथों पर मेंहदी चित्रित की । रंग खिल जाने पर ननद वाई के भाई ने प्रेम-पूर्वक मेरी मेंहदी को देखा और पूछा–किल सौभाग्यवती ने तेरे हाथों पर मेंहदी चित्रित की है ? हे सुन्दरी, तेरे हाथ खूब खिले हैं। तू अपने सुन्दर हाथ मेरे हृदय पर रख । बलि जाऊँ, मैं तेरी मेंहदी पर पन्ने और अनेक जवाहिरात न्यौछावर करता हूँ। इस गीत में मेंहदी बनाने की प्रक्रिया का क्रम-विकास बताया गया है।

जब बारात के निकलने का समय होता है तब दिन को सुबह उखड़ी (रोड़ी) पूजी जाती है। राजस्थान कहावत प्रसिद्ध है कि - ‘उखरड़ी में रतन जन्मे।’

निम्न लिखे गीत में स्त्रियाँ बधावे को पक्षी रूप होकर और सोने की चोंच के रूप में सुसराजी के द्वार का शुभ संदेश ले आने के लिए आमंत्रित करती हैं। आटी, बेलण और दही मथने का नेतरण आदि मांगलिक वस्तुएँ थाली में डालकर गीत गाती हुई उखड़ी के समीप जाती हैं और फिर उसे पूजती है

**उखरड़ी (रोड़ी) पूजने का गीत :**

सैंयाँ ए उखरड़ी बधावो म्हारे आवियो।

आयो म्हारे सुसराजी की पोल ए,

पंखेरु हैने सोना री डाँडी।

सूवारे दिवलो बले नै लोलाँ सिग चढे

मोतीड़ाँ री लागी लड़ा झूम।

सैयाँ ए उखड़ी बधावो म्हारे आवियो।36

शादी में बारात का अपना ही महत्त्व है,बन्ने के साथ साथ उसके परिवार वालों को भी इस घड़ी का बेसब्री से इंतज़ार रहता है| बारात के चढ़ते समय का गीत देखें –

केसरियो लूले-लूले पाछो जोवे,

जांणू म्हाराभाभोसा जान पधारे।

भाभोसा जाँनणलीरा रतन करावे।

केसरियो लूले-लूले पाछो जोवे।

जांणू म्हांरा वीरोसा जाँन पधारे।

वीरोसा जाँनणली रा रूप;

केसरियो पाछो जोवे ।।

केसरियो लूले-लूले पाछो जोवे,

जांणू म्हारा काकासा जाँन पधारे।

काकासा जाँनणली रा रूप ए,

केसरियो पाछो जोवे ।37

इस गीत में वींद (वर) बार-बार पीछे की ओर झुककर देखता है कि मेरे साथ कौन-कौन संबंधी चल रहे हैं। कोई पीछे तो नहीं रह गए हैं? वह अपनी बारात में अपने सगे संबंधियों और इष्ट मित्रों को ले जाने के लिए बार-बार याद करता है। गीत में मामा, बहनोई, फूफा आदि संबंधित व्यक्तियों के नाम ले-लेकर यह गीत गाया जाता है।

इस गीत में सेहरे का वर्णन है जो विवाह के समय वर के सिर पर बाँधा जाता है। इसे माली बना कर लाता है।

अूँची सी मेड़ी राव़टी, बै में माळी-को सोवे अे नचींत

म्हां रे रँग वनड़े रा सेव़रा

म्हारी मालण जाय जगावियो, माळी, तूँ क्यों सोवै अे नचींत

म्हाँ रे लाडल वनड़े रा सेव़रा

नगरी कुँवारा परणसी, म्हा रे नवल वने को व्याँव

चोखा सेवरड़ा गूँथ ल्याय

माळी को अुठियो छोयेलो बैं तो मोळी हैं लाँबी-सी खिजूर

म्हाँ रे रँगे वनडे रा सेव़रा

बै रे पंखो तो लाग्यो खिजूर को, और नाळ जे बोत सरूप

म्हाँ रे नवल वनडे रा सेव़रा

कागद लाग्या मुड़मुड़ा,और पाट अठारा टाँक

म्हाँ रे राज वनड़े रा सेव़रा

सोनू तो लाग्यो सोवणू, और रूपो अूजळदंत

म्हाँ रे रँग वनड़े र सेवरा

अुडती तो लागी चिड़कली, और गढ परबत का मोर

म्हाँ रे लाडल वनड़े रा सेवरा

मोती तो लाया वाटला, और लाल लगी लख च्यार

म्हाँ रे नव़ळ वनडे रा सेव़रा ।

सिर भर मालण नीसरी, हर भर हटवाडयाँ रे माँय

म्हाँ रे रँग वनड़े रा सेव़रा

लोग-महाजन बुझियो रे, तू मालण कित जाय

म्हाँ रे लाडल वनड़े रा सेव़रा

कंवर अीसर का ही सेवरा, म्हे तो घर बिरमादतजी रे जाय

म्हाँ रे राज वनड़े रा सेव़रा

पूत सपूती आगेड़ी बहू साव़ँत दे लियो है मोलाय

म्हाँ रे नवल वनड़े रा सेव़रा

लाय धस्या सामी साळ में, कोइ च्यार देखो रखव़ाळ

म्हाँ रे लाडल वनड़े रा सेव़रा

दादी तो, भूवा, माव़सी, तेरी जणी अे सहोदरा माय

म्हाँ रे रँग वनड़े रा संव़रा 38

ऊँची सी मेड़ी पर माली निश्चित सोया है। मालिन ने जाकर उसे जगाया और कहा–माली, तूँ निश्चित कैसे सोया है ? नगरी में क्वाँरों का विवाह होगा । लाड़ले दूल्हे को विवाह है। उसके लिए अच्छे-अच्छे सेहरे गूँथ ला । तब माली उठा और उसने खजूर की एक लंबी सी डाल तोड़ ली। और उसका सेहरा बनाया । सेहरे में खजूर का पंखा लगा है। उसकी डंडी बहुत सुन्दर है। उसमें मुरमुरे कागज लगे हैं। अठारह टंक भर रेशमी कपड़ा लगा है। सुहावना सोना लगा है। दाँत सा उज्ज्वल रूपा लगा है। उड़ती हुई चिड़िया और ऊँचे पहाड़ों के मोर लगे हैं। वाटले मोती और चार लाख लाले लगी हैं। सेहरों को छबड़ी में भरकर और सिर पर रखकर मालिन बाजार में निकली। बाजार में महाजन लोगों ने पूछा कि हे मालिन, तु सेहरे लेकर कहाँ जा रही है ? मालिन ने उत्तर दिया कि ये कुंवर ईश्वर का के सेहरे हैं, इनको लेकर मैं ब्रह्माजी के घर जा रही हूँ। ब्रह्माजी के घर पर उनकी सपूती नार सावित्री ने आगे आकर सेहरों का मोल किया । फिर उनको बड़ी साल में लाकर रख दिया। और दादी, फूफी, मौसी और सोदरा बहन चारों उनकी रखवाली करने लगीं।

बरात के चढ़ते समय दूल्हा घोड़ी पर चढ़ता है। ये गीत उसी समय का है।

घोड़ी बांधो अगर रे रूँख, चँदण रे रूँख

मोड़ दरवाजे चंपे री दोय कळियाँ बे

घोड़ी चढ़सी वसदेवजी रो नंद, पून्यों रो चंद

हीराँ रो हार, मथराजी रो वासी बे

धन-धन हो गोरा श्रीकृष्ण केसरिया कँवर

थाँ रे सेव़रो बँधांवाँ बे

ठाकुर आया, ठाकुर केळ करै, किललोळ करै

थाँ रे बाबेजी री डोढी बे

धन-धन ए बहू वसदेव़ री

केसरिया कँव़र जिण श्रीकृष्ण जायो बे39

घोड़ी को अगर और चंदन के पेड़ों से बाँधो । मुख्य द्वार पर चंपे को दो कलियाँ हैं । इस घोड़ी पर पूनों का चाँद, हीरों का हार, मथुरा का वासी, वसुदेवजी का लाड़ला पुत्र कन्हैया चढ़ेगा । हे केशरिया कुमार श्रीकृष्ण, तुम धन्य-धन्य हो । तुम्हारे सिर सेहराबंधावेगी । ठाकुर श्रीकृष्ण अपने पिता की डेवढ़ी पर आये और वहाँ केलि तथा किलोले कर रहे हैं। हे वसुदेव की वधू देवकी, तुम्हें धन्य है जिसने केशरिया कुमार श्रीकृष्ण को जन्म दिया ।

बरात जिस समय दुल्हन के द्वार पर जाती है तो वहाँ पर दूल्हा तलवार व वृक्ष की टहनी से तारण मारता है। उस समय गीतों में स्त्रियाँ 'कांमण' द्वारा वर को वश में करती है।कांमण का अर्थजादू-टोना या वशीकरण है। जिसके द्वारा वर को जीवन भर के लिए अपने वश में करना चाहती है। कहीं पर कपासिया आदि वस्तुएँ भी फेंकी जाती हैं। वर के मित्र ढाल द्वारा रोकने का प्रयत्न करते हैं, ताकि वर वशीकरण के अधीन न हो सके। राजस्थान में ये गीत ‘कामण’ नाम से प्रसिद्ध है –

तोरण में आया राईवर, थर थर कांप्या राज,

बूझा सिरदार बनी ने, कांमण कूण करया छै राज।

म्हें नहीं जाणां, म्हांरा खाती कामणगारा राज,

खाती को नेग चुकास्यां, कामण ढीला छोड़ो राज।

छोड्या ना छूटै, राईवर, करड़ा घुल्या छै राज। 40

राईवर, तोरण मारने आए, व थर थर कांपने लगे। सरदार बनी को पूछते हैं कि हे प्रिया । कामण किसने किया? मुझे नहीं मालूम, मेरे खाती (बढ़ई) ने कांमण किया है राज। खाती का नेग (दस्तूर) चुकाएँगे, कामण को ढीला छोड़ो, ए राज। छोड़ने से नहीं छूटे, राईवर यह तो ज्यादा घुल गया है।

**कंवर कलेवे का गीत**

देवाइयाँ थाँरी अलियाँ-गलियाँ परी रे बोराव ए,म्हारो कंवर-कलेवे आवियो।

कंवरियो है सुसराजी रो जोध (ए) झमके नै तोरण बाँदियो,

तोरणियो है ताराँ छाई रात, झमके नै तोरण बांदियो।।41

जानणियाँ बींद(दूल्हा) के ससुर (कन्या के पिता) से कहती हैं कि आपके मोहल्ले को साफ़ करवा दीजिए, प्यारा बना भोजन करने के पश्चात् तोरण बाधने के हेतु यहाँ आएगा । विवाह होने के बाद बारात वापस रवाना होकर अपने घर वधू सहित आ जाती है तब दूसरे दिन देवी-देवताओं की जाते (मान्यता) देते हैं, फिर कैंकण-डोरडा खोलते हैं और परिवार की बढ़ी बूढ़ी स्त्रियों को वर-वधू नमस्कार करने संबंधियों के घर जाते हैं। दादी या माता बींदणी को ‘दूधो नहाओ और पूतो फलो' का आशीष देती हैं|

राजस्थान में सात फेरों की जगह चार फेरे भी होते हैं।

पैलो फेरो ले म्हारी लाडो बाई दादोसा ने लाडली

दूजो फेरो ले म्हारी लाडो बाई बाबोसा ने लाडली

अगलो फेरो ले म्हारी लाडो बाई वीरोसा ने लाडली

चोथो पेरो लियो म्हारी लाडो होइए पराई

हलवा-हलवां चाल म्हारी लाडो हंसेला सहेलियाँ। 42

पहला फेरा ले ओ मेरी लाडो बाई तू दादोसा की लाडली है। दूसरा फेराले ओ मेरी लाडी बाई तू बाबोसा की लाडली है। अगला फेराले ओ मेरी लाडी बाई तू वीरोसा (भाईसाहब) की लाडली है। मेरी लाडो ने चौथा फेरा लिया। अब वह पराई हो गई है। धीरे-धीरे चलो मेरी लाडो, वरना सहेलियाँ हँसेगीं।

राइवर - वर-वधुओं का प्रिय गीत है। सप्तपदी के समय फेरे फिरते, और कुल देवताओं की पूजा करने जाते समय गाया जाता है।

ऊभा तो रीज्यो राइवर चम्पलारी छाया,

हेला पाडूतो मारा काकाजी साँभले।

थरमो खेंचू तो चमके ओ नादान बनजी,

चमके हो देशोत बनजी।

ऊभा तो रीज्यो राइवर चम्पला री छाया,

हेला पाडूतो मारा बाबोजी साँभले।

थरमो खेंचू तो चमके ओ नादान बनजी,

चमके हो देशोत बनजी ॥43

वधू का मुख घूंघट में स्वेदयुक्त मुरझा-सा गया है। इधर इसका राइवर उसे वस्त्र से खींचता हुआ आगे बढ़ रहा है। स्त्रियाँ भी दस कदम पीछे ही रह गई हैं। पीछे से वर के दुशाला को खींचकर भी लज्जा संकोच से उसे रोककर कुछ भी नहीं कह सकती, पर घूंघट के पट में मानों इस गीत के भाव को वह सुना ही दे रही हो और स्त्रीयाँ दुलहिन के भाव को इस राइवर के गीत में ही गाकर सुना देती हैं और दुल्हन भी कभी चुपके से पद पंक्ति को गुनगुना देती है। पर राइवर बराबर शरमा रहे हैं और सब के सामने, साथ-साथ चलने में। इसे राइवर की शालीनता ही समझें।

**सेवरा**

सेवरे रंग लागो छेजी बनड़ा, झाऊ थांरा सेवरा री लड लूंबा,

झूबा बना लूंबा झूवारा, सेवरे रंग लागो जी बनड़ा ।।

इस लोकगीत में दुल्हन की ओर से पहले प्रसंग छेड़ा जा रहा है और फिर दूल्हे की ओर से। पहले दूल्हे के सेवरे (सेहरा) की शोभा को लेकर गीत का आरंभ किया गया है। दुल्हन (बनी) कहती है बनाजी! आपके सेवरे का रंग मुझे अच्छा लग रहा है। यह लड़ लूँबो और झूँबों से सुसज्जित झगमग झगमग करता हुआ अत्यंत शोभा दे रहा है।

तब बनाजी (दूल्हे) की बात सुनिए - कितने बेचैन हैं ये –

गीत : लाड़ी जी थांरे लेने भेजूं भूयॊ हसती

मकनां हस्ती रा बैठा आवो वरा थे बनड़ी।

लाड़ी जी साहबा। मेरी बनड़ी जी। आपको लेने के लिए भूरे रंग का मकना हत्थी बेजता हूँ उस पर बैठ पधारिए।

आज बनाजी थांरा भूर्या हसती सँड रूलावे।

पूंज रूलावे रा बैठसी डरूँ छूंजी बनड़ा।

बनाजी! आज आपका भूरा श्रेष्ठ हाथी सूँड हिलाता है, पूंछ हिलाता है (यद्यपि प्रसन्नता प्रकट करता है) पर मुझे उस पर बैठते डर लगता है।

आज लाड़ी जी थारे लेने भेजू प्रेम पछेवड़ा।

प्रेम पछेवड़ा ओञया आवो वरा छेजी बनड़ी।

लाड़ जी। मेरी बनड़ी जी। मैं आज ही आपके लिए प्रेम पछेवड़ा - प्रेमावरण वस्त्र भेजने वाला हूँ उसे ओढ़ कर पधारें, यह तो प्रेम पछेवड़ा है मकना की सूंड-पूंछ से भयभीत होने की कोई बात नहीं और यदि उससे सचमुच डरती ही हों तो इस प्रेम पछेवड़े को ओढे, रथ में पधारिए।

आज बनी जी थारे लेने भेजू सायण बायण रा

सायण बायण रा बेठा आवो वरा छे जी बनड़ी।44

बनी जी। आज ही आपको आना पड़ेगा – यदि मकना से डरती हो तो मैं सायण-बायण(रथ या सेजगाड़ी) भेज देता हूँ। प्रेम पछेवड़े को ओढ़ कर सेज गाड़ी में ही सेज करती हुई सहज ही पधारें।

यह गीत विवाह के मांगलिक बधावों में गाया जाता है। इसमें गृहस्थ के आदर्श सुख, समृद्धि और कल्याण की कल्पना की गई है। विवाह के बाद वर-वधू के घर आने पर इस गीत से उनका स्वागत किया जाता है

म्हारे आंगण आम, पिछोकड़ मरवो।।

यो घर सदा ए सुहामणो।

तूँ तो चाल लिछमी जैं घर चालाँ।

जै घर रळी ए वधामणा।

जठे वडाँ ने वड़ाई देसी।

दूणो सो मान सवासण्याँ।

जठे कुळ बहुवाँ ने आदर देसी ।

सासू नणद गुण मानसी।

म्हारे गाय गवाड़े भैंस वाड़े।

सोवण थाम विलोवणो।

विलोवणो म्हा घ्हर धमकै

आँगण झमकै कुलबहू।

संसार को सुख आज देख्यो।

म्हारो पूत परण घर आवियो।

म्हारे पूत कारण बहू ए प्यारी।

पूत कुळ को दीवलो।

म्हारी सास सपूती से रे सरभर रहस्याँ।

जीभ के गुण आगलाँ।

म्हारी देराण्याँजेठाण्याँ बरोबर रहस्याँ।

काम के गुण आगलाँ।

म्हारे सुगणे सायब सैं म्हे मन चाया रहस्याँ।

कूख के गुण आगलाँ।

म्हारी सही ए सहेल्या बरोबरा रहस्याँ।

रूप के गुण आगलाँ।

इसड़ो बधावो म्हारे पीहर भेजाँ

भाभी मेडतणी रे जायो गीगलो

चितरे से आँगण म्हारी नणदल ऊभी।

द्यौ म्हारी बाईजी असीसड़ी।

वीरा, फूलज्यो रे फलज्यो आम की डाली ज्यू,

वधज्यो वागाँ माँयली दूब ज्यूँ ।

सात ए भाभी पूत जणज्यो।

एक जणज्यो डीकरी।

थारी धीमड़ ने परदेस दीज्यो।

ज्यूं चित आवे रुड़ी नणदली।45

मेरे आँगन में आम और पिछवाड़े में मरवे के वृक्ष खड़े हैं, अतएव मेरा घर सुहावना लगता है। हे लक्ष्मी,(नववधू को लक्ष्य करके) चल, उस घर को चल जिस घर में वैवाहिक बधाइयाँ और मंगल हो रहे हैं। वहाँ बड़ों को बडाई देना और बहन-बेटियों का दुगुना मान बढ़ाना। उस घरमें कुलवधू का आदर होता है और वह सास ननद का गुण गाती है-सम्मान करती है। सास कहती है - मेरे घर में गाय और भैंसो से बाड़ा भरा है और सोने के खंभे से मथानी बँधी हैं। मेरी मथानी गंभीर ध्वनि से धमकती है और मेरी बहू आँगन में काम करती हुई झमकती है। आज मैंने संसार का पूर्ण सुख देखा है कि मेरा पुत्र ब्याह कर घर आया है। मेरे पूत से भी मेरी पुत्रवधु अधिक प्यारी है और पुत्र तो कुल का दीपक है।

नववधू कहती है - अपनी सुपुत्रवती सास से मिलकर रहूँगी और अपने जीभ (की मिठास) के गुण से प्यारी बनी रहूँगी। कामकाज के गुणों में मैं अपनी देवरानी-जेठानी के बराबर रहूँगी। (पुत्रवती होकर) कोख के गुणों से मैं अपने सुगुणी पति के चित्त में बसूँगी और रूप सौंदर्य के गुण से मैं अपने सहेलियों के बराबर रहूँगी।

नववधु अपने पति से कहती है - स्वामी, इस बधाई को मैं व्यर्थ ही न जाने दूंगी। यह सुअवसर मुझे बहुत समय बाद मिला है। मैं इस 'बधावे' को (भावनाओं को) अपने पीहर भेजूँगी, जहाँ मेरी भावज के पुत्र जन्मा है। ननद बाई कहती है - है भाई, आम की डाली की तरह फूलो फलो और समृद्धि पाओ जिस प्रकार दूब बाग में बढ़ती है। और हे भावज तू सात पुत्रों की माँ बने और एक पुत्री भी जने। उस पुत्री को परदेश में ब्याहना ताकि परदेस-बासिन उस प्रिय पुत्री के मिस से मैं, तेरी ननद, तुझे याद आती रहूँ।

विवाह के अवसर पर माहेरा भरने की प्रथा होती है। पुत्र या पुत्री के विवाह के अवसर पर बहिन अपने भाई के पास पीहर जाती है व उससे याचना करती है कि अमुक-अमुक व्यक्तियों को उनकी मनपसंद वस्तुएँ देना। भाई निश्चित समय पर अपने पूरे परिवार के साथ 'माहेरा’ लेकर अपनी बहन की ससुराल जाता है। भाई के पहुँचने से पूर्व बहन को उसकी सास, ननद, देवरानी सभी ताना मारती हैं। भाई के पहुँचने पर उसके आँसू रोके नहीं रुकते। वह भाई पर गर्व करती हुई कहती है-

वीरा रे म्हारे चोवटे ने पेरायो, चोरासी सरायो

मायरो पेराओ पहली म्हारे सेरिया में,

पाड़ोसी सरायो मायरो।

वीरा ओ पहलां म्हारे सासूजी ने पेराओ,

सुसराजो सरायो मायरो।

वीरा ओ पहली म्हारा जेठाणी ने पेराओ,

जेठसा सरायो मायरो।

वीरा ओ पहली म्हारी दौराणीने पहराओ,

देवरसा सरायो मायरो।

वीरा ओ पहली म्हारी नणदल ने पहराओ,

नणदोई सा सरायो मायरो।

वीरा ओ पहली म्हारी बहिनां ने पेराओ,

बेनोईसा सरायो मायरो।

बाई मल म्हारी बेन बांयड़ली पसार।

बाई गरबी, गरबी, के थारे पूतड़ला रो राज?

के थारे धन को गरबो? वीरा ओ पुत्र परमेश्वर को साल,

धन को कई गरबो?

बाई ए मल म्हारी बांयड़ली पसार,

जामणरो जायो अबे मिलियो।46

वीरा ओ। मायरो पहले चौहट्टे के लोगों को पहनाओ। सारी चौरासी के लोगों ने इसकी सराहना की है। मायरो पहले मेरे पड़ोसी को पहनाओ। पड़ोसी ने मायरे की सराहना की है। वीरा ओ। पहले मेरी सास को पहनाओ। सुसराजी ने मायरे की सराहना की है। वीरा ओ। मेरी जेठाणी जी को पहनाओ। जेठजी ने सराहना की है। पहले मेरी देवराणी को पहनाओ। देवरजी ने मायरे की सराहना की है। पहले मेरी ननद को पहनाओ। ननदोई जी ने मायरे की सराहना की है। वीरा ओ। अब अपनी बहन को पहनाओं। बहनोई जी ने मायरे की सराहना की है। बाई तुम बाँह फैला कर मिलो। बाई तुमको गर्व कितना है? क्या तेरे पुत्रों का राज है? अथवा तुझे धन का घमंड है? भाई ओ। पुत्र तो परमेश्वर का धन है और धन का तो क्या गर्व किया जाए? बाँहे पसार कर मिलो। माँ जाया भाई अब मिला है।

कन्याको जब विदा किया जाता है तब ओलू के गीत गाए जाते हैं। इन गीतों के भाव इतने करुण होत हैं कि सुनने वाले की भी आँखें छलछला आती हैं।

म्हे थाँने पूछां म्हारी धीवड़ी।

म्हे थाँने पूछां म्हारी बालकी।

इतरो बावैजी रो लाड छोड़ र बाई सिध चाल्या?

म्हे रमती बाबोसा री पोल

आयो सगेजी रौ सूवटौ गायड़मल ले चाल्यौ

म्हे थांने पूछाँ म्हारी धीवड़ी।

इतरौ माऊजी रौ लाड़ छोड़ र बाई सिध चाल्या?47

मैं पूछती हूँ मेरी लड़की । मैं तुझे पूछती हूँ मेरी बालिका । इतना बाबाजी का लाड़ प्यार छोड़कर कहाँ चली? मैं बाबोसा की पोल में खेल रही थी। इतने में सगोजी (रिश्तेदार) का सुआ आया और मुझे गायड़मल ले चला। मैं तुझे पूछती हूँ मेरी बेटी। इतना माउजी का लाड़ छोड़ कर कहाँ चली?

लाड़ प्यार से पाली हुई कन्या के घर छोड़कर जाने से घर सूना हो जाता है। उसकी सहेलियाँ उदास हो जाती हैं। कहीं पर गीतों में कन्या की उपमा कोयल से दी जाती है जो उपवन छोड़कर जा रही है

वनखंड री ए कोयल, वनखंड छोड़ कठै चाली?

थारी आले-दिवाले गुड़ियाँ धरी?

वनखंड री ए कोयल, वनखंड छोड़ कठे चाली?

थारी साथ सहेल्याँ उगमणी

वनखंड.... चाली?

थारी माऊजी थारे बिन उगमणा

थारी छोटी बैनड रोवे अकेलड़ी

वनखंड..... चाली?

थारौ वीरो सा फिरे छै उदास

विलखत थारी भावजणी।

वनखंड री ए..... चाली?48

उपवन की ए कोयल, उपवन छोड़कर कहाँ चली? आलों में तेरी गुड़िया पड़ी है। उपवन की ए कोयल... चली? तेरी साथ की सहेलियाँ उदास हैं। उपवन की.... चली? तेरे माऊजी तेरे बिना उदास है, छोटी बहन अकेली रो रही है। उपवन की .... चली? तेरे भाई उदास घूम रहे हैं। तेरी भौजाई बिलख-बिलख कर रो रही है। उपवन की कोयल, उपवन छोड़कर कहाँ चली ?

**माहेरा रो गीत**

चढ़ देखूँ चाँदनी पेजाय बीरोजी दीखे आवता।

छापर झलकियां छे सेल, घाटी में नगारो गुंजियो।

वीराजी घोड़ी रे गले घूघर माल, पगांरा नेवल पाजणा।

निरखे सात सहलियाँ रो साथ, वीरोजी दीखे आवता।

कंचण कलस वंदाय वीराजी री करां ला आरती।

आया मारा जामण जाया वीर, चूंदड़ लाया रेसमी।

मापुँ तो हाथ पचास, तोलूं तो तोला तासरी।

मेलुं तो छाब भराय, ओडुं तो हीरा जड़ पड़े।

ओडूं मारा लाला रे विहाव, पल्ला मेलुं रलकता।

देखे मारा देवर जेठ जीणो काढूं घूंघटो।49

इस गीत में बहन कहती है कि मैं चाँदनी पर चढ़ कर देख लूँ कि मेरे भाई आते हुए दिखते हैं या नहीं। चढ़ कर देखते ही उसने खुले जंगल के मार्ग में दमकते हुए भाले को देखा और घाटियों में नगारे की ध्वनि प्रतिध्वनित होने लगी। भाई की घोड़ी के गले में घूघरे और पैरों में नेवरिये बज रही हैं। वह बहन अपनी सात सहेलियों के समूह में भाई को आते हुए देखकर उनसे कहने लगी कि मेरे भाई की सुवर्ण कलश से वंदना करुंगी-कलश बँधाऊँगी। यह मेरी माता से जन्म लेने वाला सहोदर है। मेरे ओढ़ने के लिए रेशम की साड़ी लेकर आया है जिसको नापूं तो पचास हाथ और तोलूं तो तीस तोले भर की होती है, यदि इसे रख देतू हूँ तो टोकरी भर जाती है और यदि ओढ़ती हूँ तो इसमें हीरे लगे हुए हैं, जो गिर पड़ते हैं, किंतु इसको तो मैं अपने पुत्र के विवाह में अवश्य ओढूँगी और पल्ले को खुले रखकर घसीटते हुए रखूँगी। जिस समय मेरे देवर-जेठ देखेंगे तो मैं उनका झीना झीना चूँघट निकालूंगी।

**देवी – देवताओं के गीत :** लोकजीवन गीतों से परिपूर्ण है। निद्रा से जागते ही गीतों की रसधारा किसी न किसी रूप में प्रवाहित होने लगती है। चाहे ये गीत जागरण के हों, अथवा श्रम के। गाँवों में सबेरे-सबेरे पराती गीतों में देवी-देवताओं को जगाने का या उनकी प्रार्थना करने का संदेश होता है। राजस्थान में देवी-देवता के गीतों की श्रेणी में – आरती, ठाकुरजी, महादेवजी, गणपति, विनायक, माताजी, हनुमानजी, भैरूंजी, सूरजजी,सालग-रामजी, बापाँजी, मावडियाँजी, भोमियोजी, लखपत, सतीमाता, शीतलामाता, पितर, पिताराणी, सेडलमाता आदि का समावेश होता है –

अँबर जाग्या देवी-देवता

धरती जाग्यो वासग नाग

झालर तो वाजी राजा राम की

मंडप में काळी माता जाग्या

पुरी में जगनाथ बाबो जाग्या

बँगले में हणमान बाबो जाग्या

परींडे में पितर देवता जाग्या

मिंदर में सती माता जाग्या

मठ में भैरूँ बाबो जाग्या

पहाड़ाँ में बदरीनाथ जाग्या

परबत में मालकेत जाग्या

जाँके पीठ बसै सकराय

झालर तो बाजी राजा राम की

अुठो, म्हारा राजन, दान द्यो

थारे हूअी छै धरम की रात

झालर बाजी राजा राम की

थारे बाहर गावै कापड़ी

थारे भीतर गावैं गीत

झालर बाजी राजा राम की

कापड़ियाँ ने कापड़ा

गीतव़ाळ्याँ ने चूनड़ ओढाय

झालर बाजी राजा राम की50

आकाश में देवी-देवता जागे। धरती में वासुकि नाग जागा। संसार के राजा भगवान की आरती होने लगी जिसकी झालर बज रही है।

अपने मण्डप में काली माता जागीं। जगन्नाथपुरी में जगन्नाथ बाबा जागे। बंगले में हनुमान बाबा जागे। पानी-घर में पितर-देवता जागे। मन्दिर में सती माता जागीं। मठ में भैरव बाबा जागे। पहाड़ों में बदरीनाथ जागे। पर्वत-बासी मालकेत भी अपने पर्वत में जाग उठे जिनके पीठ पीछे सकराय माता बसती हैं।

गानेवालियाँ घर के मालिक से कहती हैं – हे राजन्, सब देवी-देवता अपने अपने स्थानों में जाग उठे हैं और भगवान की आरती होने लगी है। तुम भी उठो और दान दो क्योंकि तुम्हारे यहाँ मंगल-रात्रि हुई है। तुम्हारे घर के बाहर, द्वार पर, याचक गुण-गान कर रहे हैं, भीतर हम गीतेरिनें (गीत गानेवालियाँ) गीत गा रही हैं। याचकों को वस्त्रों का दान दो और गीतेरिनों को चुनड़ी उढाओ।

विवाह आदि मंगल-उत्सवों पर स्त्रियाँ रात भर जाग कर गीत गाती हैं। इस जागरण को ‘राती-जागो’ कहते हैं। यह गीत भी राती जागे का है। प्रभात के समय जब जागने की बेला होती है तब यह गाया जाता है।

**बालाजी**

कूण चिणायो, ओ बालाजी, थांरो देवरो जी?

कूण दिरायी गज-नीम ?

बाबा बजरंगजी रो बंगलो हद वण्यो

राजाजी चिणायो म्हारो देवरो

सेवगाँ दिरायी गज-नीम

बाबा बजरंगजी रो बंगलो हद वण्यो

जातण आवै थारे कुळवहू

गोद झड़ूला जी पूत

बाबा बजरंगजी रो बंगलो हद वण्यो

जाती तो आवै थारे दूर का

साँवलिया मोट्यार

बाबा बजरंगजी रो बंगलो हद वण्यो

चढै-चढ़ावै थारे चूरमो

रोक रुपअिया री भेंट

बाबा बजरंगजी रो बंगलो हद वण्यो

लाल लँगोटो तिलक सिँदूर को

बेठा बजरंग आसण ढाळ

बाबा बजरंगजी रो बंगलो हद वण्यो

बाग विधूँस्या, लंका दळमळी

सारया राजा रामचंद्र का काम

बाबा बजरंगजी रो बंगलो हद वण्यो

धन माता अँजनी की कूख

अुण जायो हणवँत पूत

बाबा बजरंगजी रो बंगलो हद वण्यो51

बाबा बजरंगी का बंगला बहुत सुंदर है। बालाजी के इस मंदिर को किसने बनवाया और किसने इसकी नींव भरवायी ? राजाजी ने बालाजी का यह मंदिर बनवाया और भक्तों ने उसकी नींव भरवायी ।

कुलवधुऍ गोद में पुत्रों को लिये हुए झडूले की जात देने को आती हैं। अनेकों पुरुष भी दूर-दूर से जात देने के लिए आते हैं। वे लोग चूरमा और नकद रुपयों की भेँट चढ़ाते हैं।

बाबा बजरंगजी की मूर्ति कितनी भव्य है। कमर में लाल लंगोटा और माथे पर सिंदूर का तिलक है। बाबा बजरंग आसन लगा कर बैठे हैं। अपने ब्रह्मचर्य के प्रताप से बजरंगजी ने रावण की अशोक-वाटिका को विध्वस्त कर डाला और राजा रामचंद्र के काम सिद्ध किये। माता अंजनी की कोख धन्य है जिसने हनुमान जैसे पराक्रमी पुत्र को जन्म दिया (हे बाबा बजरंग हमारी कोख का पुत्र भी ऐसा ही वीर, पराक्रमी और ब्रह्मचर्य के बलवाला हो।)

**भैरूँजी**

भैरूँजी, ऊँचे से धोरे थारो देवरो

भैरूँजी, धजा अे फरुकै असमान

सेवगां की, ओ बाबा, भली करो

भैरूँजी, चरच्या जी लाल सिंदूर सूँ

धूप रही गरणाय

सेवगां की, ओ बाबा, भली करो

सोने को छतर, बाबा छावियो

चाँदी का वण्या अे किँवाड

सेवगां की, ओ बाबा, भली करो

चढै नै चढावै थारे चूरमो

चोटीव़ाळा नारेळ

सेवगां की, ओ बाबा, भली करो

नार ज आवै, बाबा, आतणी

साँवळिया मोट्यार

सेवगां की, ओ बाबा, भली करो

नार्या ने तूठो, बाबा, डावड़ा

अन-धन साँवळिया मोट्यार

सेवगां की, ओ बाबा, भली करो52

हे भैरव बाबा, अपने सेवकों का कल्याण करो। एक ऊँचे-से टीबे पर तुम्हारा देहरा है जिस पर आकाश को छूती हुई ध्वजा फहरा रही है। चाँदी के उसके किंवाड़ हैं। तुम्हारी मूर्ति पर सोने का छत्र चढ़ा हुआ है। वह लाल सिंदूर से चर्चित है। धूप की सुगंधि चारों ओर फ़ैल रही है। चूरमा और चोटीवाले नारियेल तुम्हारी भेँट चढ़ते हैं। अनेकों स्त्री-पुरुष जात देने को आते है। हे बाबा, प्रसन्न होकर स्त्रियों को पुत्र दो और पुरुषों को अन्न तथा धन।

**जल-देवता**

हरिया वाँसाँ री छावड़ी रे माँय चँपेली रो फूल

कै तूँ बामण-बाणियाँ री, कै विणजारे री धीय ?

ना हूँ बामण-बाणियाँ री अे, ना विणजारे री धीय

हूँ तो सकळ जळ-देवता अे, पांगळियाँ पग देय

पांगळियाँ, पग देय, भवानी, आद-भवानी, सकळ भवानी

च्यारूँ खूँट में च्यारूँ देस में वखाणी

सिँवरूँ, अे आद-भवानी

हरिया वाँसाँ री छावड़ी रे माँय गुलाबी रो फूल

कै तूँ बामण वाणियाँ री अे, कै विणजारे री धीय ?

ना हूँ बामण वाणियाँ री अे, ना विणजारे री धीय

हूँ तो सकळ जळ-देवता अे, बाँझड़ियाँ पुत्र देय

बाँझड़ियाँ पुत्र देय, भवानी, आद-भवानी, सकळ भवानी

च्यारूँ देस में च्यारूँ खूँट में वखाणी

सिँवरूँ, अे आद-भवानी

हरिया वाँसाँ री छावड़ी रे माँय जुही केरो फूल

कै तूँ बामण वाणियाँ री अे, कै विणजारे री धीय ?

ना हूँ बामण वाणियाँ री अे, ना विणजारे री धीय

हूँ तो सकळ जळ-देवता अे, निरधणियाँ धन देय

निरधणियाँ धन देय, भवानी, आद-भवानी, सकळ भवानी

च्यारूँ देस में च्यारूँ खूँट में वखाणी

सिँवरूँ, अे आद-भवानी

हरिया वाँसाँ री छावड़ी रे माँय कँवळ रो फूल

कै तूँ बामण वाणियाँ री अे, कै विणजारे री धीय ?

ना हूँ बामण वाणियाँ री अे, ना विणजारे री धीय

हूँ तो सकळ जळ-देवता अे,आँधळियाँ आँख्याँ देय

आँधळियाँ आँख्याँ देय, भवानी, आद-भवानी, सकळ भवानी

च्यारूँ देस में च्यारूँ खूँट में वखाणी

सिँवरूँ, अे आद-भवानी53

हरे बाँसों की छबड़ी में चमेली, गुलाब, जुही और कमल के फूल हैं। क्या तू किसी ब्राह्मण-बनिये की लड़की है या किसी बनजारे की ?

नहीं, मैं न तो किसी ब्राह्मण-बनिये की बालिका हूँ और न किसी बनजारे की । मैं तो सकल जल-देवता हूँ, और लूलों को पैर, बाँझों को पुत्र, निर्धनों को धन और अंधों को आँखे देती हूँ।

हे भवानी, हे आदि भवानी, हे सकल भवानी, तुम लूलों को पैर, बाँझों को पुत्र, निर्धनों को धन और अंधों को आँखें दो। चारों दिशाओं और चारों देशों में तुम्हारा बखान हो रहा है। मैं तुम्हें स्मरण करता हूँ।

**रामदेवजी**

श्री रामदेवजी पीर भी कहलाते हैं तथा बाबा भी । हिन्दू-मुसलमान दोनों इन्हें समान रूप से पूजते हैं। इनका अवतरण व जीवन हिन्दुओं तथा मुसलमानों की आध्यात्मिक स्तर पर अभेदता का दृष्टान्त है। राजस्थान के साथ-साथ गुजरात में भी इनका महिमागान देखने को मिलता है –

हैलो म्हारो सांमलो (रामदेव जी)

हैलो म्हारो सांमलो रुणीचा रा नाथ

हुकुम देवो तो धणीरे आऊंला दरबार

म्हारो हेलो सुणो जे रामापीर

जगे-जंगो झाडियाँ मीठा बोले मोर

तीन तो जातरा जात्री, चौथो है चोर

विक्रमी घाटी रामा डूगर बोले दादर मोर

मार नाख्यो वाणियाँ ने, धन न लेगा चोर

ऊबी रे सेठानी करे रे पुकार,

कठे रे गयो रे म्हारे लीला रो असवार

धोलो-धोलो घोडलो हाथे लीणो तीर

वाणियाँ रे वेल चढ़िया रामदेवजी पीर

ऊबो रहे चोर ठाकुर, भागो कठे जाय

जातरों रो माल तू किण विध खाय

आँखे कियो आँधलो डीले काड़यो कोढ़

दुनिया जाणेला ओ रामदेवरो चोर

उठ विनयाणी, तू धड़ माथो जोड़

वाणियो उठे लो थारो आलसियो मरोड़54

हे रामदेव, मेरी विनती सुनो । प्रज्ञा हो तो आपके दरबार में हाजिर होऊ । रामदेवेरे पर आने के लिये चार यात्री मेवाड़ से जंगल तथा घाटी के विकट रास्ते से चले उनमें से एक चोर था। उसने एक वणिक पुत्र को मार कर उसके आभूषणों को लूट लिया। महाजन की पत्नी की करुण पुकार पर बाबा रामदेव ने उक्त चोर को मार कर उक्त वणिक-पुत्र को जीवन दान दिया तथा यात्री का पूरा माल वापस मिल गया । इस सम्बन्ध में एक दोहा भी प्रचलित है--

गांव दलो वाणियो, भली राखी टेक ।

गांव रुणीचे मायने, धरि लीनो भेक ।।

रामदेव जी खमां-खमां ए कंवर अजमालरा

रामदेव जी एक धार्मिक संत हुए हैं तथा जोधपुर से पोकरण रेल मार्ग पर इनका स्थान रामदेवरा पड़ता है। यहाँ भादवा तथा माघ में मेला भरता है । रामदेवजी पीर माने गये हैं, इनके सम्बन्ध में काफी लोकगीत प्रचलित हैं । हिन्दू, मुसलमान तथा सभी वर्गों के स्त्री-पुरुष इनकी मान्यता रखते हैं

पीछम धरा सू म्हारा पीर जी पधारिया

धर अजमल अवतार लियो,

लाछा सुगना बाई करे हर री आरती,

हरजी भाटी चंवर ढोले ।

इनके सम्बन्ध में गाये गये कुछ दूसरे गीतों की भी पंक्तियां उधृत हैं :

बरसा गैरी-गैरी लादूडा पाछां की कर आओ

मने सांचो-सांचो भेद बताओ जी ओ...........

खमां-खमां खमां म्हारे द्वारकारे नाथ ने

गहणो रे कपड़ा थारा संगला तो बेचू

अणदाता रो मिंदरियो चुणावा रे, जी ओ..... ....

खमां-खमां, खमां रे कुवर अजमालरा ।।55

इसी प्रकार श्री रामदेव जी समर्थ की लीलाओं का इनके पिता श्री अजमल जी के उद्भव से लेकर, श्री रामदेवजी के परचे देने तथा रामदेवजी की इहलीला समाप्ति तक ये संगीतमय पद चलते रहते हैं ।

**खाटू का स्यामजी**

सीकर जिले में रींगस से दस मील दूर खाटू के श्याम जी का मन्दिर है। यहाँ फागुन सुदी ग्यारस बारस तथा जेठ सुदी ग्यारस तथा बारस को मेला भरता है। महावली भीम के पौत्र बर्बरीक की स्मृति में यह मेला भरता है । श्याम जी की पूजी जाने-वाली मूर्ति का स्वरूप राजपूती वेश में है । इनके पुजारी भी चौहान राजपूत हैं। इनको चूरमे का चढ़ावा चढ़ाया जाता है । जात, जडूंले के लिये यहां दूर-दूर से यात्री आते हैं –

धन खाटू, धन सांवला नंदलाल

जी परभु, धन रे ढूढाडी लोग

स्याम सुहावणा, बाबा स्याम

कै रे कोसा में थारो देवरो, बाबा स्याम

जी, परभु, कै रे कोसों में जगाजोत

स्याम सुहावणा, बाबा स्याम ।

अस्सी ऐ कोसां में थारो देवरो, बाबा स्याम

जी परभु, सगली सिस्टी में जगजौत,

कुण चिणयो थारो देवरो, बाबा स्याम

जी परभु, कुण दिवाइ गज नींव ।।

राजाजी चिणायो म्हारो देवरो । बाबा स्याम

जी परभु, सेवकां दिवाइ गजनींव

जात्री तो आवै थारै दूर का, बाबा स्याम

जी परभु, सावलिया मोटयार ।।

जात्री आवै थारै कुलबहू, बाबा स्याम ।

जी परभु गोद जडू लै पूत ।।

कुण्या जी री गाड़ी हांकी, बाबा स्याम जी परभु,

सग कुण्याचंद जी रो साथ ।।

चढ़े ये चढ़ालै थारै चूरमों, बाबा स्याम

जी परभु, और चोट्यालां नाले र ।।56

हे श्याम जी खाटू वाले ! आपका मन्दिर किसने बनाया, आपका प्रभाव क्षेत्र कितने कोसों में है ? खाटू श्याम जी आपका मन्दिर राजाजी ने बनाया तथा 80 कोस में इस मन्दिर का क्षेत्र है। प्रभु आपके यहाँ अनेकों यात्री आते हैं। कुल-वधुओं को आपके आर्शीवाद से पुत्र-रत्न की प्राप्ति होती है तथा आपके चूरमे का प्रसाद चढ़ाया जाता है ।

**देवीगीत : -** लोक साहित्य में देवी गीतों में विविधता है। यहाँ तक के देवी के स्वरुप, नाम आदि में भी वैविध्य है। इसलिए देवीगीत प्राय: भारत के सभी प्रान्तों में किसी न किसी रूप में पाये जाते हैं।आर्यों के विश्वास के अनुसार इन देवियों का मूल प्राकृतिक शक्ति में निहित रहा हैं। जिनका स्वरुप कालान्तर में मान्य हुआ। लोकजीवन में प्रतिष्ठित होने पर इन्हें आदर, श्रद्धा, पूजा, बलि, गीत एवं नृत्य समर्पित किये जाने लगे। शीतलामाता के गीत कई प्रदेशों में पाये जाते हैं। खासकर आदिवासीयों में शीतलामाता का पूजन अधिक है। राजस्थान और गुजरात में जगह-जगह शीतलामाता के मंदिर मिल जायेंगे। शीतलामाता बालकों की रक्षा करती हैं। शीतला माँ की पूजा के लिए शीतला अष्टमी प्रति वर्ष आती है। इस दिन एक दिन पूर्व पकाया हुआ (बासी) भोजन (बासोड़ा) खाया जाता है । शीतला माता के मन्दिर में कुम्हार पुजापा लेते हैं। माताजी के राबड़ी तथा ठण्डी रोटी आदि चढ़ाई जाती है । शीतला माँ के कृपाकांक्षी, मां से पुत्र, पौत्र आदि सन्तानोत्पत्ति के आशीर्वाद की अपेक्षा रखते हैं । राजस्थान में इस भाव का गीत पाया जाता है। -

रामचन्द्र जी ओ, दरवाजो खोल,

थाँ पे मेहर करे छै: माता सीतला,

थाँ पै लेसी गढ़ जोड़ा री जात,

थाँ पे मेहर करै छै माता सीतला,

थाने देसी जी बेटा पोतारां जोड़,

थाँ पै मेहर करे छै माता सीतला,

दशरथ जी यो दरवज्जो खोल ।

थाँ पे मेहर करे छै: माता सीतला,

म्हाने के फरमावे माता सीतला,

थां पै लेसी राबड़ी रोटिया की जेठ,

थाँ पै मया ये करे छः माता सीतला,

थाने देसी गोद झडूला पूत

थाँ पे मेहर करे छै: माता सीतला ।57

ए भक्त, दरवाजा खोलो, तुम पर शीतला माता कृपा करने वाली है । तुमसे केवल गढ़ जोड़े की पूजा, बासी रोटी तथा राबड़ी के एवज में तुम्हारी गोद भरने हेतु बेटे देगी, पोता देगी । इसी सन्दर्भ का एक लोकगीत भरतपुर जिले में गाया जाता है, “मैया रही रे अनन्द वन छाय फूलन की लोभनिया । मैया के द्वारे एक बांझ पुकारे, देऊ पूत, घर जाय फूलन की लोभनियो ।”

**सेडल माता**

वाड़ विचाळे पींपळी जी

जाँ की सीली छाँय

बला ल्यूँ सेडळ माता अे

जे तळे बालो खेलतो जी

खेलत चड़ गयी ताप

बला ल्यूँ सेडळ माता अे

खिल-मिल बालो घर गयो जी

विलख्यो सारी रात

बला ल्यूँ सेडळ माता अे

दादी-भूवा थर-थर काँपी

डरप्या माअी अर बाप

बला ल्यूँ सेडळ माता अे

थे क्यूँ डरपो, जोगण्याँ अे

करुँगी छतर की छाँय

बला ल्यूँ सेडळ माता अे

जद मेरी माता तूठण लागी

गाजर को सो बीज

बला ल्यूँ सेडळ माता अे

जद मेरी माता भरणै लागी

मक्के को सो बीज

बला ल्यूँ सेडळ माता अे

जद मेरी माता मान लियो अे

सोयो सारी रात

बला ल्यूँ सेडळ माता अे

भरिये कूँडारे धोकसी जी

नानड़िये री माय

बला ल्यूँ सेडळ माता अे58

वाड़ के बीच में पीपल का पेड़ था, जिसकी ठंडी छाया थी। उसके नीचे बचा खेल रहा था। खेलते-खेलते बुखार चढ़ आया।खेल-खिला कर बच्चा घर गया। वह रात भर पीड़ा के कारण विलखता रहा। उसे शीतला निकल आयी। यह देखकर दादी, फूफी आदि संबंधी थर-थर काँप उठे और माँ-बाप डर गये। तब सब शीतला माता की शरण गये। माता ने कहा – अरी जोगनियों, तुम क्यों डरती हो? मैं छत्रच्छाया करुँगी। जब माता प्रसन्न हुई तो गाजर के बीज के बराबर दाने उठ आये। फिर माता भरने लगी तो दाने पानी भर कर मक्के के बीज के बराबर हो गये। फिर माता ने मान लिया। तो बच्चा रातभर आराम से सोता रहा। अब बच्चे की माता खुद कूँड़ा भरकर माता शीतला को पूजेगी ।

राजस्थान सतियों का घर है। यहाँ गाँव-गाँव में सतियों के अनेकों स्मारक-चिह्न बने हुए हैं। सतियों की पूजा देवताओं की भाँति की जाती है । यह राणी सती अग्रवाल जालान वंश में कोई साढ़े छै सौ वर्ष पूर्व हुई थी। इनकी भस्म पर झूँझणु में मंदिर बना हुआ है।

**सती राणी**

राणळ सती अे महासती राणी, सत दे नोकर, थारा जी

वडे अे वगड़ सेँ अूतरी, राणी, ले गड़वो हाथ जी

गड़वो छिटक्यो, भू पड्यो, राणी, धरती लियो अे सिळास्यो जी

अे रे गाँवाँ के गोरवें, राणी, वेजो वणै अे कबीरा जी

मेरे सायब को वण दे मोळियो, राणी, सती माता ने दीखण चीरो जी

अे रे गाँवाँ के गोरवें, राणी, माटा भर्या अे मजीठाँ जी

मेरे सायब को रँग दे मोळियो, राणी, सती माता ने दीख्खण चीरो जी

अे रे गाँवाँ के गोरवें, राणी, सोनो घड़ै अे सुनारा जी

मेरे सायब को घड़ दे पूँचियो, राणी, सती माता ने नवसर हारो जी

अे रे गाँवाँ के गोरवें, राणी, पटवो पोवै छै पाटाँ जी

मेरे सायब को पो दे पूँचियो, राणी, सती माता ने नवसर हारो जी

अे रे गाँवाँ के गोरवें, राणी, लामी वधी अे खिजूराँ जी

जैं चढ सती माता जोअियो, राणी, सुरग नेड़ा घर दूराँ जी

ढोली-का, चढ ढोल दै, राणी, गढ सरवरिये री पाळाँ जी

ज्यों सुणै मेरे बाप के, राणी, लाडलड़ी ननसाळाँ जी

माय कैवै मेरी सासरे, राणी, सास कैवै वहू पीरे जी

अधविच सती माता घर कर्यो, राणी, अपणे पुरख के सागै जी

तार्यो पीहर-सासरो, राणी, तार्यो सौ परवारो जी

परण्यो तार्यो आपको, राणी, कर्यो अे दूराँ दूर वासो जी

सती माता, तेरी चूनड़ी, राणी, रंगी छै मंगळ वारां जी

अेक ज वार ज ओढियो, राणी, लीनी सवासण्याँ अुतार जी

सती माता, तेरा विछिया, राणी, घड़िया छै मंगळ वारां जी

अेक ज वार ज पैरिया, राणी, लीना छै बामण्याँ अुतार जी

सती माता, तेरो कांचवो, राणी, सीम्यो छै मंगळ वारां जी

अेक ज वार ज पैरियो, राणी, लीनो छै ढोली-कै अुतार जी

सती माता, तेरो चुड़लो, राणी चितर्यो छै वार सु-वारां जी

भल पहर्यो भल तन चढ्यो, राणी, तप्यो छै राजीड़ै रे साथ जी

माँडा पोवत दझियो, राणी, ज्यूँ र वासदेहा जी

ज्यूँ जळ निगळै माछली, राणी, ज्यूँ र वास-देहा जी59

हे महासती राणी सती, हम तेरे दास हैं, हमें सत दे। बड़े वगड़ से रानी हाथ में गडुआ लिये हुए उतरी। गडुआ छिटककर जमीन पर जा गिरा। गाँव के गोरवें में जुलाहा कपड़ा बुनता है। हे जुलाहे, मेरे प्रियतम के लिए पगड़ी और मेरे लिए दक्षिणी चीर बुन दे। गाँव के गोरवें में मजीठ से घड़े भरे हैं। हे रंगरेज, मेरे प्रियतम के लिए पगड़ी और मेरे लिए दक्षिणी चीर रंग दे।गाँव के गोरवें में सुनार सोना घड़ता है। हे सुनार, मेरे प्रियतम के लिए पहुँची और मेरे लिए नौ लड़ियों का हार बना दे। गाँव के गोरवें में पटुवा पाट बुनता है। हे पटुवे, मेरे प्रियतम की पहुँची और मेरा नौ लड़ियों वाला हार पिरो दे। गाँव के गोरवें में लंबा खजूर का पेड़ बढ़ा है। उस पर चढ़कर सती माता ने देखा तो स्वर्ग निकट और घर दूर दिखाई दिया। सती ने ढोली से कहा – हे ढोली के बेटे, सरोवर की पार चढ़कर ढोल बजा जो मेरे पिता के घर और ननिहाल दोनों जगह सुनाई पड़े। माता समझती है कि मेरी बेटी ससुराल गयी है। सास समझती है कि वह पीहर में है। पर सती ने अपने पति के साथ मार्ग के बीच में ही घर बनाया अर्थात सती हो गयी। सती ने पीहर और ससुराल दोनों को तार दिया। सारे परिवार को तार दिया। अपने पति को तारा। और बहुत दूर जाकर निवास बनाया । हे सती माता, तेरी चुनड़ी मंगलवार को रँगी गयी थी। तुमने उसे एक ही बार ओढ़ा कि बहन-बेटियों ने उतार ली। हे सती माता, तुम्हारे बिछुए मंगलवार को घड़े गये थे। तुमने उन्हें एक ही बार पहना और ब्राह्मणियों ने उतार लिया। हे सती माता,तेरी कंचुकी मंगलवार को सी गयी थी। तुमने उसे एक ही बार पहना कि ढोली के बेटे ने उतार ली। हे सती माता, तेरा चुड़ा सुन्दर वार को चित्रित किया गया था। तुमने उसे अच्छा पहना कि वह प्रियतम के साथ ही जला। जैसे रोटी बनाते समय अंग आग में जल जाते हैं वैसे ही अग्नि में तुम्हारा शरीर जल रहा है। जैसे जल को मछली निगलती है वैसे ही अग्नि तुम्हें निगल रही है।

**लांगुरिया :** राजस्थान के करौली क्षेत्र में देवी के सेवक या भक्त को लांगुर कहते हैं । किसी-किसी का कहना है कि जिस प्रकार से बटुक नाथ भैरव की आराधना पश्चिमी, उत्तरी तथा दक्षिणी राजस्थान में की जाती है, उसी प्रकार पूर्वी राजस्थान तथा करौली क्षेत्र में लांगुरिया सिद्ध माना जाता है । कैला देवी के मेले पर लाखों स्त्रीपूरुष लांगुरिया की धुन पर विभिन्न बोलों के हेर-फेर के साथ नाचते गाते देखे जा सकते हैं ।

चरखी चल रही बर के नीचे, रस पीजा लांगुरिया

रस पीजा लांगुरिया अरे गुड़ खायजा लांगुरिया

चरखी चल रही ।।

पोखरिये की पाल पै, लम्बो पेड़ खजूर बापै चढके देखियो

मेरो बलमा किती दूर

चरखी चल रही ।।

राम-नाम तो सब कहे, दशरथ कहे न कोय, एक बेर दशरथ कहे

कोई अष्ट जज्ञ फल होय

चरखी चल रही ।।

चित्रकूट के घाट पर भइ सन्तन की भीर तुलसीदास चन्दन घिसे

तिलक लेत रघुवीर

चरखी चल रही ।।

पत्ता टूट्यो डार है, ले गई पवन उड़ाय,

अबके बिछुड़े नाय मिलेंगे, दूर पड़िगे जाय,

चरखी चल रही ।।60

उक्त लोकगीत मेलों-ठेलों के अवसर पर गाया जाता है। नायिका कह रही हैं कि बटवृक्ष के नीचे गन्ने के रस की चरखी चल रही है, गुड़ बनाने की तैयारी है। अरे लांगुर, आकर रस पी जी और गुड़ खाले । इसके बाद विभिन्न प्रचलित दोहे गाये जाते हैं । इस गीत के गायन में रस की सहज निष्पत्ति होती है। कहीं-कहीं लांगुरिया के स्थान पर रस निष्पत्ति के लिए देवरिया का प्रयोग करते हुए भी यह लोकगीत गाया जाता है । इस धुन पर तथा गीत की चाल पर, मन-मौजियों ने कई प्रकार के लांगुरिया गीत गढ़ लिये हैं । एक और गीत देखें –

केला मैया के भवन में घुटवन खेले लांगुरिया

छूटुवन खेले लांगुरिया कि सरपट दौड़े लांगुरिया

मैया तेरी गैल में ऊँचे नीचे पहाड़

जापै तू बैठी भइ है करिके बन्द किवार । केला ।।

मैया तेरी गैल में सोना गढेरे सुनार

हमको तो कछुना घड़े मैया तोकू नवलखहार

मैया तेरी गैल में मटका घड़े कुम्हार

हमको जो कुछूना घड़े मैया तोकू कलसा चार । केला ।।

तुलसी या संसार में भाँति-भाँति के लोग

सबसे हिलमिल चालिए, कोइ नदी नाव संजोग । केला ।।61

केला देवी के भवन में सेवक, बाल स्वरूप, बटुक स्वरूप, भक्तगण दौडते फिरते हैं। मैया के मन्दिर के रास्ते में ऊँचे-नीचे पर्वत हैं जहां केला देवी अपने स्थान पर विराजमान हैं। यह गीत इसी प्रकार दोहे जोड़ कर गाया बजाया जाता है ।

**ऋतुओं के गीत**

ऋतु-संबंधी गीत वेसे तो सभी ऋतुओं के मिलते हैं, परंतु राजस्थान में सर्वोपयोगी और सर्वसुंदर ऋतु वर्षा होने के कारण, वर्षा ऋतु के गीत बहुत हैं और वे बहुत सुंदर व मनोहारी है। वर्षाऋतु का आनंद गाँवों में अधिक अनुभव किया जा सकता है। वर्षा होते ही गाँव के बच्चे बच्चे की ह्रदय कली खिल उठती है और उनका ह्रदय स्वतः गा उठता है। इधर उमड़ी हुई बदली, उधर उमड़ा हुआ ह्रदय – फिर गीतों की क्या कमी। वर्षा का आगमन हो चुका। बालिकाओं का झुंड घरों से बाहर निकल आंगन में गाता है –

**वर्षागीत**

मोटी मोटी छांट्या ओसर्यो ए बदली, ओसर्यो ए बदली। (कोई) जोड़ा ढेलमढेल।

सुरंगी रुत आई म्हारे देस। भली रुत आई म्हारे देस।

ओकुण बीजे बाजरो ए बदली । बाजरो ए बदली।

ओ कुण बीजे मोठ मेवा मिसरी । सुरंगी रुत आई म्हारे देस। भली रुत..।।

ईसर बीजे बाजरो ए बदली। कानू बीजे मोठ मेवा मिसरी ।

सुरंगी रुत आई म्हारे देस। भली रुत... ।

ढहराँ ढहराँ काकड़ी ए बदली। (कोई) धोराँ गुड़स मतीर मिसरी ।

सुरंकी रुत आई म्हारे देस। भली रुत आई म्हारे देस ।।62

मोटी मोटी बूंदो वाला मेघ उमड़-घुमड़ कर बरसना शुरु हुआ है। ताल तलैया ठेलमठेल भर कर उतरा रहे हैं। हमारे देश में ये कैसी भली, कैसी मनोहर ऋतु आई है। इस ऋतु में मेवा और मिश्री के समान मीठे बाजरे और मोठ को यह कौन बो रहा है? अहा क्या सुंदर ऋतु आई है! भैया ईसर बाजरा बो रहा है औड़ भाई कानू मेवा-मिश्री के समान मीठे मोठ। नीची भूमि पर ककड़ी बोई जा रही है और टीबों पर गुड़ जैसे मीठे मतीरे। बलिहारी जाऊँ कैसी मनोरम ऋत आई है मेरे देश में!

शीतकाल : राजस्थान के सूखे जलवायु में कड़ी से कड़ी शीत और कड़ी से कड़ी गरमी पड़ती है। राजस्थान में एक प्रचलित जनश्रुति है

स्याले तो सीकरी भली, उन्हाळे अजमेर ।

नागाणो तो नित भलो, सावण बीकानेर।

वैसे तो विरहिणी के लिए हर एक ऋतु घातक होती है, परंतु जाड़ा असहनीय होता है। गीत इस प्रकार है –

जाड़ो तो पड़ियों नणद बाई डूँगराँ

मारया मारया दादर मोर।

किस विध भुगताँ नणद बाई जाड़े नें ।।

जाड़ो तो पङियो नणद बाई ढहराँ में।

मारया मारया हिरण पचास। किस विध..

जाडो तो पङियो जी नणद बाई बागाँ में ।

मारया मारया दाडम दाख ।। किस विध..

जाड़ो तो पङियो जी नणद बाई सहर में।

मारया मारया हटवा जी लोग। किस विध...

जाड़ो तो पङियो जी नणद बाई महलाँ में।

मारी मारी परदेस्यां री नार ।। किस विध...63

ननदबाई, पर्वतों पर भयंकर शीत पड़ रहा है, जिससे हजारों सुंदर मोर मर गए। ऐसे कठोर जाड़े को किस प्रकार भुगतूँ ? ननद बाई, जंगलों में जाड़े का प्रकोप हुआ है, पचासों हिरन मारे गए हैं। भला, ऐसे कठोर जाड़े में पति वियोग में मैं एकाकिनी कैसे सहूँ? ननद बाई, बगीचों में भयंकर शीत पड़ रहा है। दाड़िम दाख (अंगुर) के पेड़ झुलस गए हैं। शहर में खूब जाड़ा पड़ रहा है, बाजार के लोग मर रहे हैं। महलों को भी इस जाड़े ने छोड़ा नहीं, पर इसके प्रकोप से वही अभागिनी स्त्रियाँ मरीं जिनके पति परदेस में है। ननदी, बता, इस जाड़े को कैसे भुगतूँ ?

**बारहमासा :** कृषक के लिए उसका काम ही परमात्मा है। वह भगवान का रूप कौन-कौन सी विभूतियों में देखता है और उसकी उपासना किस ढंग की है, यह बात इस गीत से पता चलती है–

‘साड़ महीने बिरखा लागी, बाजरियाँ री वाह।

माऊं जी म्हारे भातो लावै, वाहरे साँई वाह।।

सावण महीने बाजर लागी, नीनाणाँ री नाह।

काचरियाँ री बेलाँ टाळाँ, वाह रे साँई वाह।।

भादू महीने भूँगा होसी, तीवणियाँ री ताह।

बाजरियाँ री रोटी खावाँ, वाह रे साँई वाह।

आसोजाँ में आसा लागी, हक्कालाँ री हाह।

राती बासे रोही रहस्याँ, वाह रे साँई वाह॥

काती महीने करड़ा सिट्टा, भावै इत्ता खाह।

काती महीने सिट्टा कीना, वाह रे साँई वाह ।।

मिगसर महीने मोका महता, लेखो लेसी साह।

लेयर देयर दूरा होस्याँ, वाह रे साँई वाह ।।

पोह महीने पाळो पड़सी, खालड़ी रो खोह।

खालडी रो खोह कीनो, वाह रे साँई वाह।।

माह महीने पाळो पड़सी, पाणी, पत्थर खाह।

पाणी रो तो पत्थर कीनों, वाह रे साँई वाह।।

फागण महीने फाग खेलै, गोपियाँरो नाह।

महूड़े रो मद्द पीयो, वाह रे साँई वाह।।

चैत महीने चंपा मोरी, चंचळ मोरया साह।

बिन बूठाँ ही हरिया होसी, वाह रे साँई वाह ।।

वैसाखाँ में धूम पड़सी, तावड़िये री ताह।

पड़ायाँ में पड़िया रहस्याँ, वाह रे साँई वाह ।।

जेठ महीने धूप पड़सी, तावड़िये री ताह।

खेजड़ चढ़र खोखा खास्याँ, वाह रे साँई वाह।।64

आषाढ़ महीने में वर्षा का आरंभ होता है, कृषक खेत में काम करता है और उसकी माता उसे रोटी पहुँचाती है। सावन में बाजरा फूटता है, खेत निराया जाता है, 'काचर मतीर' की बेलें बचा दी जाती हैं। भादों में भुनगे बहुत होते हैं जिनके शरीर के चमकीले भाग से लड़कियाँ गहने-मालाएँ आदि बनाती हैं; तरकारी खूब उपजती है और नये बाजरे की रोटियाँ बनाते हैं। आसोज (क्वार) में फसल की आशा बँध जाती है और 'हक्काल' हाँका लगाकर चिड़िया उड़ाते हैं। कृषक रात में भी खेत में रहते हैं। कार्तिक में 'सिट्टे’ खूब होते हैं। - चाहे जितने खाओ। वाह रे ईश्वर तुझे धन्य है।

मिगसर में बनिया लेखा-जोखा करता है। कृषक किसी प्रकार ले-देकर हिसाब साफ़ करता है। पौष में जोर का जाड़ा पड़ता है जो चमड़ी को खा जाता है। माघ में कड़ाके का जाड़ा पड़ता है, पानी जम जाता है। फागुन में गोपियों के नाथ ने फाग खेला था, कृषक भी महुवे का मद पीकर मस्त रहता है।

चैत में चंपा फूलती है और मोर चंचल हो जाते हैं, इस महीने में बिना वर्षा के खेती होती है। वैसाख और जेठ में धूप भयंकर पड़ती है; कृषक या तो छाया में, या झोंपड़ी में या वृक्ष के तले पड़ा रहता है। अथवा ‘खेजड़ों’ पर चढ़कर फली तोड़ कर खाता है।

हे ईश्वर, तुझे धन्य है जो प्रत्येक ऋतु और मास में कृषक को नये-नये अनुभव और फल देता है।

**बारहमासा (मालवी लोकगीत)**

इस प्रकार के गीतों में विरहिणी स्त्री द्वारा वर्ष के प्रत्येक मास में अनुभूत कष्टों का वर्णन होता है। मालवा में खेतों को निराते समय और चक्की पीसते समय भी बारहमासा गाया जाता है। प्रायः वर्षाऋतु में इसे गाने की प्रथा अन्यत्र पाई जाती है।

सखि लागो असाड़े मास, प्रभू वन चाल्या रे

चाल्या चाल्या रे दुबारिकानाथ हरि मन्दर सूनो रे ।।

सखि लागो सावण मास, बिजेला चमके रे ।

झीणी-झीणी पड़ रही बुंद,सालुड़ा भीगे रे ।।

सखि लागो भादस मास, घटा घनघोर छाई रे ।

छाई रे छाई रे दुधारी रात, हरि मन्दर सुनो रे ।।

सखि, लागो कार्तिक मास, दिवाली आई रे।

सखि, घरे घरे गोरे धन पुजाय, हरि मन्दर सुनो रे ।।

सखि लागो अगणे मास, सियालो आयो रे ।

म्हारा प्रभुजी बिना यो कुणे सोड़ पधारे रे।।

सखि, पोसज लागो मास, अंगिया फाटी रे ।

म्हारा किसनजी बिना यो कुण अंगिया सिवाड़े रे ।।

सखि, लागो म्हावज मास, वसन ऋतु आई रे ।

म्हारा प्रभुजी विना यो कुण बसन रमावे रे ।।

सखि, लागो फागण मास होली आई रे।

सखि, घर घर फागे खेलाय, हरि मन्दर सूनो रे ।।

सखि लागो बैसाख मास, उणालो आयो रे।

घर घर पंखा डोलाय, प्रभू मन्दर सूनो रे ।।

सखि, लागो जेठज मास, प्रभु घर आया रे।

आगो आयो से जवानी रो, जोस कसेना टूटे रे ।।65

एक स्त्री अपनी सखी से कह रही है, सखि अषाढ़ महीना लग गया है और मेरे प्रभु (पति) मुझे छोड़ वन (दूर) चले गए हैं। द्वारकानाथ चले गए जिसके बिना हरि मंदिर (घर) सूना हो गया है। सखि सावन का महीना आ गया, बिजली चमकने लगी, छोटी-छोटी वर्षा की बूँदों से मेरा सालू (साड़ी) दुपट्टा भीग गया है। सखि भादो मास में आसमान में घनघोर घटाएँ छा गई। रात्री दुधारी हो चली, प्रियतम के बिना मेरा घर (मंदिर) सूना पड़ गया है। सखि, कार्तिक मास में दिवाली आ गई, घर घर में गोवर्धन पूजा होने लगी पर मेरा मंदिर मेरे प्रभु बिना सूना है। सखि, अगहन का महीना आया, जाड़े की ऋतु भी आ गई। मेरे (पति) प्रभु बिना मेरी शय्या पर कौन पधारेगा? सखि, पोस महीना लग गया, मेरे कृष्णजी (पति) बिना कौन चोली, वस्त्र सिलवा देगा? सखि लगा माह (म्हावज) महीना लग गया। वसंत ऋतु भी आई पर मेरे प्रभु प्रियतम बिना कौन वसंत में रमण कराए? सखि, फागण महीना भी आया, होली भी आ गई, घर-घर में फाग खेले जा रहे है और मेरे प्रभु प्रियतम के बिना घर मंदिर सूना है। साखी वैसाख महीना भी आया, गर्मी का मौसम आया, घर-घर पंखे झलने लगे, पर मेरा घर मंदिर सूना है। सखि, जेठ महीना लग गया और मेरे प्रभु घर पधारे। वापस लौटे और इससे मुझ पर जवानी का जोश छा गया, हृदय प्रसन्न हो गया।

ओ तो सावण आयो ओ सोजतिया सिरदार

ओ तो इन्द्र धडूयो, म्हारा सिरदार ।

थे तो हालीड़ो समडावो, लाल नणंद बाई रो बीर ।।

मैं तो भातो लेने आऊँ, मारगियो नहीं जाँणू ।

म्हारा नणंद बाई रा बीर ।

मैं तो फुलड़ा बिखेरुँ म्हारी सदा सवागण नार

सालों री बहनड़ ।।

फूलड़ा कुलमावे, म्हारा ताल नणंद बाई रा बीर।

म्हाँरा धवला पहिचाण आयजो म्हारे घररी नार।

म्हनै पीवर मेहलो ओ सोजतिया सिरदार।

पीवर काला पड़सों ओ म्हारी सदा सवागण नार ।।

मैं तो केसर पीसूँ ओ म्हारी लाल नणद बाई रा वीर ।

केसर मूँगो ओ म्हारा सदा सवागण नार ।।

मैं तो मूंगो-सूंगो ही पीसूँ ओ म्हारी लाल नणद बाई रा बीर ।

म्हनै म्हारे पीवर मेहलो ओ, सोजतिया सिरदार ।66

सावण (श्रावण) मास आ गया। इन्द्रदेव ने भी गूंजना आरंभ कर दिया । स्त्री कहती है - हे पतिदेव! आप हल लेकर खेत चलिये। मैं (सुबह का भोजन) लेकर आना चाहूँगी। किंतु खेत का मार्ग नहीं जानती हूँ। इस पर पति कहता है - मार्ग में फूल बिखेर देता हूँ, इस चिन्ह से आ जाना। पत्नी कहती है - फूल तो मुरझा जाएँगे। मुझे अपने पीहर भेज दीजिए। पति कह उठता है - पीहर में तुम काली पड़ जाओगी। इस पर पत्नी कहती है कि मैं वहाँ पर केसर पीसूँगी।

**शरद सौंदर्य (ऋतु) :** राजस्थानी लोकगीतों में ऋतुवर्णन का विशेष महत्व है। नायिका कहती है

'रतन सियाळो राजन यूँ ही गियोजी।

उनाळा रा चार महीना ।

चौमासा रा चार,

सियाळारा लागे थोड़ा थोड़ा, म्हाँरी जोड़ी रा,

रतन सियाळो राजन यूँ ही गियोजी ।

नायिका उपालंभ देते हुए कहती है (प्रियतम से) तुम्हारी अनुपस्थिति में मेरी रत्न सी काया जैसी शरद ऋतु व्यतीत हो गई। मेरे जोड़ीदार ! हे मेरे जीवन साथी ! ग्रीष्म ऋतु के लम्बे पाँच महीने होते हैं, वर्षा के चार, किंतु शरद के तो केवल तीन ही महीने होते हैं। ये ऐसी द्रुतगति से बीत जाते हैं कि ज्ञात ही नहीं होता। समय थोड़ा थोड़ा लगता है। नायिका ऋतु के पश्चात् अब ऋतु में वस्त्र धारण करने के वस्त्रों की ओर संकेत करती है

ऊनाळा रा पोमचा, चौमासा रा लेरिया,

सियाळा रा फागण्या, छपावो म्हॉरा जोड़ी रा।

रतन सियाळो राजन यूँ ही गियोजी ।67

ग्रीष्म ऋतु में पोमचा ओढ़ना अच्छा लगता है, वर्षा में लहरिये की बहार है और शरद ऋतु में फागण्या की छटा अच्छी रहती है। अतः हे मेरे जीवन साथी। ऋतु आ गई है, एक सुंदर फागण्या रँगा दो।

ढोलामारू राजस्थान में गाया जानेवाला वर्षाऋतु का एक प्रसिद्ध प्रबंधगीत है। पुंगल देश में एक समय अकाल पड़ा। वहाँ के राजा पिंगल परिवार सहित नरवर देश चला गया। वहाँ के राजा नल ने अपने पुत्र ढोला से पिंगल राजा की पुत्री मारू का विवाह कर दिया। मारू उस समय छोटी थी। बड़े होने पर ढोला का विवाह मालवा की राजकुमारी मरमण के साथ हो गया। मारू के साथ विवाह की बात उसे मालूम नहीं थी। युवती होने पर मारू ने स्वप्न में अपने पति ढोला को देखा और वह बड़ी कठिनाई से उस तक पहुँची। ‘ढोलामारू’ शब्द राजस्थान में स्त्री-पुरुष के पर्याय रूप में भी माना जाता है। इस नाम से प्रचलित एक लोककाव्य है जिसे “ढोला मारू रा दूहा” कहते है। इसका पहला दोहा इस प्रकार है –

पुंगल देश दुकाल भियूँ, किणही काल दिसेस।

पिंगल ऊचालउ कियउ, नल नरवर चई देस।।

नरसीजी रो माहेरो भी चतुर्मास में गाया जाता है। गुजरात के भक्त नरसीजी ने अपनी बहन नानीबाई का भात भगवान् कृष्ण की मदद से भरा था, उसी का वर्णन इसमें है। रुकमणि मंगल नामक कथागीत भी राजस्थान में चातुर्मास में गाया जाता है। इसमें रुक्मणी और श्रीकृष्ण के विवाह का वर्णन है।

**व्रत एवं त्यौहारों के गीत :**

लोकगीतों की वर्णन प्रक्रिया एवं कथ्य की अधिकता को देखने पर यह स्पष्ट हो जाता है कि सर्व प्रथम संस्कार संबंधी लोकगीत एवं तदुपरान्त विविध वृत्त त्यौहारों से संबंधित लोकगीतों का स्थान आता है। पूजा का सीधा संबंध लोक विश्वास एवं लोक परंपराओं से होता है। अतः लोक साहित्य के मूल स्त्रोतों पर आधारित इन गीतों का मूलभूत तत्व भजनिक होता है। ईश्वराधना ही इसमें होती है अतः पूजा गीतों के अंतर्गत गाये जाने वाले गीतों को ‘भजन’ के अंतर्गत समाहित कर लिया जाता है।

प्रकृति संबंधी सामाजिक, धार्मिक उत्सव एवं त्यौहारों पर अनेकानेक गीत गाये जाते हैं। इनमें कुछ तो धार्मिक विधियों से संबंधित होते हैं तो कुछ ‘जागरण’एवं अन्य काम करते समय गाये जाते है। डॉ.सत्येंद्र ने इन गीतों के बारे में लिखा है – “स्त्रियों के गीतों को दो प्रकारों में बाँट कर समझा जा सकता है : एक स्फूट गीत, दूसरे प्रबंध गीत, स्फूट गीतों में देवी की प्राथना, स्तुति, उसके पराक्रम का उल्लेख, उसके स्थान का तथा शोभा का वर्णन, यात्रा की तैयारी तथा यात्रियों की कारवाई का वर्णन होता हैं”68 हमारा प्रदेश उत्सवप्रिय है। यहाँ समय-समय पर विविध उत्सव मनाये जाते है। कुछ उत्सव धार्मिक होते हैं, तो कुछ प्रकृति पर आधारित होते हैं। जिनमें प्रकृति की विविध शक्तियों का उल्लेख होता हैं।

भारतीय पुराणों व शास्त्रों में ऐसा विश्वास किया जाता है कि व्रत स्त्री पुरुष दोनों ही रखते हैं। एकादशी, पूनम, जन्माष्टमी, शिवरात्री आदि का व्रत पुरुष भी करते हैं। तीज गणगौर, नवरात्री, गंगा दशमी, कार्तिक मास, चतुर्थी आदि के व्रत विशेष उल्लेखनीय हैं, जिनको मुख्यतः स्त्रियाँ करती है। ‘तुलसी महातम’ का राजस्थानी लोकगीतों में विशेष उल्लेख हैं – निम्न गीत में तुलसी की शालिग्राम के साथ विवाह करने की इच्छा प्रकट की गई हैं –

चाँद तो बाबुल घट बढ़ ऊगै तौ,

सूरजजी रै किरणां घणैरी हो राम।

ईसर तौ सोला दिन आवै तौ,

सिवजी के जटा ए घणोरी हो राम।

विरमा बाबाजी वेद पढ़ावै तौ,

विनायक कै सूँड बडैरी हो राम।

किसन बाबाजी गायाँ चरावै तौ,

ए बर म्हांने ना भावै हो राम।

म्हानै म्हारौ सालगराम वर हैरौ तौ,

बै म्हारी ओड़ निभावै हो राम ।69

हे बाबुल! चाँद तो घटता-बढ़ता हुआ ऊगता है, सूरजजी की किरणें बहुत हैं। ईसरजी तो सोलह दिन आते हैं व शिवजी के जटाएँ बहुत हैं। हे राम! ब्रह्मा बाबाजी तो वेद पढ़ाते रहते हैं व गणेश जी के सूंड बहुत बड़ी है, हे राम! कृष्ण बाबाजी तो गाएँ चराते हैं, ये सब वर मुझे अच्छे नहीं लगते हैं। हे राम! मुझे तो मेरा शालिग्राम वर ढूँढो । वही, मेरी आन निभा सकते हैं।

तुलसी विवाह का अन्य गीत देखे –

धन, बाअी तुळछां, धन थारो नाम

धन, बाअी तुळछां, अुत्तम काम

वनमाळी रे पुत्तर जायो

जिण तुळछाँ, रो वन रोपायो

सावणिये री तुळछाँ वायी

भादुड़े में दो पान आयी

आसू तुळछाँ लुळ-लुळ आयी

काती तुळछाँ लगन लिखायी

कानूड़े सूँ व्याँव रचायो

मिगसरियो वर सूँ डोलै

तुळछाँ रा फूल किसनजी तोलै

तुळछां अे, थारो धरियो ध्यान

अन्त समै मेँ दे-दे पान70

तुलसी, तेरा नाम धन्य है। तू उत्तम कामनाओं को सफल करने वाली है। तुलसी के वरदान से माली को पुत्र हुआ। उसने प्रसन्न होकर तुलसी का वन लगाया और प्रेम और भक्ति से उसे सींचा। सावन में तुलसी अंकुरित हुई, भादों में उसमें दो नन्हीं-नन्हीं पत्तियाँ लगीं, आश्विन में पौधा कुछ बढ़कर लहलहाने लगा । कार्त्तिक में तुलसी का श्री शालग्राम से विवाह हुआ। मार्गशीर्ष में यह दाम्पत्यप्रेम प्रौढ़ता को प्राप्त हुआ और तुलसी के प्रेम-पुष्पों की सुवास भगवान शालग्राम लेने लगे। हे तुलसी, हम संसार के गृहस्थी शुद्ध अंतःकरण से तुम्हारा ध्यान करते हैं। तू इतनी दया करना कि अन्तिम समय हमारे मुख में तुलसीदल पड़े, जिससे हमारी सद्गति हो जाय। इस प्रकार इस गीत में तुलसी के विकासक्रम और जीवनध्येय में स्त्रियों के जीवनोद्देश्य को बिम्बरूप से सम्निहित किया गया है।

कार्तिक मास में ब्रह्ममुहूर्त में स्नान का बड़ा महत्व है। स्त्रियाँ सुबह चार बजे स्नान कर गीत गाती हैं।

सात सयाँई झूमखै राधा न्हावण चाली ओ राम।

आड़ा किसनजी फिर गिया, थांने जाण न देस्या ओ राम।

थारां जी वरज्या ना रेवां, म्हारी सास सिनाया ओ राम।

सौल्याजी स्यालु, स्यावटा, राधा जल में पधारी ओ राम ।

लीन्या किसनजी कापड़ा जाय कदम चढ़ बैठ्या ओ राम् ।

देद्यौ किसनजी कापड़ा, लज्जा राखो म्हारी ओ राम् ।

थांरा जी कपड़ा जद देवां, जल सै हो ज्याओ न्यारा ओ राम।

जल सै न्यारा ना होवां, थे पुरुष म्हें नारी ओ राम ।'71

सात सखियों के साथ में राधा नहाने को चली ओ राम । उनके सामने कृष्णजी फिर गए और कहने लगे। तुम्हें जाने न देंगा, ओ राम। तुम्हारे रोकने से न रहेंगी, मेरी सास ने भेजा है, ओ राम। स्यालू व स्यावटा खोलकर राधा जल में उतरी, ओ राम। किसनजी ने कपड़े लिए व कदंब की डाल पर जा कर बैठ गए, ओ राम। किसनजी कपड़े दे दो मेरी लाज रक्खो ओ राम। तुम्हारे कपड़े तब दूंगा जब तुम जल से अलग हो जाओगी। ओ राम! जल से अळग हम न होंगी क्योंकि तुम पुरुष हो और मैं नारी हूँ, ओ राम!

**तुलसी पूजा :**

हाथ जोड़ तुलछी करूँ बिनती।

होजी बीरे लुल लुल लागूँ पाँव ।।

होजी वीरा दूध पखालूँ पाँय।

ओजी बीरे ओढ़ण दिखणी रो चीर ॥72

गीत में राजस्थानी बिटिया सुंदर वर प्राप्ति हेतु तुलसी मैया से अनुनय करती है - हम हाथ जोड़ कर तुलसी की विनती करती हैं और हम नम कर उनके पैरों पड़ती हैं। हे देवी! तुम्हारे चरणों को दूध से प्रक्षालन करूँगी एवं दक्षिणी चीर ओढ़ने को आढनी रूप में मँगाऊँगी। क्योंकि देवी। उसे मन चाहा वर मिले जो वीर पुरुष हो, राष्ट्रप्रेमी हो और अन्य गुणों का अक्षय भंडार हो।

**गवर (गणगोर) :** गवर या गणगोर राजस्थान का एक महत्वपूर्ण त्यौहार है। गौरी को कन्या-जीवन का आदर्श माना गया है। उपयुक्त पति की प्राप्ति के लिये गौरी ने कठिन तप किया था। कन्याएँ उपयुक्त पति की प्राप्ति के लिए गौरी की पूजा करती हैं।यह गौरी पूजन होली जलने के दूसरे दिन से आरम्भ होकर चैत्र शुक्ला चतुर्थी तक चलता है। प्रातःकाल कन्याएँ टोली बनाकर तालाब या कुए आदि जलाशय पर सिर पर कलसे तथा लोटे रखे हुए जाती है।वहाँ एक किनारे गौरी का कुंकुम आदि से पूजन करती हैं और लौटते समय स्वच्छ जल भरकर और उसमें दूब आदि रखकर घर लौटती हैं।घर पर गौरी की मृत्तिका या काष्ट से निर्मित प्रतिमा की पूजा करती हैं। शीतला-अष्टमी से संध्या को घुड़ला घुमाती हैं। चैत्र शुक्ल तृतीया और चतुर्थी को घर में ढोकले बनाती हैं। पहले जल और जँवारो से पूजन करके ढोकलों के चूरमे का भोग लगाती हैं।प्रतिवर्ष इसी प्रकार पूजा करती हैं। विवाह के बाद भी गौरी पूजन चलता रहता है। जब तक वे अजूणा नहीं कर लेती तब तक पूजन अनिवार्य है। अजूणा करने वाली स्त्री अपनी सखी-सहेलियों को दांतन भेजकर निमंत्रित करती हैं और सबको बड़ा भोज देती हैं। इस अवसर पर उक्त लोकगीत गाया जाता है –

भंवर म्हानें खेलण द्यो गणगौर,

म्हारी सहेल्यां जौवे बाट, भंवर म्हाने खेलण द्यो गणगौर

माथां ने मैमद ल्याय, भंवर म्हारै माथां ने मैमद ल्याय

म्हारी रखड़ी रतन जडाव, भंवर म्हाने खेलण द्यो गणगौर

काना ने झालज ल्याय, भंवर म्हारे काना नै झालज ल्याय

म्हारा कुडल वैढ घड़ाय । (भंवर म्हाने)

इसी प्रकार के बोल सिर, हिवड़े आदि के लिये है । अन्त में

पगल्यां न पायल ल्याव भंवर म्हारा पगल्यां ने पायल ल्याव

म्हारी बिछियां लूँब लगाये, भंवर म्हाने खेलण द्यो गणगौर ।73

मेरे प्रियतम मुझे गणगौर खेलने जाने दो। मेरी सहेलियां बाट देख रही है, मुझे गणगौर खेलने जाने दो । भंवर, मेरे माथे के लिये मैमद, कानों में कुण्डल, सिर पर बोरला, हिवडे के लिये हार तथा पैरों के लिये पायल लाना तथा मेरी बिछियों पर लूंब लगवाना । मुझे गणगौर खेलने जाना है। अन्य सौभाग्यवती सहेलियां मेरी प्रतीक्षारत हैं । मेरे प्रिय मुझे गणगौर पूजण जाने दो।

गणगौर पूजन का एक और लोकगीत प्रस्तुत है –

गोरये, गणगौर माता, खोल ए किवाडी

बायर ऊबी, थाने पूजण आली

पूजो ये पूजन्ता वाली, कांइ वर मांगो

कान कंवर सो बीरो मांगा, राइ सी भौजाई

जमवट जामी बाबल मांगा, रातादेइ मायड

बडो दुमालिक काको मांगा, चुडला वाली काकी

फूस उड़ावन फूफो मांगा, कूडो धोवण बुआ

काजलियो बहनोई मांगा, सदा सुहागण बहना ।74

ऐ गौरी, मां पार्वती, अपने मन्दिर के द्वार खोलो हम तुम्हारी पूजने वाली, बाहर खड़ी हैं। मां ने द्वार खोले और पूछा मांगो बालिकाओं क्या क्या मांगती हो ? बालिकाओं ने कहा ''हमें कृष्ण जैसा भाई, रानी जैसी भोजाई, श्री सम्पन्न पिता तथा काका तया देवी तुल्य मातुश्री, चूडीवाली सुहागिन काकी, फूस उड़ाने वाला कमजोर फूफा तथा कूड़ा धोने वाली मजबूर बुआ, श्याम वणिय सुन्दर बहनोई तथा सुहागिन बहन, कृपया प्रदान करें। गणगौर की पूजा अर्चना, छोटी बालिकाओं, विवाह योग्य कुमारी कन्याओं तथा विवाहित महिलाओं द्वारा भी की जाती है।

गणगौयां रै मेले पैली या री जो जी

गणगौरयां रै मेले पैली, आया रीज्यो जी ।

ढोला था बिन रंग रंगीलो, फागण बीत्यो जावै छै ।

थारी नाजुक धण, मंहला बैठी, आँसू ढलकावे छै ।

रोटी खाता हो तो, पाणी, अठे आय पीज्यो जी ।

म्हारी दोराणी-जिठाणी दोनु घूमर घाले छै ।

म्हारा देवरिया-जेठूता मिल कर रंग उछाल छै ।

छोटी नणदुलो नै आय, समझाय दीज्यो जी ।

धरती रंग-रंगीली होकर, मन ही मन मुस्कावे छै ।

थारा साथीड़ा धीमा धीमा धमाला गावै छै ।

म्हारो सुपनो थे, सांचो कराय दीज्यो जी ।

गोरी-गोरी चांनणी में थारी, ओल्यू आवै छै ।

कोयल मीठी राग सुणां कर, म्हारो जी तरसावै छै ।

थारा सारा साथीड़ा नै रामा-स्यामा खीज्यो जी ।75

प्रस्तुत गीत नायिका की एक पाती अपने प्रियतम के नाम के रूप में है। इस पाती में गणगौर के मेले से पूर्व प्रियतम को बुलाया जा रहा है । नायिका कहती है कि फागुण तो तुम्हारे बिना जैसे-तैसे बिताया, आँसू बहाते हुए, अब (इस पत्र को ही तार समझते हुए) यदि रोटी खाते समय मेरे समाचार प्राप्त हों तो जल यहीं मेरे पास आकर ग्रहण करना । मेरे दोरानी जेठानी घूमर नृत्य करती हैं । मैं अकेली हूँ मेरा मन नृत्य करने को नहीं करता (देवर-जेठ रंग डालते हैं, छोटी ननद बाई हंसी मजाक करती हैं। प्रियतम मेरे सपने को सच करना। आने से पूर्व तुम्हारे साथियों को मेरा नमस्कार कहना । चांदनी रातों में जब कोयल बोलती है तब तुम्हारे विरह में तड़पती हू। गणगौर के मेले पूर्व तुम आये रहना ।

**घुड़ला :** ‘‘घुड़ले'', लोकगीत का सम्बन्ध एक ऐतिहासिक घटना से है । किसी दिन कोसाणा ग्राम तहसील बिलाड़ा (जोधपुर) की कुछ लड़कियां बस्ती के बाहर तालाब पर गौरी पूजन हेतु गई थी। उन लड़कियों का अपहरण अजमेर के सूबेदार के सैनिकों ने कर लिया। जोधपुर से सारंगजी खींची के साथ सेना भेजी गई । सारंगजी ने मुस्लिम सेनापति घुड़ले खां को तीरों से छेद कर मार डाला । कोसाणा की वे सब कन्याएं भी छुड़वा ली गई । वे कन्याएँ तीरों से बिधे हुए घुड़ले खां के सिर को लेकर गांव में घूमी। चैत्र बदी 8 की संध्या, स्त्रियां टोली बना कर कुम्हार के घर जाती हैं और वहां से एक अनेक छेदों वाली छोटी मटकी में एक जलता हुआ दीपक रखकर, घुड़ल्यो घूमेलो, गीत गाती हुई घर लौटती हैं

घुड़लो घूमेला जी, घुड़ले रे बांध्यो सूत ।

घुड़लो घूमेला जी, घूमेला, सुवागण वापरे आव

प्रताप जी रे जायो पूत, घुड़लो घूमेला जी घूमेला

सुहागन बायर आय, घुड़लो घूमेला जी घूमेला

तेल वलै घी लाय, घुड़लो घूमेला जी घूमेला,

मोत्यारां आंखा लाव, घुड़लो घूमेला जी घूमेला,

पीवर रो पीलो लाव, घुड़लो घूमेला जी घूमेला,

जापे रो लाडू खाव, घुड़लो घूमेला जी घूमेला ।76

घुड़ले के सूत बांध दिया है हम उसे घुमा रही हैं । आप सब अपने को सुरक्षित समझे । सभी सुहागिणों बाहर आ जावे, तेल तथा घी लावें, पीहर से आया पीला पहनें । घुड़ले खां के कटे हुए मस्तक को घुमाने से यह अर्थ निकलता है कि आततायी के आतंक का शमन अब हो गया सभी सुहागण नारी बाहर आकर ये तमाशा देख लें ।

चैत्र शुक्ल तृतीया और चतुर्थी को मेले लगते हैं जिनमें गवर की सवारी किसी जलाशय पर ले जायी जाती है। प्रायः राजा-महाराजा तथा सरदार लोग भी इन सवारियों में सम्मिलित होते हैं।

म्हा रे हाथा नेँ जँवारा अे क कोरो कूँडो जळ को भर्यो

म्हे तो सात सहेली अे क गवरल माता पूज रही

बायाँ पूजण पुजार्याँ अे क काँअी धन माँग रही ?

म्हे तो लाव रे लिछमी अे क अन-धन माँग रही

था ने लाव ने लिछमी अे क अन – धन देस्याँ

बायाँ पूजण पुजार्या अे क काँअी धन माँग रही ?

म्हे तो सासू जसोदा अे क किसन वर माँग रही

था ने सासू जसोदा अे क किसन वर देस्याँ77

पूजन के लिए मेरे हाथों में जवारे हैं और कोरा कूंडा जल से भरा है। मैं सात सहेलियों के साथ गौरी की पूजा कर रही हूँ। माँ गौरी पूछती है – हे पूजनेवाली बाइयो, तुम क्या-क्या धन माँगती हो? हम अन्न धन आदि लक्ष्मी माँग रही हैं। गौरी माता यह देने के लिए राजी है और फिर माँगने को कहती है। पुजारिनें यशोदा जैसी सास और कृष्ण-सा वर माँगती हैं और गौरी देने का वचन देती है।

गौरी को पूजनेवाली राजस्थानी कन्याएँ ऐसी अभिलाषाओं से भरे अनेकों गीत गाती हैं। सच्ची लगन और कठिन तपस्या के बाद गौरी ने हर को पाया था। उसी आदर्श को आगे रखकर कुमारिकाएँ गिणगौर के त्यौहार को मनाती हैं और एक पखवाड़ा व्रत, पूजन और भजन में बिताती हैं। उनका दृढ़ विश्वास होता है कि इस अवसर पर पवित्र ह्रदय से किये हुए उनके मनोरथ गौरी के वरदान से सफल होते हैं।

गौरी-पूजन करनेवाली कन्याएँ शीतला अष्टमी से संध्या के समय घुड़ला घुमाती हैं। घुड़ला एक छोटा सा छिद्रोंवाला घड़ा होता है जिसमें दीपक जलता रहता है। उसको सिर पर रखकर बालिकाएँ अपने माता-पिता आदि संबंधियों तथा समस्त परिचित लोगों के यहाँ गीत गाती हुई जाती हैं और वे लोग गेहूँ के आखे तथा रुपये-पैसे घुड़ले में डालते हैं ।

घुड़लो घूमै छै जी घूमै छै

घुड़ले रे बाँध्यो सूत

घुड़लो घूमै छै जी घूमै छै

अीसरजी रे जायो पूत

घुड़लो घूमै छै जी घूमै छै

सुवागण बायर आव

घुड़लो घूमै छै जी घूमै छै

तेल बळै, घी लाव

घुड़लो घूमै छै जी घूमै छै

मोत्याँ रा आखा लाव

घुड़लो घूमै छै जी घूमै छै

पीवर रो पीळो लाव

घुड़लो घूमै छै जी घूमै छै

जापे रो लाडू लाव

घुड़लो घूमै छै जी घूमै छै78

मांगलिक सूत्र से बाँधा हुआ घुड़ला घूम रहा है। ईसर जी (शंकर) के पुत्र जन्मा है। हे सुहागिन, घर से बाहर निकल । हमारे घुड़ले में तेल का दीपक जलता है, उसके बदले में घी ला, मोतियों के अक्षत ला, पीहर का ‘पीला’ ला और ला प्रसूति के लिए बनी मिठाई का लड्डू। इन मांगलिक द्रव्यों को देकर घुड़ले का स्वागत करो।

जँवारा : गौरी-पूजन के लिए शीतला-अष्टमी के पश्चात् एक मिट्टी के छोटे से कंड़े में गेहू या जौ बो दिये जाते हैं। उनके बढ़े हुए अंकुरों का जँवारा कहते हैं। इन जँवारों से गौरी-पूजा की जाती है।

अूँचे मगरे के जी म्हाँ रा हरिया जँवारा

लुळिया जँवारा, नीचे मिरगा जव़ चरै

मिरगा घेरो नी, ब्रह्माजी रा अीसर जी

घेरो नी वन रा मिरगला

म्हे क्यूँ घेराँ, ओ म्हाँ री गवर साँवळड़ी

गवर पातळड़ी, बाअी म्हाँ री सोदरा सासरै

मिरगा घेरो नी, वसदेवजी रा श्रीकिसनजी

घेरो नी वन रा मिरगला

म्हे क्यूँ घेरा, ओ म्हाँ री रुकमण साँवळड़ी

रुकमण पातळड़ी, बाअी म्हाँ री सोदरा सासरै79

ऊँचे टीले पर मेरे लहलहाते हुए हरे जवारे हैं। नीचे हरिण जौ चर रहे हैं।। गौरी कहती है—हे ब्रह्माजी के पुत्र ईश्वरजी, इन वन के हरिणों को हटाओ तो ! ईश्वर उत्तर देते हैं—हे मेरी सुन्दर गौरी, मैं क्यों हटाऊँ, मेरी बहन सुभद्रा तो ससुराल में है ।

इसी प्रकार कृष्ण आदि अन्य देवताओं और परिवार के स्त्रीपुरुषों के नाम ले-लेकर यह गीत गाया जाता है।

हरिण न हटाने का कारण क्या है ? भाई अपनी बहन के जवारों की रखवाली करने के लिए तैयार है परन्तु वह तो ससुराल है। पत्नी के प्रति यह विनोदपूर्ण संकेत है कि यदि उसको अपने जवारों को मृगों से बचाना है तो अपने भाई को क्यों नहीं बुला भेजती । पति भाई का काम क्यों करे !

राजस्थानी स्त्रियों का सब से प्यारा त्यौहार तीज है। यह सावन-भादो में पड़ता है। राजस्थान का सौन्दर्य वर्षा में खिलता है जब वहाँ चारों ओर उल्लास ही उल्लास दीख पड़ता है। इस समय प्रायः सभी स्त्रियाँ अपने पीहर आ जाती हैं। नव विवाहितों को ससुराल से बुलाने के लिये उनके भाई जाते हैं। भाई की प्रतीक्षा बड़ी आतुरता के साथ की जाती है। क्या बालिकायें और क्या युवतियाँ सभी सखी-सहेलियों के साथ झूला झूलती हैं और तरह-तरह के आनन्द मनाती हैं।

सावण तो लहर्यो भादवो रे

बरसै च्यारूँ कूँट

म्हारा मोरला, सावण लहर्यो रे

सावण बाअी गवराँ सासरे

कन्हैयो वीरो लेणिहार

म्हारा मोरला, सावण लहर्यो रे

सावणियो सुरंगलो रे लाल

आसी वीरो कन्हैयालाल पावणो

लासी बाअी गवराँ ने बैलड़ली जुपाय

म्हारा मोरला, सावण लहर्यो रे80

सावन भादों लहरा रहा है। चारों ओर वर्षा हो रही है, हे मेरे मोर, सावन लहरा रहा है। सावन में बहिन ससुराल में है। उसको कन्हैया भाई लिवा लाने वाला है। सावन सुरंगा है। भैया कन्हैया पाहुना बन कर लेने आवेगा और गौरी बाई को बैलगाड़ी में बिठा कर पीहर लावेगा। हे मेरे मोर, सावन लहरा रहा है।

लाग्यो लाग्यो, मा, सावाणिये रो अे मास

सावाणिये रो अे मास, तीज तिव्हाराँ, मा, वावड़ी जे

ओर सहेली, मा, पीवरिये ने अे जाय

पीवरिये ने अे जाय, हूँ तो तरसूँ, मा, सासरे जे

उडज्या, उडज्या, म्हारा नीमड़ली रा रे काग

नीमड़ली रा रे काग, वीरो आवै मेरो पावणो जे

बोलूँ बोलूँ, मा, बालाजी रा अे रोट

बालाजी रो परसाद, चढ-चढ देखूँ, मा, डागळे जे

आयी आयी, मा पीवरिये री अे कूँज

पीवरिये री अे कूँज, आय’र बैठी, मा, नीमड़ी जे

कूँजा राणी, थारे गळ में कँठलो अे बाँध

गळ में कँठलो अे बाँध, पगल्या बाँधा थारे घूघरा जे

कहज्यो कह्ज्यो म्हारी माअूजी ने अे जाय

माअूजी ने अे जाय, वीरो भेजै ज्यूँ लेण ने जे81

ए माँ,सावन मास लग गया। तीज का त्यौहार लौट आया। मेरी सहेलियाँ अपने अपने पीहर को जा रही हैं। अकेली मैं ससुराल में तरस रही हूँ। अरे नीम पर के काग ! उड़ जा उड़ जा, यदि मेरा भैया पाहुना आवे । मैं हनुमानजी को मनाती हूँ और छतपर चढ़ चढ़ कर बाट जोहती हूँ। ए माँ, पीहर की कूँज आकर नीम पर बैठी है। ए कूँज रानी, तेरे गले में कंठी बाँधूँगी, तेरे पैरों में घुंघरू पहनाऊँगी – तू मेरी माँ से जाकर कहना – इतना सा कहना – भैया को मुझे लिवाँ ले जाने के लिये भेज दे। तीज पर भाई की प्रतीक्षा के-पीहर जाने की उत्कट इच्छा के गीत अनेक हैं, जिनमें स्त्री ह्रदय के सच्चे भाव प्रवाहित हुए हैं।

राजस्थान में होली के त्यौहार का अपना ही महत्त्व है। रंगों के इस त्यौहार को राजस्थान ने नया आयाम दिया है।

म्हारी घुमर छे नखराळी ए माँ,

घूमर रमवा म्हे जास्याँ ।

म्हांने राठौड़ां री बोली प्यारी लागे ए मां.

म्हाँने राठौड़ाँ रा पेच बाला लागे ए मां,

म्हाँने राठौड़ा रे भल दीज्ये ए माँ,

घूमर रमवा म्हे जास्याँ।82

मेरी घूमर बड़ी श्रृंगार प्रिय है। माँ मुझे घूमर खेलने जाने दो। हमें राठोडों की बोली प्यारी लगती है। हमें राठोड़ों के पेच, साफा, पाग आदि अच्छे लगते हैं - राठोडों के यहाँ भले ही हमारा विवाह करना, मुझे घूमर खेलने जाने दो।

बृज भूमि की होली प्रसिद्ध है। यहाँ की जैसी मतवाली, रंगीली तथा मन मस्तानी होली, देश के दूसरे भागों में नहीं खेली जाती है। स्वयं बृजेश्वर, बांके बिहारी श्रीकृष्ण ने रासलीला तथा होली खेलने की परम्परा को पनपाया । प्रस्तुत रसिया में इसी प्रकार का एक लोक चित्रण है । यह भरतपुर, करौली तथा हिण्डौन का एक प्रसिद्ध लोकगीत है –

ऐरी मोपै दियो है, हयो रंग डार

जसोदा तेरे लाला ने, हरो रंग मोपै दीन्हों डार,

विशाखा की दइ चूनर फार, हाथ पकर, बैया झकझोरी

ऐरी गोरे मुख पै मल्यो है गुलाल, हरे हरे कलश दिये री भरवाय,

घोल दइ केसर हालो हाल,

भर पिचकारी, मेरे सन्मुख मारी, ऐरी मेरो टूट्योरी गले को हार

बिरज में छाय री अजब बहार, सखा सब लीन्है है बुलवाय,

चंग बजावत गावें होरी, ऐसी मोरी कुंचुकि कर दइ लाल ।

जसोदा तेरे लाला ने ।83

एक गोपी कह रही है कि भगवान् कृष्ण ने, ऐ यशोदा मुझ पर हरा रंग डाला, विशाखा की चुनर फाड़ दी, मेरा कर पकड़ के झकझोरा तथा मेरे गोरे मुख पर गुलाल मल दी एवं मेरी कंचुकी को लाल रंग से सराबोर कर दी । ऐ यशोदा, कृष्ण ने मेरा गले का हार भी तोड़ डाला । इस प्रकार अपने सब सखाओं के साथ बहुत धमाल मचाई। यशोदा इस शिकायत का क्या उत्तर देती, क्योंकि इसका उत्तर तो बस ‘होली' है ।

एक अन्य गीत में सास और सजन की मनोवृत्ति का चित्रण किया गया है तथा मिलने का आनंद अधिक देर तक प्राप्त करने के लिए सूरज से देर में उदय होने की प्रार्थना की गई है

रसिया फागण आयो।

वार कूंट रो चोतरो हो रसिया,

जिसपे कातूं सूत।

तो सासू मांगे कूकड़ी,

तो साजन मांगे रूप। रसिया,

दन्यू दांगा कूकड़ी हो रसिया

तो रात्यूं दांगा रूप हो। रसिया,

चरा चरी रो बेवड़ो हो रसिया

तो मधरी चालूं चाल

सासूजी नरखै बेवड़ो हो रसिया.

नै साजन नरखै चाल। हो रसिया,

सुरज थाँने पूजती

तो भरभर मोत्याँ थाल

छनेक मोड़ो ऊगज्यो हो

म्हारा भंवर चढे दरबार।

रसिया फागण आयो ।84

रसीले! फागुन महीना आया। चार कोनों का चबूतरा है जिस पर बैठकर मैं सूत कातती हूँ। सासु सूत कूकड़ी माँगती है और साजन माँगते हैं रूप। दिन में देंगे कूकड़ी और रात में देंगे रूप। चरू और चखी का बेवड़ा (पानी भरने का बर्तन) है जिनको सर पर रखकर मैं धीम चाल से चलती हूँ। सासुजी मेरा बेवडा देखती है और साजन देखते हैं मेरी चाल । सूरज आपको मोतियों के थाल भर-भर पूजू थोड़ी देर से निकलना,नहीं तो मेरे प्रियतम मुझे छोड़कर नौकरी पर दरबार में चले जाएँगे । रसीले ! फागुन महीना आया ।

फागुन के दिनों में गाँव की भोली-भाली गोरियाँ सीधे-सरल शब्दों में गाती हैं –

चाँदा तो थारे चानण रसिया।

पान्यो गई जी तलाव रसिया।

फागण में तो फागणियो रंगावो रसिया।

होली खेलो रसिया, फागण आयो ।85

रसीले प्रियतम! फागुन के महीने में फागणिया (वस्त्र) रंगवा दो । होली हमारे संग खेलो, फागुन आ गया।

इस पर पति उत्तर देता है

राजी राजी बोलतनै फागण्यो रंगाद्यूँ।

राखू म्हाँरी सुंदर घण ने जीव की जड़ी।

गुबाल की छड़ी, मिश्री की डली। फागण आयो ।

पति कहता है कि तुम राजी राजी बोलो, (मीठा) तुम्हें फागणियाँ रंगा दूंगा। मैं मेरी प्रिया को जीवन जडी, गुलाब की छड़ी और मिश्री की डली के समान रखूँगा। फाल्गुन आ गया है।

होली आई, ए सहेल्यां,

मिल खेला लूर। होली आई ए।

कोई कोई ओढयां, झीणी झीणी चूनड़,

कोई कोई ओढयां दिखणी चीर । होली आई ए।

कोई कई पहर्यां रिमझिम बिछियाँ,

कोई कोई पहर्या पायलड़ी। होली आई ए।

रिमझिम रिमझिम विछियां बाजै,

ठणक-ठणक बाजै पायलड़ी। होली आई ए।

होली आई ए; सहेल्याँ मिल खेले लूर । होली आई ए।86

होली आई है। सहेलियों आओ। मिलकर होली खेलें। किसी किसी ने बारीक चूंदड़ी ओढ़ी है, किसी-किसी ने दक्षिणी चीर । साथिनों आओ। मिलजुल कर होली खेलें। किसी किसी ने रुनझुन बजने वाले नुपूर पहने हैं, किसी किसी ने झनकारने वाली पायल। नुपूर-बिछिया बड़े रुनझुन बजते हैं और पायल छमक छुम छम छमाती हुई ठनकती है। होली आई है। सखियों आओ, सब मिलमिल कर होली खेलें ।

कुण मारी पिचकारी ।

मोरी ए वदन में कुण मारी पिचकारी ।

चढता जोबन में कुण मारी पिचकारी ।

माथा ने मैंमद, अधक वराजै,

तो रखड़ी री छब न्यारी जी ।

बाईसा रा बीरा सासुजी रा जाया ।

तो साजन मारी पिचकारी ।

कुण मारी पिचकारी ।

गोरी रा बदन में कुण मारी पिचकारी ।87

गोरी के शरीर पर किसने रंगभरी पिचकारी मारी? मुझे बताओ। मेरे चढ़ते यौवन पर किसने पिचकारी मारी ? मस्तक पर मेंमद सुशोभित है; लो रखड़ी की छबि भी अनूठी है। ननँद बाई साहिब के भाई, सासजी के पुत्र (मेरे) प्रियमत ने ही यह पिचकारी मारी है।

ओ म्हाराँ चाँद सूरज नणदोई सा,

म्हें तो फाग खेलबा आईस्या।

हें तो बाईसा ने लारौ लाइस्या;

ओ म्हाराँ चाँद सूरज नणदोई सा ।।

ओ म्हारा सूरज किरण नणदोई सा,

म्हाँसा माता ने मैंमद लाओ सा ।

म्हाँरी रखड़ी रतन जड़ाओ सा,

म्हाराँ हिवड़ा ने हाँस मंगाओ सा।

ओ म्हाराँ चाँद सूरज नणदोई सा ।

म्हाँरी बायाँ ने बाजू लाओसा।

म्हाँरै चुड़ले चूँप दिराओ सा,

ओ म्हाराँ चाँद सूरज नणदोई सा ।।88

हे हमारे चंद्र और सुरज साद्दश्य ननँदोई, हम आपसे फाग खेलने आई हैं और साथ में अपनी बाई सा (आपकी पत्नी) को भी लाई हैं। हमें इस खुशी में आप पुरस्कार स्वरूप मैंमद, रखड़ी, हाँस और चूँप आदि गहने रतन जड़ाकर दीजिए ।

**होली का डफ**

प्रस्तुत धुन जयपुर, शेखावाटी क्षेत्र की होली-गायन की प्रमुख धुन है । इस धुन पर सैकड़ों लोकगीत प्रचलित हैं। बसन्त पंचमी के बाद से ही गांवों प्रमुख स्थलों पर डफ बजाने वाले रात को एकत्रित होते हैं तथा गाते हैं, “जादू डार्यो रे सुवा पर रतन नारी मैंना जादू डार्यो रे” होरी है। प्रस्तुत गीत भी इसी धुन पर डफ पर गाया बजाया जाता है--

आछयो जी पियाजी म्हानै मैमद घड़ायद्यो

तो रखड़ी घड़ा द्यो पिया इबकी घड़ी रे, पलक की घड़ी

डफ काये को बजायो रे बलम रसिया ।

धीमा धीमा बोल गौरी, मैमद, घड़ायस्यां

तो रखड़ी घड़ा द्यां, इब की घड़ी रे पलक की घड़ी

थारो डफ बाजे, सारो इन्द्रगढ़ गाजै

तो सूती नार चिमक जागै (डफ काये)

इसी प्रकार आभूषणों के बोल हैं ----

आछयो जी पिया जी म्हाने गजरो मंगवाद्यो

तो चुड़ली चितरायद्यो इब की घड़ी रे पलक की घड़ी,

धीमी-धीमा बोल गोरी चुड़लो चितरायस्यां,

मैं तो राखू म्हारी धण ने जीव की जड़ी

थारो डफ बाजे म्हारो सारो घर गाजे तो सूती नार

चिमके जागे (डफ)89

डफ किसलिये बजा रहे हो प्रियतम तुम्हारी डफ की आवाज से सारा घर तथा महल, किला सब गुंजायमान हो रहा है । मुझे तुम सिर के लिये मैमद, हाथों में बाजूबन्द, पैरों में पायल, घड़वा दो, गजरा पहनाओ, मेरे चुड़ले को चित्रित करवावो । इसी समय पति ने कहा धीमे-धीमे बोल (कोई सुन लेगा) मैं तुम्हारी सभी मांगे पूरी करूंगा क्योंकि "होली है” तथा इस रसीले बसंती त्यौहार में प्रियतमा की सभी मांग पूरी करूगा ।

**श्रम गीत, कृषकों के गीत :**

भारत-भूमि में कर्म की महत्ता असंदिग्ध रूप से स्वीकार की गयी है। हमारे यहाँ के महापुरुषों ने 'कर्मण्येवाधिकारस्तु मा फलेषु कदाचन' जैसा अमर सन्देश दिया है और यहाँ की जनता-जनार्दन ने भी 'उद्यमेन हि सिध्यति कार्याणि न मनोरथे' के रूप में स्वीकार किया है। राजस्थान में प्रचलित 'कांम प्यारौ चांम प्यारौ कौनी' कहावत भी उक्त प्रसंग की ही व्याख्या करती है। मानव स्वभावतः संगीत-प्रेमी है। कार्य-भार को हल्का देत मानव कुछ-न-कुछ गाना चाहता है। कर्म करते समय जो भी गीत गाये जाते हैं उन्हें क्रिया-गीत या श्रम-गीत नाम से सम्बोधित किया जाता है। कर्म के साथ इन गीतों को गाने से समय की सुदीर्घता भी नहीं खलती। पूरा दिन ऐसे ही बीत जाता है जैसे एक दो घंटे ही व्यतीत हुए हैं। इसके अतिरिक्त कुछ कार्य ऐसे होते हैं जो समूह द्वारा सम्पादित ये जाते हैं और कुछ अकेले व्यक्ति द्वारा ही। यथा-'पांणत (क्यारियों में पानी देना) अकेला व्यक्ति ही करता है, चक्की अकेली स्त्री भी चलाती है। ऐसे अवसर पर वातावरण केसनेपन को नष्ट करने के लिए श्रम-गीतों का निश्चित रूप से महत्त्व है। राजस्थान में खेतों पर काम करते समय समूह द्वारा गाये जाने वाले श्रम-गीतों को ' भणत' और कहींकहीं 'राम-भणत' भी कहा जाता है।

प्रकृति के पश्चात इस सृष्टि में सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण वस्तु मानव की अपनी मेहनत है। आदिम मानव की सामूहिक आवश्यकता तथा उसकी सामूहिक प्रतिभा को व्यक्त करने के लिए कविता ही एकमात्र माध्यम थी। श्रम की तालों के बीच कविता ने अपना जन्म ग्रहण किया और तदनन्तर श्रम का सहज, सुन्दर और मधुर बनाया था। श्रम-कविता का वर्ण्य-विषय था और कविता-श्रम का रूप। जैसा कि विदित ही है कि क्रिया करते समय अनेक गीत गाये जाते हैं। राजस्थान में हमें खेतों पर काम करते समय गाये जाने वाले गीत, चक्की चलाते समय गाये जाने वाले गति और भवन निर्माणादि के अवसर पर कार्य करने वाले मजदूरों-मजदूरिनों द्वारा गाये जाने वाले अनेक गीत मिलते हैं, जिनमें उनके कार्यों का ही वर्णन मिलता है। इस प्रकार क गतिों में अनेक उदाहरण ऐसे भी मिलते हैं जिनमें कार्य के प्रति अत्यधिक उत्साह भी दिखाया गया है और कभी अरुचि भी प्रकट हो गयी है। इन लोक-गीतों में ही लोक की वास्तविक परिस्थिति प्रकट हो पायी है। 'घरटी फेरते समय गाये जाने वाले एक गीत में ऐसी ही यथातथ्य स्थिति का चित्रण हुआ है जिसमें गीत की नायिका तो नींद लेना चाहती है, पर सास के भय से उसे सवेरे जल्दी उठकर चक्की चलानी पड़ रही है –

‘रांमजी सणण सणण बोलै रात

घरटी री वेळा होयगी जी राम

रांमजी पीयूं पीसू लीलोड़ी जंवार

पाड़ोसण पीसै बाजरौ जी राम

रांमजी ऊनालै री ठाडी ठाडी लैर

घरटी पे आवै नींदड़ी जी राम

रामजी सासूजी रौ बाळण जोग संभाव

मण भरियौ सूपै पीसणौ जी राम।'90

राजस्थानी श्रम-गीतों के सम्बन्ध में यह विवेच्य है कि कई गीतों का कुछ अंश एक सदस्य द्वारा गाया जाता है और कुछ अंश समूह द्वारा। कभी-कभी एक पूरी पंक्ति प्रथम गायक द्वारा गायी जाती है और उसी पंक्ति को सारा समूह गाता है और कभी-कभी उस पंक्ति के अतिरिक्त दूसरी पंक्ति ही समूह द्वारा गायी जाती है। इसके अतिरिक्त कभी एक पंक्ति का कुछ अंश प्रथम गायक द्वारा गाया जाता है और शेष अंश को समूह गाकर पूरा करता है। भणतों में ऐसी ही गायन-शैली दिखायी देती है। पहले हम यहाँ एक ऐसा गीत प्रस्तुत कर रहे हैं जो पावस-काल में खेत पर कार्य करते समय स्त्रियों द्वारा सामूहिक-गान के रूप में गाया जाता है। हरियाळौ' नामक गीत की एक पंक्ति एक स्त्री-नेता द्वारा गायी जाती है और शेष स्त्रियाँ दूसरी पंक्ति (टेर पंक्ति) को गाती है। इस गीत में फसल बोने से लेकर फसल काटने तक का वर्णन मिलता है –

'सय्यां म्हारी में हरियाली बूठीजै क्यूं

यूं म्हारा साजन यूं जी यूं

सय्यां म्हारी में हरियाळौ वाईजै क्यूं

यूं म्हारा साजन यूं जी यूं

सय्यां म्हारी में हरियाळौ निनांणीजै क्यूं

यूं म्हारा साजन यूं जी यूं

सय्यां म्हारी से हरियाळौ रुखालिजै क्यूं

यू म्हारा साजन यूं जी यूं।'' 91

इसी प्रकार क्रमश: चूंटीजै, गाहीजै, फटकीजै, पीसीजै, पोईजै, पुरसीजै, जीमाईजे आदि कृषि-कर्म सम्बन्धी एवं भोजन-निर्माण सम्बन्धी क्रियासूचक शब्दों का प्रयोग करके इस गीत को सम्वर्द्धित किया जाता है। खेत पर कार्य करते समय पुरुष-समूह द्वारा जो गीत गाये जाते हैं, उन्हें 'भणत' कहा जाता है। प्रायः इन गीतों में असम्बद्ध भाव एवं चित्र देखने को मिलते हैं। पर कई ऐसे भी गीत हैं जिनमें कर्म सम्बन्धी भाव का भी विवेचन पाया जाता है। भणतों की भी गायन-शैली अपना अलग अस्तित्व रखती है। एक पंक्ति एक नेता द्वारा तो दूसरी समूह-गान के रूप में, केवल एक पंक्ति का कुछ अंश निरंतर समूह द्वारा उच्चारित किया जाना, एक पंक्ति का कुछ अंश गायक-नेता द्वारा और कुछ नियत शब्दों (यथा- भजले राम, भज म्हारी जोड़ी रामन्नाम रे भाई) का समूह द्वारा गीत का सहोच्चारण आदि अनेक रूपों में भणत की गायन-शैली के दर्शन होते हैं। उदाहरण रूप में यहाँ एक भणत के कुछ अंश को प्रस्तुत किया जा रहा है –

'धोरां धोर में जंवार

कड़बी काटौ रे मोटियार

धोरां लीलोड़ी जंवार

कड़बी काटौ रे मोटियार

कड़बी रावळी रे मोटियार

आगै हालौ रै मोटियार।' 92

श्रम परिहरण हेतु मानव स्वभावत: कुछ गाता ही रहता है। वस्तुतः मानव अपने जीवन की परिस्थितियों से भूलकर भी दूर नहीं जा सकता। उसकी प्रत्येक अभिव्यक्ति में प्रत्यक्षत: या परोक्षत: जीवन सम्बन्धी चर्चा देखने को मिल ही जायेगी। अतः श्रम-गीतों में मानव-जीवन के बहुतेरे चित्र चित्रित हैं। उसकी व्यथाओं, विडम्बनाओं, निराशा आदि के साथ ही उसके जीवन के सत्य और उल्लास ने भी इन गीतों में स्वर पाया है। इन गीतों में गार्हस्थिक जीवन की सुखात्मक अनुभूतियों के साथ विविध दुख भी वर्णित हैं। संयोग के साथ वियोग भी विवेचित है। लोकप्रिय वस्तुओं का उल्लेख हुआ है। सारांश में कह सकते हैं कि लोक-मानव की चिन्तन-शक्ति इन श्रम -गीतों में अनेक रूपों में प्रकट हुई है। क्रिया से असम्बन्धित श्रम-गीतों में से कई गीतों में तो श्रम में सहयोग देने वाली वस्तुओं का विवेचन हुआ है और कई में केवल मानवजीवन की परिस्थितियों का ही। इन गीतों का लक्ष्मण भी कर्मशील है

'खाधै कवाड़ी हाथां बांसलौ, देवर लिछमण जी

कोई दौड़िया बागां जाय, हर रौ हिंडोळौ ।'93

जब लोक का प्रत्येक आराध्य देव ही कर्म-रत है। तो लोक का कर्म-प्रिय होना स्वाभाविक ही जान पड़ता है। एक गीत में कृष्ण खेत की रखवाली करता दिखाया गया है। यशोदा खेत पर खाना ले जाने वाली ‘भतवारी' के रूप में चित्रित है।

किसान की पत्नी की पिटाई तो प्राय: हो ही जाती है। 'गुमाना हाळीजी' नामक गीत में इस बात का भी उल्लेख हुआ है। अतः यदि लोक-गीतों को लोक-जीवन का दर्पण कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी

'सूळां री तौ लीनी हैं कांबड़ी हां रे हाळीजी

झड़झड़ झूरड़िया है मोर गुमाना हाळीजी।' 94

इन गीतों में नारी की आभूषण-प्रियता का भाव ही प्रकट हुआ है। उसने जी-तोड़ मेहनत की है तभी तो वह पति से आभूषण प्राप्त करने की स्वयं को अधिकारिणी मानती है। पर उसकी इच्छा की पूर्ति होती ही नहीं। उसके मन की मन में ही रह जाती है –

‘म्हारै हथेळियां रै मांय छाला पड़ग्या म्हारा मारूजी

म्हें पाळौ कींकर बाढूं जी

डेरां रौ काटियौ म्हे खेतां रौ बाढ़ियौ'

औ तौ बाड़ां रौ म्हांसू न काट्यौ जावै म्हारा मारूजी

म्हें पालौ कींकर बाढू जी

रखड़ी तौ म्हारा पिवरिया घड़ाई

आ तो सांवळी री म्हारै मन में रैगी म्हारा मारूजी

म्हें पाळौ ककर काटू जी।95

श्रम-गीतों में अनेक भणतें ऐसी भी मिलेगी जिनमें क्रिया से सम्बन्धित भावों में अभिव्यंजना नहीं हुई है। इनमें कंहीं तो पूर्णतः पूर्वापर सम्बन्ध रहित चित्र चित्रित हैं । कहीं सामाजिक जीवन की अभिव्यक्ति हुई है। कुछ भणतों में कृषि-कार्य में उपयोगी उपादानों की विवेचना हुई है। यहां एक ऐसी भणत उद्धृत की जा रही है जिसमे ‘दातली’ का वर्णन मिलता है–

'अबकै तो घड़ावू म्हारी भावज खेती रौ दातळौ

आरणिया धुकावू म्हारी भावज मांणक-चौक में

धाकणियौ धुकावूं म्हारी भावज चांनण-चौक में

लवारियौ बुलावू म्हारी भावज पूरबियै देस रौ

डांडौ तो दिरावू म्हारी भावज पूरबियै देस रौ

डबीणी तो बंधावू म्हारी भावज बासग नाग री

घूघरिया दिरावू म्हारी भावज डावलियै हाथ सूं

घूघरियां रै रणकै झण्कै आवणदै भावज दातळौ

दूधां रा पीयौड़ा देवर बावै नीं दातळौ ।'96

इसके अतिरिक्त हम एक ऐसी भणत भी प्रस्तुत करना चाहते हैं जिसमें प्रत्येक पंक्ति का कुछ अंश एक व्यक्ति द्वारा एवं टेर (जिसे हम उसी पंक्ति का अंश या अर्द्ध-टेर कह सकते हैं) वाला अंश समूह द्वारा गाया जाता है

|  |  |
| --- | --- |
| **एक व्यक्ति द्वारा** | **समूह द्वारा** |
| थारै पाली वाळौ पीठौ रे चन्दवा | भण म्हारी जोड़ी रामन्नै |
| थारै देवण नै सोजत री मेहंदी | भण म्हारी जोड़ी रामन्नै |
| थारै नैणां में सुरमै रौ काजळ | भण म्हारी जोड़ी रामन्नै |
| थारै देवण नै हिगळूरी टीकी | भण म्हारी जोड़ी रामन्नै |
| थारै देवण नै गोठण रौ गोटौ | भण म्हारी जोड़ी रामन्नै97 |

भणतों में कहीं-कहीं डिंगल के अति प्रसिद्ध अलंकार वयण-सगाई के के सुन्दर उदाहरण मिलते हैं। यथा

पीतळियौ पीलांण रे भाई

कै धौळां रौ मोल रे भाई

हाली रा हजार रे भाई

सींगोटी रा साठ रे भाई

नैणां रा नवलाख रे भाई

कांना रा किरोड़ रे भाई

पूठां रा पचास रे भाई98

इन श्रमगीतों में प्रकृति के भी बहुत ही सुन्दर और रम्य चित्र चित्रित किये गये हैं।ऐसे गीत प्रकृति की रमणीय क्रोड़ में निवास करने वाली जातियों की कोमल कल्पनाशक्ति एवं प्रकृति-प्रेम के परिचायक हैं। इन गीतों में इन जातियों के अपूर्व साहस का भीविवेचन मिलता है।

श्रम गीतों में अनेक गीत ऐसे हैं जो कृष्ण एवं गोपिकाओं या राधिका की मधुर छेडखानियों तथा उपालम्भों को अपने में सँजोए हुए हैं। इन गीतों में कृष्ण और राम, राधा और सीता को एक ही मान लिया गया है, ऐसा प्रतीत होता है। कृष्ण का स्थान राम द्वारा सहज ही में लिया जाता है। चक्की चलाते समय या चरखा चलाते समय औरतें इसी भाव के भी गीत गाया करती हैं, उनमें से एक उदाहरण प्रस्तुत है

'चांदड़लै री निरमळ रात

आधी रा सरवर सांचरी ओ राम

रांमजी सांमी धकिया नंदजी रा लाल

म्हांनै गाय दूवाड़ौ छालरी ओ राम

रांमजी लांबी लांबी दूधड़लै री धार

म्हारी चूंदड़ होयगी चीगटी ओ राम

रांमजी जायोडै नै बरज नै राख

म्हनै (गूजरियां) जणी जणी देवै ओळबा

बहू से गूजरियां री जात कुजात

साची री झूठी भेळदै ओ रांम।' 99

इन श्रम-गीतों में नारी के मान-प्रसंग के चित्र भी मिल जायेंगे, भणतों में अनमेल विवाह के प्रति किया गया व्यंग्य मिल जायेगा, असार-संसार की क्षण भंगुरता का उल्लेख मिलेगा, पुनर्जन्म में मानव-देह प्राप्त करने हेतु प्रार्थना और अब पुण्य करने के लिए किये गये वादे इन गीतों में मिल जायेंगे। सूर-जैसी संख्य भाव की भक्ति के भी यहीं दर्शन होंगे और तुलसी की-सी विनयशीलता भी इन गीतों में मिलती है।

कोई काम करते समय थकावट मिटाने के लिए गाये जाने वाले गीतों में जँतसार, रोपनी, सोहनी आदि है, जिन्हें श्रमगीत कहते हैं। पैदल यात्री गीत गाकर अपनी थकान मिटाते हैं, तो पालकी ढोने वाले कहार गीत गाकर मार्ग तय करते हैं। खेतिहर मजदूर गीत गाकर अपनी थकान मिटाते हैं तो चरवाहों के गीतों से जंगल सरस हो उठता है। इसके साथ साथ जनजाति की श्रमशीला महिलाएँ श्रम के मध्य अपने दुःखसुख और आशा-निराशा को गीत का रूप देती हुई परिश्रम करती हैं। जीवन की दैनिक समस्याएँ, पारिवारिक स्थिति, वैयक्तिक सुख-दुःख, सामाजिक या सामयिक स्थिति, मालिक मजदूर आदि के भाव इस प्रकार के गीतों के वर्ण्य विषय है। आदिवासी नारी समाज की समस्याएँ, बेमेल विवाह,बहुविवाह, बालविवाह, परिवार के अन्य सदस्यों के व्यवहार आदि का वर्णन इन गीतों में होता है। इनके प्रमुख कार्य चक्की चलाना, पानी भरना, खेतों में काम करना, जंगल से लकड़ी लाना, खाना बनाना आदि है। इन्हीं से संबंधित इनके श्रमगीत है, जिनसे इनका जीवन प्रभावित होता है।

“चिड़कली री चांच खुली छिपण लगा तारा

चंदकळा सीतळ भई भाण का उजाळा

जागियै महाराज कंवर नंद के दुलारा

दही को धमड़को काना नै भावै

पो फाटी जद पगड़ौ हुयौ जी ।

उठतो ही आड़ौ पकड्यौ जी रामा

खिड़की सांवरिया लाल किण विद खोलूं

रात रमिया ओ जठे जाओ परा ओ राम

थाने पहुंचाय देअूं था'णे बाप रे ओ राम

पीवरिये सांवरिया लाल किण विद जाअूं

उठै मावड़ी जायोड़ा मोकळा ओ राम100

चिडिया की चोंच खुल गयी तारे छुपने लग गये, चंद्रमा की कलाएँ शीतल हो गई और भोर का उजाला होने लगा है। महाराज कुंवर अब जागिये आप तो नंद के दुलारे हैं। बिलोया हुआ दही कान्हा को अच्छा लगता है। पो फटने लगी है और उजास होने लगा है और कान्हा ने तो उठते ही हठ कर लिया है। हे सांवरे लाल में खिड़की कैसे खोलूं ! रात को जहाँ खेले वहीं वापस चले जाओ। तुम्हें पहुँचा दें तुम्हारे बाप के ओ राम, पीहर सांवरा में कैसे जाऊँ । वहाँ माँ के जाये यानि मेरे भाई-भतीजे भरापूरा कुटुम्ब है।

“आधी के उठावै म्हांसू पीसणियों पिसावै जी

सवा पहर के तड़के सासड़ दही सिळावे जी

भूं भूरली के सासड़ मेरी बळदा ने निरवा वै जी

मेरी सास आधी रात को उठाती और अनाज पिसवाती है। सवा पहर के तड़के वह दही ठंडा करवाती है और जब दिन उगने वाला होता है उससे पहले वह बैल का सानी पानी करवाती है।

रामजी पी’सूं पी’सूं लीलोड़ी जंवार

पाड़ोसण पी’सै बाजरो जी राम ।

राम जी ऊनाळै री ठाडी ठाडी ले’र

घट्टी पे आवै नींदड़ी जी राम

राम जी सासूजी बाळण जोग सभाव

मण भरियौ सूंपै पीसणौ जी राम

पीसती हूँ पीसती हूँ ज्वांर, मेरी पड़ौसन पीस रही बाजरा जी राम ! ग्रीष्म ऋतु में सुबह-सुबह आते है ठण्डे पवन के झोके और घट्टी चलाते आती है नींद। मेरी सास बड़े बुरे स्वभाव की है मुझे मन भर (40 कि.ग्रा.) पीसने को सौंप देती है।

मोटी मक्की रो सांवरा पीसणौ

सासू घड़ियां जी जोखे ओ राम

पीस्यौ पीस्यौ बाजरो

मक्की पीसी न जावै ओ राम

बड़ी मक्की का सांवरा पीसना सास ने 'धड़ि' (पाँच कि.ग्रा.) तौल कर दिया है पीसने को पीसा-पीसा बाजरा, मक्की मेरे से पीसी नहीं जाती ओ राम।

बाजरड़ी घमड़ कै पीसै

जोवां को हरड़ाट

मकिया बैरण इसड़ी पीसूं

बादळ रो घरराट

बाजरा पीसने में आसान है और जौ भी आसान, लेकिन मक्का पीसते समय घट्टी मुश्किल से चलती है। बादल जैसी गर्जना करती है। घट्टी।

सासू जी म्हानै कलेवो घालो

भूख घणे री लागी राम

आंगणिया में पूस पड्यौ है

परिंडे नहीं पाणी जी

घट्टी आ’गे गहूं पड्या है

चिमटी नहीं आटो जी

बहू का सास को निवेदन है कि सास मुझे कलेवा करने को दो मुझे भूख लगी है,लेकिन सास तो सास ही है वह कहती है कि अभी आँगन में फूस पड़ा है, घट्टी के आगे गेहूँ पड़े हैं जो तुझे पीसने हैं और घर में आटा तो बिल्कुल नहीं है और तुम्हें कलेवा भा रहा है !

राम जी वो खानां माटी चीकणी

कोई चूल्हा घाल्या च्यार

राम जी वो एक चूल्हे राबड़ी

कोई दू’जे चूल्हे खीर

खिरां सीजै खीचड़ौ

कोई ऊपर गुदळी खीर

च्यार पनवाड़ा पुरस दिया

जीमै किस्न मुरार ।

कृषि संस्कृति में देशी व्यंजनों से ही भगवान के भोग लगाया जाता है रसोई की तैयारी की जा रही है चार चूल्हें एक साथ लीप कर तैयार किए गए और एक पर राबड़ी, एक पर गुदळी खीर और एक पर खीच बनाया जा रहा है। रसोई बना कर तैयार कर रहे हैं और कृष्ण मुरारी को परोसना है।

बरसो बरसो ओ इन्दर राजा बाबोसा रे देस

थोड़ा तो बरसो ओ म्हारे सासरे।

हळियो हंके ओ बीरा म्हारा मगरा में जाय

भा’इजो भा’इजो ओ बीरा म्हारा लीलोड़ी जंवार

धोरा में भा'इजो ओ मीठो बाजरो”101

हे इन्द्र देव ! आप बरसो मेरे पिता के देश (पीहर) में और थोडे बरसो मेरे ससुराल पर भी। बरसा जब होगी तो चारों ओर खुशहाली होगी। खेतों में हल जुतेंगे और मेरे भैय्या मगरे में खेत जोतने जायेंगे। मेरे भैय्या तुम हरी-हरी ज्वार बोना और रेतीले धोरों पर मीठा बाजरा।

**सन्दर्भ सूची**

1. कविता –कौमुदी, भाग-5, रामनरेश त्रिपाठी, पृ.77
2. मानव और संस्कृति , श्यामाचरण दुबे , पृ.256
3. राजस्थानी लोकगीत, सूर्यकरण पारीक, पृ.34-35
4. राजस्थानी गीतां रो गजरो, रवी प्रकाश नाग, पृ.87
5. राजस्थानी साहित्य का इतिहास : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.151-152
6. राजस्थानी लोकसाहित्य का सैद्धांतिक विवेचन, सोहनदान चारण, पृ.32
7. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.152
8. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.152
9. राजस्थानी लोकगीत: डॉ.स्वर्णलता अग्रवाल, पृ.12
10. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.154
11. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.154
12. राजस्थानी लोकाचार गीत, चन्द्रकान्ता व्यास, पृ.15
13. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.154 – 155
14. राजस्थानी लोकगीत, सूर्यकरण पारीक, पृ.67-69
15. राजस्थानी लोकगीत – भाग 4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ.21 से 25
16. राजस्थानी लोकगीत – भाग 4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ.21 से 25
17. राजस्थानी लोकगीत: डॉ.स्वर्णलता अग्रवाल, पृ.15
18. राजस्थानी लोकगीत: डॉ.स्वर्णलता अग्रवाल, पृ.16
19. लूर,अंक 5-6,जनवरी-दिसम्बर-2005, सं.डॉ.जयपालसिंह राठौड़, पृ.87
20. लूर,अंक 5-6,जनवरी-दिसम्बर-2005, सं.डॉ.जयपालसिंह राठौड़, पृ.88
21. लूर,अंक 5-6,जनवरी-दिसम्बर-2005, सं.डॉ.जयपालसिंह राठौड़, पृ.97
22. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.155
23. राजस्थानी लोकगीत: डॉ.स्वर्णलता अग्रवाल, पृ.28
24. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.153
25. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.155 – 156
26. राजस्थानी लोकाचार गीत, चन्द्रकान्ता व्यास, पृ.31
27. राजस्थानी लोकाचार गीत, चन्द्रकान्ता व्यास, पृ.32
28. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.155
29. राजस्थानी लोकगीत: डॉ.स्वर्णलता अग्रवाल, पृ.23
30. राजस्थानी लोकाचार गीत, चन्द्रकान्ता व्यास, पृ.37
31. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.156
32. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4 मोहनलाल व्यास, सांवलदान आशिया, पृ-2-3
33. राजस्थान के लोकगीत भाग-1, सूर्यकरण पारीक, पृ.135-136
34. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.157
35. राजस्थान के लोकगीत भाग-1, सूर्यकरण पारीक, पृ.138-140
36. राजस्थानी लोकगीत, भाग-2:शिवसिंह चोयल, पृ. 14
37. राजस्थानी लोकगीत, भाग-2:शिवसिंह चोयल, पृ.15
38. राजस्थान के लोकगीत भाग-1, सूर्यकरण पारीक, पृ.147-149
39. राजस्थान के लोकगीत भाग-1, सूर्यकरण पारीक, पृ.150-151
40. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.160
41. राजस्थानी लोकगीत, भाग-2:शिवसिंह चोयल, पृ.17
42. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.156
43. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 4-5
44. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलालव्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ. 8-13
45. राजस्थानी लोकगीतः स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ.52-54
46. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय), पुरुषोत्तमलाल मेनारिया पृ.160
47. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.160-162
48. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (तृतीय अध्याय) : डॉ.पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.162
49. राजस्थानी लोकगीत, भाग-4, मोहनलाल व्यास शास्त्री, सांवलदान आशिया, पृ.14-15
50. राजस्थान के लोकगीत भाग-1, सूर्यकरण पारीक, पृ.9
51. वहीँ पृ,12
52. वहीँ पृ,14-15
53. वहीँ पृ.16-17
54. राजस्थानी गीतां रो गजरो, रवी प्रकाश नाग, पृ.220
55. राजस्थानी गीतां रो गजरो, रवी प्रकाश नाग, पृ.196
56. राजस्थानी गीतां रो गजरो, रवी प्रकाश नाग, पृ.92
57. राजस्थानी गीतां रो गजरो, रवी प्रकाश नाग, पृ.183
58. राजस्थान के लोकगीत भाग-1, सूर्यकरण पारीक, पृ.18-19
59. राजस्थान के लोकगीत भाग-1, सूर्यकरण पारीक, पृ.20-21
60. राजस्थानी गीतां रो गजरो, रवी प्रकाश नाग, पृ.201
61. वहीँ, पृ.203
62. राजस्थानी लोकगीत ,सूर्यकरण पारीक, पृ.48
63. राजस्थानी लोकगीत : स्व. श्री सूर्यकरण पारीक, पृ. 48,49
64. राजस्थानी लोकगीत, सूर्यकरण पारीक, पृ.91-93
65. हिन्दी प्रदेश के ग्राम गीत, मालवी लोकगीत
66. राजस्थानी लोकगीत, भाग-2, शिवसिंह चोयल, पृ.53-54
67. राजस्थानी लोकगीत, भाग-1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ.58-59
68. ब्रज लोकसाहित्य का अध्ययन – डॉ.सत्येंद्र, पृ.२२३
69. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, पुरुषोत्तमलाल मेनारिया पृ.167-168
70. राजस्थान के लोकगीत पूर्वार्द्ध ,ठाकुर रामसिंह, सूर्यकिरण पारिक,नरोत्तमदास स्वामी, पृ, 29-30
71. राजस्थानी साहित्य का इतिहास (राजस्थानी लोकगीत अध्याय), पुरुषोत्तमलाल मेनारिया, पृ.167-168
72. राजस्थानी लोकगीत-भाग-1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ.70-71
73. राजस्थानी गीतां रो गजरो, रवी प्रकाश नाग, पृ.95
74. वही पृ.96
75. वही पृ.97
76. वही पृ.99
77. राजस्थान के लोकगीत पूर्वार्द्ध ,ठाकुर रामसिंह, सूर्यकिरण पारिक,नरोत्तमदास स्वामी, पृ, 44-45
78. वही पृ.53
79. वही पृ.47
80. वही पृ.62
81. वही पृ.64
82. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, पुरुषोत्तमलाल मेनारिया पृ.179
83. राजस्थानी गीतां रो गजरो, रवी प्रकाश नाग, पृ.178
84. राजस्थानी साहित्य का इतिहास, पुरुषोत्तमलाल मेनारिया पृ.180
85. राजस्थानी लोकगीत, भाग1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ.78-81
86. राजस्थान के लोकगीत पूर्वार्द्ध ,ठाकुर रामसिंह, सूर्यकिरण पारिक,नरोत्तमदास स्वामी, पृ, 99
87. राजस्थानी लोकगीत, भाग1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ.83
88. राजस्थानी लोकगीत, भाग1, गंगाप्रसाद कमठान, पृ.84
89. राजस्थानी गीतां रो गजरो, रवी प्रकाश नाग, पृ.222
90. राजस्थानी लोक-साहित्य का सैद्धांतिक विवेचन, सोहन दान चारण,पृ.80
91. वही, पृ.80
92. वही, पृ.81
93. वही, पृ.81
94. वही, पृ.81
95. वही, पृ.82
96. वही, पृ.82
97. वही, पृ.82
98. वही, पृ.83
99. वही, पृ.83
100. ‘लूर’- श्रम लोकगीत विशेषांक दिसम्बर-15, सं.जयपाल सिंह राठौड़,पृ.35
101. ‘लूर’- श्रम लोकगीत विशेषांक दिसम्बर-15, सं.जयपाल सिंह राठौड़,पृ.40-41